इस किताब छपवाने के लिए जिन
महाशयोंने सहायता दी है
उनकी शुभनामावली.

२५) किताब फलोदी-निवासी सुगनमलजी गोलेच्छा की धर्मपत्नी रामाबाई की तरफ से भेट।

१०) किताब बीकानेर-निवासी हंसराजजी मालू-मृणा की तरफ से भेट।

५) किताब बोरा के श्रीसंघ तरफ से भेट।

५) किताब लोहावट निवासी सुगनचंद आसारामजी करणीदानजी की तरफ से भेट।

४०) किताब बीकानेर के श्रावक श्राविकाओं की तरफ से भेट।

इस पुस्तक मिलने का ठिकाना—

श्रीयुत रतनलालजी मिसरूप

बेगानी की गवाड़

बीकानेर (राजपूताना)

प्रस्तावना .

प्रियवर जैन बन्धुओ!

यह " पूर्णक्षेमवल्लभविलास " नामक छोटासा ग्रन्थ प्रकाशित कर भेंट रूपमें आपकी सेवा में उपस्थित किया जाता है, पूर्ण आशा है कि इसका अवलोकन तथा नैत्यिक क्रिया आदि विषय में सदुपयोग कर आप मेरे परिश्रम को सफल करेंगे।

चिरकाल पूर्व इस ग्रंथ का संग्रह कर श्रीमान् मान्यवर गुरुवर्य प्रातःस्मरणीय श्री १००८श्री क्षेमसागरजी महाराज ने परम कृपा कर मुझे इसे इसलिये सौंपा था कि मैं इसका प्रकाशन कर जैन समाज की सेवामें उपस्थित करूँ। मैं भी अपने ऊपर स्थित भार से उऋण होने के लिए चिर समय तक इच्छा और चेष्टा करता रहा, परन्तु दैवयोग से अब तक अपने कर्तव्य का पालन नहीं कर सका।

क्षेत्रस्पर्शना के अनुसार संवत१९८२का मेरा चौमास श्री बीकानेर नगरमें हुआ और यहां के

एक सुयोग्य धर्मशील श्रावक वर्ग को यह बात किसी प्रकार विदित हो गई कि इस सब लोगों के लिए अत्युपयोगी तथा जैन समाज के लिये परम लाभदायक ग्रन्थ प्रकाशनार्थ प्रस्तुत है, फिर भी पड़ा था. अधिकांश श्रावक सज्जन इस के प्रकाशन के लिये अनुरोध करने लगा, ऐसा होने पर मैंने भी यह निश्चय कर लिया कि अब इसको शीघ्र ही प्रकाशित कर अपने कर्त्तव्य का पालन करना चाहिये. इस निश्चय के कर लेने पर भी मैं अपनी संकोचशील प्रकृति के कारण तत्सम्बन्धी सहायता प्राप्ति के विषय में कुछ कहने सुनने में संकोच ही करता रहा, अतः फिर भी कुछ दिनों तक असमंजस में ही पड़ा रहा तथा श्रावक वर्ग से तत्सम्बन्धी हां हां ही करता रहा, अन्ततः कतिपय धर्मशील श्रावक जनों ने स्वयमेव इस कार्य को अपने हाथ में ले कर इस के लिये उद्यम करना प्रारंभ किया. बस ऐसा होते ही कार्य का आरंभ हो गया और केवल यहीं से नहीं किन्तु बाहर से भी सहायता प्राप्त होने लगी, प्रति फल यह हुआ कि लग भग पांच मास में ही ग्रन्थ मुद्रित हो कर तैयार हो गया और मैं इसे आप की सेवा में उपस्थित कर अपने कर्त्तव्य का पालन करने में समर्थ हो सका।

इस ग्रन्थ के प्रकाशन [illegible] प्रयानुसार [illegible]

[illegible] बाइयों ने [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

इस ग्रन्थ में [illegible] [illegible] पविसमन, [illegible] गुरुवर [illegible] [illegible] गुरुवों, [illegible] नवरद् माल [illegible] [illegible] महाराज [illegible] [illegible] विद्यागणों के साथ [illegible] दृष्टांतों [illegible] का संग्रह है, जिनके [illegible] विद्वान पाठक, [illegible] के द्वारा [illegible]

[illegible] कि — ग्रन्थ के अन्त [illegible] और [illegible] के [illegible] [illegible] किया जाता है, जिससे [illegible] [illegible] ग्रन्थ के द्वारा [illegible] [illegible] होकर [illegible] [illegible] आदि [illegible] [illegible] आशा है [illegible]

इस ग्रन्थ के प्रकाशन में जिन २ महानुभाव सज्जनों तथा बाइयों ने आर्थिक सहायता प्रदान कर अपनी धर्मशीलता का परिचय दिया है उनको इस धर्म कार्य में योग देने के हेतु धन्यवाद है, उनकी नामावली भी ज्ञानार्थ पहले प्रकाशित की गई है।

इस ग्रन्थ में-देववंदन, गुरुवंदन, सामायिक विधि, रायसी देवसी प्रतिक्रमण, प्रत्याख्यान, गुरुवर कृत स्तवन, अष्टक, थुइयां, वासक्षेप पूजा, नवपद ओली विधि, प्रत्याख्यान पारणविधि, चौवीस महाराज के १५० कल्याणक तथा वीस विहरमाणजी के नाम, इत्यादि अनेक उपयोगी विषयों का संग्रह है, जिनकी उपयोगीता का निश्चय पाठक जन अवलोकनके द्वारा स्वयमेव कर सकेंगे।

मेरा विचार यह भी था कि— ग्रन्थ के अन्त में आचार्यों के निर्मित नीति और वैराग्य के उपदेशदायक कतिपय उत्तमोत्तम श्लोकों का भी अर्थ सहित संग्रह कर संयोजन किया जाता कि जिससे गृहस्थ श्रावकों को नैत्यिक क्रिया के ग्रन्थ के द्वारा ही उक्त विषय के उत्तमोत्तम श्लोकोंका भी अभ्यास होकर लाभ पहुँचता; परन्तु पुस्तकप्रकाशन की शीघ्रता आदि कई कारणों से ऐसा नहीं हो सका, अस्तु- आशा है कि

किसी अन्य उपयोगी पुस्तक के साथ मे मनन करनेका शुभावसर शीघ्र ही प्राप्त होगा।

अन्त में इस कार्य में योगदाता सज्जनों को तथा पालीताना निवासी पं० भगवानदास जैन ने इसका प्रुफ देखने में परिश्रम किया है इसलिये उस को भी धन्यवाद प्रदान कर पाठकगण से मेरा निवेदन है कि ग्रन्थ में लेखन, शोधन और मुद्रण आदि के द्वारा जो २ त्रुटियां रही हो उनका संशोधन कर तथा ग्रन्थ का अवलोकन और सदुपयोग कर आप मेरे परिश्रम को सफल करें। किमधिकं विज्ञेषु.

निवेदक—

वीर संवत् २४५६ । मुनि वल्लभसागर.

द्वितीय चैत्र शुक्ला १४ बीकानेर.

विषयानुक्रमणिका.

नंबर.	विषय.	पृष्ठ.
१	देववंदन विधि	१
२	गुरुवंदनविधि ..	११
३	सामायिक लेने की विधि	१५
४	सामायिक पारने की विधि ...	१८
५	राईप्रतिक्रमणविधि . ..	१६
६	संध्यासामायिकविधि	५७
७	देवसियप्रतिक्रमणविधि	६२
८	जिनकुशलसूरिजी महाराजका स्तवन	१०३
६	पचक्खाणविधि	१०४
१०	श्रीसद्गुरुगुणाष्टक	१११
११	श्रीकुशलसूर्यष्टकम् . .	११३
१२	श्रीगौतमदेव स्तवन ..	११४
१३	श्रीगुरुगुण स्तवन . .	११६
१४	जन्ममहोत्सव स्तवन ...	११७
१५	श्रीपार्श्वप्रभु स्तवन	११७
१६	श्रीनेमिनाथस्वामी स्तवन	११८
१७	अजितनाथस्वामी स्तवन ..	१२०
१८	श्रीपार्श्वजिन स्तवन . .	१२१

१९	मधुमालि स्तवन . .	१२१
२०	श्री गौडीपार्श्वजिनवृद्धस्तवन (वाणी ब्रह्मावादिनी) .	१२३
२१	श्रीगौतमस्वामी का छंद	१३०
२२	देसावगासिकपच्चक्खाण लेनेकीविधि	१३१
२३	देसावगासिकपच्चक्खाण पारने की-विधि .	१३४
२४	पारसदेव पूजा .	१३७
२५	नवपद के नव चैत्यवंदन, नव स्तवन तथा नव थुई	१४१
२६	नवपदवृद्ध स्तवन .	१५४
२७	नवपद स्तुति	१५७
२८	नवपद चैत्यवंदन ...	...१५८
२९	नवपद स्तुति	१५९
३०	द्वादश अरिहंत गुण .	१६०
३१	सिद्ध अष्टगुण	१६१
३२	आचार्य के छत्तीसगुण ..	१६२
३३	उपाध्याय पच्चीसगुण ...	... १६४
३४	साधु के सत्ताईसगुण	....१६५
३५	सम्यक्त्व के सड़सठ भेद	... १६६
३६	ज्ञानपद के इकावन भेद	... १७०

३७ चारित्रपद के ७० भेद ... १७२
३८ तपपद के पचास भेद ... १७५
३९ चोवीस जिन के १२० कल्याणक
(पंचकल्याणक टीप) ... १७८
४० दीपमाला को गुणनो ... १८३
४१ वीसविहरमान के नाम १८३
४२ चारसाश्वता जिनवर के नाम १८३
४३ मेरी भावना १८७
४४ बारह भावना १८८
४५ आठ थुई से देववंदन विधि ... १९१
४६ चौदह नियमकी विधि २०१
४७ श्रावकोंके प्रत्याख्यान के ४९ भांगा २०७
४८ आराधना का स्तवन २११
४९ पंचमी का छोटा स्तवन २२२
५० ग्यारस का स्तवन २२२
५१ श्रीऋृषभजिनेश्वर का स्तवन ... २२४
५२ श्री सीमंधरस्वामी का स्तवन ... २२५
५३ पर्युषण की स्तुति २२८
५४ भगवंत के अंगपूजन का दूहा ... २२८
५५ पद्मावती आराधना २२९
५६ श्रावक का तीन मनोरथ २३३

५७	सूतक विचार	२३६
५८	ऋतुवन्ती स्त्री संबंधी सूतक विचार	२३७
५९	इक्कीस जातका धोवण पाणी ...	२३९
६०	बावीस अभक्ष के नाम ..	२३९
६१	तपागच्छीय राइप्रतिक्रमणविधि ..	२४०
६२	जगचिन्तामणि चैत्यवंदन ...	२४१
६३	भरहेसर की सज्झाय ...	२४२
६४	तीर्थवंदना ...	२४५
६५	तपागच्छीय देवसिय प्रतिक्रमण विधि	२४८
६६	दीपमाला की स्तुति	२५१
६७	देवचन्द्रजी कृत स्नात्रपूजा ..	२५२
६८	अष्टप्रकारीपूजा अर्थ समेत ...	२६३



३७	चारित्रपद के ७० भेद ...	१७२
३८	तपपद के पचास भेद ...	१७६
३९	चोवीस जिन के १५० कल्याणक (पंचकल्याणक टीप) ...	१७८
४०	दीपमाला को गुणनो ...	१८३
४१	बीसविहरमान के नाम	१८६
४२	चारसाश्वता जिनवर के नाम ...	१८६
४३	मेरी भावना	१८७
४४	बारह भावना	१८८
४५	आठ थुई से देववंदन विधि ...	१९१
४६	चौदह नियमकी विधि	२०१
४७	श्रावकोंके प्रत्याख्यान के ४९ भांगा	२०७
४८	आराधना का स्तवन	२११
४९	पंचमी का छोटा स्तवन	२२२
५०	ग्यारस का स्तवन	२२२
५१	श्रीऋषभजिनेश्वर का स्तवन ...	२२४
५२	श्रीसीमंधरस्वामी का स्तवन ...	२२५
५३	पर्युषण की स्तुति	२२८
५४	भगवंत के अंगपूजन का दूहा ...	२२८
५५	पद्मावती आराधना	२२९
५६	श्रावक का तीन मनोरथ	२३३

५७	मृतक विचार	२३६
५८	ऋतुवती स्त्रीसंबंधी मृतक विचार	२३७
५९	इक्कीस जातका धोवण पाणी ...	२३९
६०	बावीस अभक्ष के नाम	२३९
६१	तपागच्छीय राइप्रतिक्रमणविधि ...	२४०
६२	जगचिन्तामणि चैत्यवंदन ...	२४१
६३	भरहेसर की सज्झाय ...	२४२
६४	तीर्थवंदना ...	२४०
६५	तपागच्छीय देवसिय प्रतिक्रमण विधि	२४८
६६	दीपमाला की स्तुति	२५१
६७	देवचन्द्रजी कृत स्नात्रपूजा ..	२५२
६८	अष्टप्रकारीपूजा अर्थ समेत ...	२६३



श्री पंच परमेष्ठिने नमः

मंगलाचरणम्

सुरनर वंदित बोधमय, वन्दन हूँ श्रीअरिहंत।
होत तुरत जिन भजन तें, भव फन्दन को अंत॥१॥
सिद्धि सुथित सिद्धन नमूँ, पुनि आचार्य अनेक।
जिन जिन शासन की करी, उन्नति सहित विवेक॥२॥
उपाध्याय उपदेशमद, साधु साधुना लीन।
प्रणमहुँ तिन के पदकमल, होय कर्म मल छीन॥३॥
पूज्य पंच परमेष्ठि निन, शुभ मंगल के धाम।
भव्य हेतु मैं तासु गुण, ध्यावहुँ आठहुँ याम॥४॥
पूजनीय परमेष्ठि शुभ, पूरहि मम आश।
सकल जैन जन लाभ हित, हो यह ग्रन्थ विकाश॥५॥
पूर्णक्षेमवल्लभ सुजन, करिहहिं पठन विलास।
नित्य क्रिया विधि से इहहिं, हुइ है हृदय उजास॥६॥
मव विधि निपट अजोग मैं, कीन्हो ग्रन्थ प्रकास।
सज्जन क्षमिहहिं त्रुटि कहूँ, यह मम दृढ विश्वास॥७॥

सुजन कृपाभिलाषी—
साधु वल्लभसागर
बीकानेर.



श्रीपञ्चपरमेष्ठिभ्यो नमः।
श्रीजिनदत्त-कुशल-गुरुभ्यो नमः।

श्रीदेव-गुरु-धर्म-वन्दनविधिः।

प्रथम पाठः।

किसी स्थान में श्रीदेव गुरु धर्म भक्त दो श्रावक रहते थे, दोनों सगे भाई थे, उनमें से बड़े का नाम विवेकचन्द्र और छोटे भाई का नाम विनयचन्द्र था. दोनों भाई सार्थक नाम वाले थे अर्थात् बड़ा भाई अत्यन्त ही विवेकवान् था, तथा छोटा भाई परम विनयसंपन्न था, बड़ा भाई विवेकचन्द्र प्रतिदिन की श्रीदेव गुरु धर्म वन्दनक्रिया को विशुद्ध भाव से किया करता था, किन्तु छोटा भाई विनयचन्द्र छोटी अवस्था का होने के कारण उक्त क्रिया से अनभिज्ञ था, अर्थात् उक्त क्रिया के गौरव और लाभ को नहीं समझता था अतएव बड़े भाई विवेकचन्द्र की यह इच्छा थी कि मेरे समान मेरा छोटा भाई भी उक्त क्रिया के महत्त्व और लाभ को समझे, तथा प्रतिदिन उसे भला प्रकार जान कर पुण्य करे, अत एव एक दिन प्रातःकाल विवेकचन्द्र ने जिस प्रकार प्रतिबोध देकर अपने छोटे भाई को इस क्रिया का महत्त्व बतला कर इस में प्रवृत्त किया वह इस प्रकार है—

विवेकचन्द्र— भाई विनयचन्द्र! ऊठो प्रातःकाल होने को आया है अब तक सोते रहना उचित नहीं है, क्यों की मनुष्य को प्रातःकाल शीघ्र ही उठकर शौच आदि आवश्यक क्रिया से निवृत्त होकर श्रीदेव और गुरु आदि की वन्दन क्रिया में प्रवृत्त होना चाहिये।

विनयचन्द्र— (उक्त बात को सुनते ही शीघ्र उठ बैठा और बोला) हाँ भाई साहब! मैं उठ बैठा आज्ञा दीजिये।

विवेकचन्द्र—अच्छा चलो पहिले अपने परमदेव वीतराग परमात्मा के दर्शन करें पीछे अन्य काम को करेंगे, क्योंकि शान्त और अलौकिक शोभावाले देव के मुखारविन्द का दर्शन करेंगे तो अपने को विद्या और सद्बुद्धि प्राप्त होगी और उस के प्रभाव से अपना सब दिन का व्यवहार सुखकारी होगा, नीतिशास्त्र में कहा है की प्रातःकाल महात्मा महानुभाव का दर्शन होने से मनुष्य का तमाम दिन अच्छे प्रकार बीतता है, उस को उत्तम लाभ होता है, तथा बुद्धि निर्मल रहती है तो भला अपने अभीष्ट देव के मुखारविन्द का दर्शन करने से वैसा ही क्यों नहीं होगा।

विनयचन्द्र— हाँ भाई साहब! आपका कथन यथार्थ है आपकी आज्ञा के अनुसार हम अभी आपके साथ चलेंगे, तथा सर्व सुख दायक परमात्मा का दर्शन कर अपने को कृतार्थ करेंगे, (यह कह कर साथ चलने के लिए तैयार हो गया)।

विवेकचन्द्र— नीतिशास्त्र में कहा है की - देव गुरु राजा अथवा महानुभाव के पास खाली हाथ नहीं जाना चाहिये, तथा

“जिनदर्शन को देखकर सम्यक् देखना शुभ ।” इस लिए देवदर्शन के लिए अपने मन्दिर जाने को खाली हाथ नहीं जाना चाहिये कुछ चावलों को लेना चाहिये ।

विनयचन्द्र— जी साहब! लाता हूँ (चावल ले कर दोनों भाई चले और मन्दिर में पहुँच कर नीचे लिखे अनुसार वन्दन किया को, इसी प्रकार सब को करना चाहिये ।

द्वितीयपाठ : ।

'निस्सीहि निस्सीहि निस्सीहि' १ यह पाठ मन्दिर में पैसता करना। (देवमन्दिर में जाकर विनय के साथ यह वाक्य बोले) —

त्रैलोक्य आर्ति हर नाथ! तुझे नमूँ मैं ,
हे भूमि के विमल रत्न ! तुझे नमूँ मैं ।
हे ईश! सर्वजगत के तुझे नमूँ मैं,
मेरे भवोदधि नाशक ! तुझे नमूँ मैं ॥ १॥

प्रभुमुद्रा को देखते ही दोनों हाथों को जोड़ कर तथा मस्तक को नमाकर फिर तीन प्रदक्षिणा देते समय यह भावना करनी चाहिये -

हे प्रभो ! ज्ञानगुणस्य प्राप्त्यर्थं प्रथमप्रदक्षिणां ददामि।

दूसरी प्रदक्षिणा देते समय यह भावना करनी चाहिये——

हे प्रभो! दर्शनगुणस्य प्राप्त्यर्थं द्वितीयप्रदक्षिणां ददामि।

तीसरी प्रदक्षिणा को देते समय यह भावना करनी चाहिये —

हे प्रभो! चारित्रगुणप्राप्त्यर्थं तृतीयप्रदक्षिणां ददामि।

इस के पश्चात् साथिया करे और यह बोले —

हे प्रभो! चतुर्गतिनिर्मोहार्थं स्वस्तिकं रचयामि।

अर्थ—हे प्रभो! चारों गतियों का नाश करने के लिये मैं साथिया बनाता हूँ।

इस के पीछे तीन पुंज (ढिगली) करे और यह बोले—

हे प्रभो! ज्ञान-दर्शन-चारित्रप्राप्त्यर्थं त्रिपुंजं रचयामि।

अर्थ—हे प्रभो! ज्ञान दर्शन और चारित्र की प्राप्ति के लिए मैं तीन ढिगलियों को बनाता हूँ।

और एक ढिगली पीछे अर्द्ध चन्द्राकार करे और यह बोले—

हे करुणासिन्धो! सिद्धस्थानप्राप्त्यर्थमर्द्धचन्द्राकारं करोमि। पुञ्जमेकं च सिद्धस्थित्यर्थं करोमि।

अर्थ— हे कृपासिन्धो! सिद्धस्थान की प्राप्ति के लिये मैं अर्द्धचन्द्र के समान आकार करता हूँ और एक ढिगली सिद्धसमान स्थिति के लिये करता हूँ।

इस के पीछे भगवान की दाहिनी भुजा की तरफ खड़ा होकर स्त्रियाँ हों तो भगवान की बाईं भुजा की तरफ खड़ी होकर हाथ जोड़कर तथा दोनों गोड़ा को और मस्तक को नमाकर यह बोले

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-
आए मत्थएण वंदामि।

इस पाठ को उठ बैठ के साथ में तीन बार बोलना चाहिए। इस के पीछे इरियावही करना चाहिये।

इरियावहियाए।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरियावहियं पडि-
क्कमामि ? इच्छं। इच्छामि पडिक्कमिउं, इरियावहियाए,
विराहणाए गमणागमणे पाणक्कमणे बीयक्कमणे हरिय-
क्कमणे ओसा उत्तिंग पणग दग मट्टी मक्कडासंताणा
संकमणे, जे मे जीवा विराहिया, एगिंदिया, बेइंदिया, तेइं-
दिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया, वत्तिया, लेसिया,
संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया,
ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया तस्स
मिच्छा मि दुक्कडं।

तस्स उत्तरी।

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोही-
करणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए,
ठामि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ ऊससिएणं।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं,
छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भम-

हे प्रभो! चारित्रगुणप्राप्त्यर्थं तृतीयप्रदक्षिणां ददामि।

इस के पश्चात् साथिया करे और यह बोले —

हे प्रभो! चतुर्गतिनिर्मोहार्थं स्वस्तिकं रचयामि।

अर्थ– हे प्रभो! चारों गतियों का नाश करने के लिये मैं साथिया बनाता हूँ।

इस के पीछे तीन पुंज (ढिगली) करे और यह बोले—

हे प्रभो! ज्ञान-दर्शन-चारित्रप्राप्त्यर्थं त्रिपुंजं रचयामि।

अर्थ–हे प्रभो! ज्ञान दर्शन और चारित्र की प्राप्ति के लिए मैं तीन ढिगलियों को बनाता हूँ।

और एक ढिगली पीछे अर्द्ध चन्द्राकार करे और यह बोले—

हे करुणासिन्धो! सिद्धस्थानप्राप्त्यर्थमर्द्धचन्द्राकारं करोमि। पुञ्जमेकं च सिद्धवत्स्थित्यर्थं करोमि।

अर्थ— हे कृपासिन्धो! सिद्धस्थान की प्राप्ति के लिये मैं अर्द्धचन्द्र के समान आकार करता हूँ और एक ढिगली सिद्धसमान स्थिति के लिये करता हूँ।

इस के पीछे भगवान् की दाहिनी भुजा की तरफ खड़ा होकर तथा स्त्री हो तो भगवान् की बाईं भुजा की तरफ खड़ी होकर हाथ जोड़कर तथा दोनों गोडा को और मस्तक को नमाकर यह बोले—

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-आए मत्थएण वंदामि।

इस पाठ को इस ... के साथ ३ तीन बार बोलना चाहि-ये। इस के पीछे इरियावही कहना चाहिये।

इरियावहियाए।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! इरियावहियं पडि-क्कमामि? इच्छं। इच्छामि पडिक्कमिउं, इरियावहियाए, विराहणाए गमणागमणे पाणक्कमणे बीयक्कमणे हरिय-क्कमणे ओसा उत्तिंग पणग दग मट्टी मक्कडासंताणा संकमणे, जे मे जीवा विराहिया, एगिंदिया, बेइंदिया, तेइं-दिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

तस्स उत्तरी।

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोही-करणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ ऊससिएणं।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भम-

हे प्रभो! चारित्रगुणप्राप्त्यर्थं तृतीयपदक्षिणां ददामि ।

इस के पश्चात् साथिया करे और यह बोले —

हे प्रभो! चतुर्गतिनिर्मोहार्थं स्वस्तिकं रचयामि ।

अर्थ — हे प्रभो! चारों गतियों का नाश करने के लिये मैं साथिया बनाता हूँ।

इस के पीछे तीन पुंज (ढिगली) करे और यह बोले—

हे प्रभो ! ज्ञान-दर्शन-चारित्रप्राप्त्यर्थं त्रिपुंजं रचयामि ।

अर्थ हे प्रभो ! ज्ञान दर्शन और चारित्र की प्राप्ति के लिए मैं तीन ढिगलियों को बनाता हूँ।

और एक ढिगली पीछे अर्द्ध चन्द्राकार करे और यह बोले—

हे करुणासिन्धो! सिद्धस्थानप्राप्त्यर्थमर्द्धचन्द्राकारं करोमि। पुञ्जमेकं च सिद्धशिलार्थं करोमि।

अर्थ - हे कृपासिन्धो! सिद्धस्थान की प्राप्ति के लिये मैं अर्द्धचन्द्र के समान आकार करता हूँ और एक ढिगली सिद्धस्थान शिला के लिये करता हूँ।

इसके पीछे भगवान की दाहिनी भुजा की तरफ खड़ा होकर [illegible] भगवान की बांई भुजा की तरफ खड़ी होकर हाथ जोड़कर [illegible] और मस्तक को नमाकर यह बोले—

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-याए मत्थएण वंदामि।

इस पाठ को उठ बैठ के साथ में तीन बार बोलना चाहिये। इस के पीछे इरियावही करना चाहिये।

इरियावहियाए।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! इरियावहियं पडि-क्कमामि? इच्छं। इच्छामि पडिक्कमिउं, इरियावहियाए, विराहणाए गमणागमणे पाणक्कमणे बीयक्कमणे हरिय-क्कमणे ओसा उत्तिंग पणग दग मट्टी मक्कडासंताणा संकमणे, जे मे जीवा विराहिया,एगिंदिया,बेइंदिया,तेइं-दिया, चउरिंदिया,पंचिंदिया,अभिहया,वत्तिया,लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया,किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

तस्स उत्तरी।

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोही-करणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ ऊससिएणं।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भम-

लिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

फिर एक लोगस्स का काउस्सग्ग करे, काउस्सग्ग पारके एक लोगस्स प्रगट कहे।

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअलसिज्जंसवासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय वंदियमहिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

जिणाणं जिअभयाणं ॥ ९ ॥ जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले। संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥१०॥

जावंति चेइआइं उड्ढे अ अहे अ तिरियलोए अ सव्वाइं ताइं वंदे इह संतो तत्थ संताइं ॥ १ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसी हिआए मत्थएण वंदामि।

भगवन्!— जावन्त केवि साहू भरहेरवयमहावि देहे अ। सव्वेसिं तेसिं पणओ तिविहेण तिदंडविरयाणं ॥ १ ॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥ २॥

चौबीस भगवान का स्तवन।

प्रह उठी मैं सदा नमुं वारि हाथ जोड के साम चौवीसों जिनराज को मैं नित्य करूं परणाम ॥ १ ॥ (टेक) १ ऋषभ २ अजित ३ संभव ४ अभिनंदन अरु ५ सुमति महाराज। ६ पद्म ७ सुपारस ८ चंद्रप्रभुजी से लग न लगी है आज ॥२॥ प्र० ॥ ९ सुविधि १० शीतल ११ श्रेयांस सवाई दीजे मुक्ति नाथ। १२ वासुपूज्य जिन वारमा धारि १३ विमल १४ अनन्त कू नाथ ॥ ३ ॥ प्र० ॥ १५ धर्म १६ शान्ति अरु १७ कुन्थु जिनेश्वर १८ अर १९ मल्लि महाराज। २० मुनिसुव्रत २१ नमि २२ नेमजी

जिणाणं जिअभयाणं ॥ ६ ॥ जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संतिऽणागए काले। संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥१०॥

जावंति चेइयाइं उड्ढे अ अहे अ तिरियलोए अ। सव्वाइं ताइं वंदे इह संतो तत्थ संताइं ॥१॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहियाए मत्थएण वंदामि।

भगवन!— जावन्त केवि साहू भरहेरवयमहाविदेहे अ। सव्वेसिं तेसिं पणओ तिविहेण तिदंडविरयाणं ॥ १ ॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥ २॥

चौवीस भगवान् का स्तवन।

प्रह उठी मैं सदा नमुं यारि हाथ जोड़ के साम। चोवीसों जिनराज को मैं नित्य करूं परणाम ॥ १ ॥ (टेक) १ ऋषभ २ अजित ३ संभव ४ अभिनंदन ५ सुमति महाराज। ६ पद्म ७सुपारस ८ चंद्रप्रभुजी से लगी है आज ॥२॥ प्र०॥ ९ सुविधि १० शीतल ११श्रेयांस सवाई दीजे मुक्ति नाथ। १२वासुपूज्य जिन बारमा धारि १३ विमल १४ अनन्त क नाथ ॥ ३ ॥प्र०॥ १५ धर्म १६ शान्ति अरु १७ कुन्थु जिनेश्वर १८ अर १९ मल्लि महाराज। २० मुनिसुव्रत २१ नमि २२ नेम

[illegible] ॥ २ ॥

[illegible] ॥ ? ॥ [illegible] ॥ ३ ॥ [illegible]

[illegible]

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥ १ ॥

श्री शान्तिनाथजी, शान्तिकारक देव।

मनमोहन स्वामी, अनुपम मूर्ति सेव ॥

सुख [illegible], वन्दूं [illegible] नाथ।

शुद्ध समकित मांगे, मैं जोड़ प्रभु के हाथ ॥ [illegible]

इस प्रकार दर्शन कर [illegible]

स्वामी" को तीन बार कह कर मंदिर से बाहर जावे।

तृतीय पाठ:।

पूर्वोक्त रीति से देववन्दनविधि को पूर्ण करने के बाद गुरुवन्दन विधि को करना चाहिये, अर्थात् गुरुमहाराज के सामने खड़े होकर नीचे लिखे वाक्य से दो बार खमासमण देना चाहिये।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ १ ॥

इस प्रकार खमासमण देकर नीचे लिखे पाठ को बोलकर गुरु महाराज से सुखसाता पूछनी चाहिये

इच्छकार भगवन्! सुह राइय, सुह देवसिय सुख तप शरीर निराबाध सुख संयमयात्रा निर्वहो छो जी स्वामी साता है जी ॥ २ ॥

पुनः पाठ को कह कर खमासमण दे कर, फिर नीचे बैठ कर दाहिने हाथ को नीचे रखकर बांये हाथ को मुखवस्त्रिका मुख पर लगाकर नीचे लिखे हुए पाठ को बोलना चाहिये

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! अब्भुट्ठिओऽम्हि अब्भिन्तर राइयं खामेउं इच्छं खामेमि देवसियं, जं किंचि अपत्तियं परपत्तियं भत्ते पाणे विणए वेयावच्चे

१ दिन के बारह बजे तक यह पाठ कहना चाहिये, किन्तु बारह बजने के पीछे "राइयं" की जगह "देवसिय" शब्द को बोलना चाहिये।

आए पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए बोहिलाभवत्तिआए निरुवसग्गवत्तिआए ॥१॥ सद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥ २ ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलीए पित्तमुच्छाए ॥ १ ॥ सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ॥ २ ॥ एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

इस के पीछे काउस्सग्ग में दोनो हाथों को नीचे को लम्बे करके नेत्रों को बन्द करके तथा होठ और जीभ को बिना हिलाये यह चिन्तवन करना। काउस्सग्ग पार के (पीछे दोनों हाथों को जोड़ कर यह बोले -

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥ १ ॥

श्रीशान्तिनाथजी, साताकारक देव।
मनमोहन स्वामी, अनुपम मूर्ति सेव ॥
मुझ रोम हुलसिया, वन्दूँ प्रणमूँ नाथ।
शुद्ध समकित माँगूँ, मैं जोड़ प्रभु के हाथ ॥२॥

इस प्रकार स्तवन कह तथा पीछे पच्चक्खाण पार के ...

स्मरी" को तीन बार वह कर मन्दिर से बाहर [illegible] जावे।

तृतीय पाठ :।

पूर्वोक्त रीति से देववन्दनविधि कर चुकने के बाद गुरुवन्दन विधि को करना चाहिये, अर्थात् गुरुमहाराज के सामने खड़े होकर नीचे लिखे वाक्य से दो बार खमासमण देना चाहिये।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसी-हिआए मत्थएण वंदामि ॥ १ ॥

इस प्रकार खमासमण देकर नीचे लिखे [illegible] को बोलकर गुरु महाराज से सुखसाता पूछना चाहिये

इच्छाकार भगवन्! सुह राइय, सुह देवसिय सुख तप शरीर निराबाध सुख संयमयात्रा निर्वहो छो जी स्वामी साता है जी ॥ २ ॥

पूर्वोक्त पाठ को कह कर [illegible] बैठ कर दाहिने हाथ को [illegible] मुख पर लगाकर नीचे लिखे [illegible] चाहिये

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! अब्भुट्ठिओऽमि अब्भिंतर राइयं खामेउं इच्छं खामेमि देवसिय, जं किंचि अपत्तिअं परपत्तिअं भत्ते पाणे विणए वेयावच्चे

१ दिनके बारह बजे तक यह पाठ करना चाहिये,किन्तु बारह बजने के पीछे "राइयं" की जगह देवसिय शब्दको बोलना चाहिये।

आए पुच्छणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्ति-आए बोहिलाभवत्तिआए निरुवसग्गवत्तिआए ॥१॥ सद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥ २ ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलीए पित्तमुच्छाए ॥ १ ॥ सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ॥ २ ॥ एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥ ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

इस के पीछे काउस्सग्ग में दोनों हाथों को नीचे की ओर लम्बे करके नेत्रों को बन्द करके तथा होठ और जीभ को न हिलाये यह चिन्तवन करना। काउस्सग्ग पार के (पीछे दोनों हाथों को जोड़ कर यह बोले- -

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥ १ ॥

श्रीशान्तिनाथजी, साताकारक देव।
मनमोहन स्वामी, अनुपम मूर्ति सेव ॥
मुझ रोम हुलसिया, वन्दूँ प्रणमूँ नाथ
शुद्ध समकित माँगूँ, मैं जोड़ प्रभु के हाथ ॥२॥

इस प्रकार दर्शन कर तथा पीछे पच्चक्खाण कर के "अब-

आलावे संलावे उच्चासणे समासणे अंतरभासाए उ
रिभासाए जं किंचि मज्झ विणय परिहीणं, सुहुमं
बायरं वा तुब्भे जाणह, अहं न जाणामि, तस्स मिच्छा
दुक्कडं ॥ ३ ॥

उक्त पाठ को बोल चुकने के पीछे नीचे लिखे हुए वाक्य
बोल कर आहार पानी के लिये निवेदन करना चाहिये--

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! भात पाणी रो लाभ दीजो

चतुर्थपाठ : ।

पूर्वोक्त गुरुवन्दन के पीछे सामायिक करना चाहिये, सामा
करने के समय पहिले श्रीगुरुजी के सामने (यदि श्रीगुरुजी उपस्थि
हों तो स्थापनाचार्यजी के सामने) दाहिना हाथ कर के नीचे लि
हुए नवकारमन्त्र को तीन बार गुणना चाहिये----

णमो अरिहंताणं ॥ १ ॥ णमो सिद्धाणं ॥ २
णमो आयरियाणं ॥ ३ ॥ णमो उवज्झायाणं ॥ ४
णमो लोए सव्वसाहूणं ॥ ५ ॥ एसो पंच णमुक्कारो ॥
सव्वपावप्पणासणो ॥ ७ ॥ मंगलाणं च सव्वेसिं ॥
पढमं हवइ मंगलं ॥ ९ ॥

इस के पीछे श्रीगुरुजी के सामने अथवा स्थापनाजी के सा
... नीचे लिखे ...
... ना चाहिये

१-शुद्ध आचरणादि, २-ज्ञान, ३ दर्शन, ४-चारि

४-चारित्र सद्दहणा शुद्धि, ५ प्रत्याख्यान शुद्धि ७ दर्शन शुद्धि, ८-चारित्र पांच आचार पाले पला, १० अनुमोदूं, ११-मनोगुप्ति । १२ वचनगुप्ति । १३ कायगुप्ति आदरूं ॥

इस के पीछे [illegible]

क. सामने [illegible]

ने चाहिए

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसी हिआए मत्थएण वंदामि ॥ १ ॥

इस के पीछे [illegible]

बोल लिखे इस पाठ [illegible]

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् अब्भुट्ठिओमि अब्भिं-तरराइयं खामेउं । इच्छं । खामेमि राइयं । जं किंचि अपत्तियं परपत्तियं भत्ते पाणे विणए वेयावच्चे आलावे संलावे उच्चासणे समासणे अंतरभासाए उवरिभासाए जं किंचि मज्झ विणय परिहीणं सुहुमं वा बायरं वा तुब्भे जाणह, अहं न जाणामि तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥२॥

इस पाठ के [illegible]

देकर इस प्रकार बोले

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक मुहप-त्ति पडिलेहूं ? ॥३॥

इस के पीछे दूसरे [illegible] दृष्टि [illegible] से मुंहपत्ति की पडिलेहणा करनी चाहिये, इस समय नीचे लिखे हुए मुंहपत्ति पडिलेहणा तथा अङ्ग पडिलेहणा के पचास बोलों को मन में चिन्तन करना चाहिये, प्रथम नीचे लिखे मुंहपत्ति के [illegible] बोलों को कहना चाहिये

सूत्र अर्थ साँचो सद्दहुं ॥१॥ सम्यक्त्वमोहनीय ॥२॥ मिथ्यात्वमोहनीय ॥ ३ ॥ मिश्रमोहनीय परिहरूं ॥४॥ कामराग ॥५॥ स्नेहराग ॥६॥ दृष्टिराग परिहरूँ ॥७॥

इस के पीछे बाएं हाथ की पडिलेहणा के समय नीचे लिखे हुए नव बोलों को मन में बोलना चाहिये -

सुगुरु-सुदेव सुधर्म आदरूं ॥१।२।३॥ कुगुरु कुदेव कुधर्म परिहरूँ ॥४।५।६॥ ज्ञान-दर्शन चारित्र आदरूँ ॥७।८।९॥

इस के पीछे दाहिने हाथ की पडिलेहणा करनी चाहिये, तथा नीचे लिखे हुए नव बोलों को बोलना चाहिये----

ज्ञानविराधना, दर्शनविराधना, चारित्रविराधना परिहरूँ ॥१।२।३॥

मनोगुप्ति वचनगुप्ति कायगुप्ति आदरूँ ॥४।५।६॥

मनोदण्ड वचनदण्ड काय दण्ड परिहरूँ ॥७।८।९॥

इस के पीछे नीचे लिखे हुए अंगपडिलेहणा के बोलों को बोलना चाहिये-

कृष्णलेश्या नीललेश्या, कापोतलेश्या, ये तीनों

मस्तके परिहरूं। ऋद्धिगारव, रसगारव, सातागारव, ये तीनों मुखे परिहरूं। मायाशल्य, नियाणशल्य, मिथ्यादर्शनशल्य, ये तीनों हृदये परिहरूं।

क्रोध, लोभ, ये दोनों दाहिने खम्भे परिहरूं।

माया, मान, ये दोनों बायें खम्भे परिहरूं।

हास्य रति अरति ये तीनों बायें हाथे परिहरूं।

भय शोक दुगंछा ये तीनों दाहिने हाथे परिहरूं।

पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, ये तीनों बायें पाये परिहरूं। वाउकाय, वनस्पतिकाय, त्रसकाय, ये तीनों दाहिने पाये परिहरूं।

ऊपर कही हुई विधि से मुहपत्ति की पडिलेहणा कर खमासमण देकर—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक संदिसाहूं? , इच्छं।

इस प्रकार कहकर फिर खमासमण देकर—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक ठाउं, इच्छं॥

एक नवकार गुनना। पीछे

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! पसायकरी सामायिकदंडक उच्चरावो जी। तहत्ति।

इस के बाद नीचे लिखे हुए सामायिक सूत्र को तीनबार उच्चारण करना चाहिये—

इस के पीछे "इच्छं" कहकर दूसरा खमासमणा दे मुहपत्ति की पडिलेहणा करनी चाहिए, उस समय नीचे लिखे मुहपत्ति पडिलेहणा तथा अङ्ग पडिलेहणा के बोलों का चिं मन में चिन्तन करना चाहिये, प्रथम नीचे लिखे मुहपत्ति के बोलों को कहना चाहिये—

सूत्र अर्थ साँचो सद्दहुं ॥१॥ सम्यक्त्वमोहनीय॥ मिथ्यात्वमोहनीय ॥ ३ ॥ मिश्रमोहनीय परिहरुं । कामराग॥४॥ स्नेहराग॥५॥ दृष्टिराग परिहरुं॥७॥

इस के पीछे बांये हाथ की पडिलेहणा के समय नीचे लिखे हुए नव बोलों को मन में बोलना चाहिये ----

सुगुरु-सुदेव सुधर्म आदरुं॥१।२।३॥ कुगुरु कु कुधर्म परिहरुं ॥४।५।६॥ ज्ञान-दर्शन चारित्र आ ॥७।८।९॥

इस के पीछे दाहिने हाथ की पडिलेहणा करनी चाहिये, नीचे लिखे हुए नव बोलों को बोलना चाहिये---

ज्ञानविराधना, दर्शनविराधना, चारित्रविरा परिहरुं ॥१।२।३॥

मनोगुप्ति वचनगुप्ति कायगुप्ति आदरुं॥४।५।६ मनोदण्ड वचनदण्ड काय दण्ड परिहरुं ॥७।८।

इस के पीछे नीचे लिखे हुए अंगपडिलेहणा के बोलोंको बोलना चाहिये

कृष्णलेश्या नीललेश्या, कापोतलेश्या, ये

सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि

यहां पर चार " नवकार " अथवा एक " लोगस्स " का काउस्सग्ग करके " णमो अरिहंताणं " कहकर काउस्सग्ग को पारना चाहिये पीछे प्रकटरूप में नीचे लिखे हुए " लोगस्स " इत्यादि पाठ को पढ़ना चाहिये—

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु॥५॥ कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्ग-बोहिलाभं समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा

सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

इस के पश्चात् एक एक खमासमण देकर नीचे लिखे हुए पाठों को बोलना चाहिये—

१-इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! बेसणे संदिसाउं? इच्छं ।

२-इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! बेसणे ठाउं? इच्छं ।

३-इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सज्झाय संदिसाउं? इच्छं ।

४-इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सज्झाय करूँ।

फिर तीन बार खमासमण देकर आठ बार नवकार मन्त्र को बोले।

॥ इति प्रभात सामायिकविधि सम्पूर्ण ॥

सामायिक ४८ मिनिट की होती है जिसमें ज्ञान ध्यान करना। इसके पश्चात् सामायिक को पारना चाहिये उसकी विधि यह है—
फिर खमासमण देकर मुहपत्ती की पडिलेहणा करनी चाहिये, फिर दूसरा खमासमण देकर नीचे लिखे पाठ को बोले —

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक पारूँ, यथाशक्ति।

इस के बाद फिर खमासमण देकर नीचे लिखे पाठ को बोले—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिकं पारियं, तहत्ति ।

ठेकर नीचे लिखे पाठ को बोलना चाहिये--

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! चैत्यवन्दन करूँ, इच्छं।

इस के पश्चात नीचे लिखे हुए सूत्रों को क्रमशः बोले--

जयउ सामिय जयउ सामिय, रिसह सेत्तुंजि उज्जंति पहु नेमिजिण जयउ वीर सच्चउरि-मंडण ॥ १ ॥
भरुअच्छय मुणिसुव्वय, मुहरि पास दुह-दुरिय-खंडण।
अवरविदेहिं जे तित्थयरा, चिहुंदिसि विदिसि जं केवि।
तीयाऽणागय-संपइ य वंदूं जिण सव्वेवि ॥२॥

कम्मभूमीहिं कम्मभूमीहिं पढम-संघयणि, उक्कोसय सत्तरिसय जिणवराण विहरंत लब्भइ। नव-कोडीहिं केवलीण, कोडी- सहस्स नव साहु-संपइ। संपइ जिणवर वीससुणि, बिहुं कोडीहिं वरनाण। समणह कोडीसहस्स दुअ, थुणिज्जइ निच्चविहाण॥ १॥ सत्ताणवइ सहस्सा, लक्खा छप्पन्न अट्ठ कोडीओ। चउसयछायासीया, तिल्लुक्के चेइए वंदे ॥२॥ वंदे नवकोडिसयं, पणवीसं कोडी लक्ख तेवन्ना। अट्ठावीस सहस्सा, चउसय अट्ठासिया पडिमा ॥३॥

जं किंचि नामतित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए।
जाइं जिणबिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ॥ ४ ॥

नमोत्थु णं अरिहंताणं भगवंताणं आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवरपुंडरीआणं पुरिसवरगंधहत्थीणं लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहिआणं लोगपईवाणं लोगपज्जोअगराणं अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं बोहिदयाणं धम्मदयाणं धम्मदेसियाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं अप्पडिहयवरनाणदंसण-धराणं विअट्टछउमाणं जिणाणं जावयाणं तिन्नाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोअगाणं सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्तिसिद्धिगइनामधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं जिअभयाणं ॥ जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले । संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वन्दामि ॥ १ ॥

(जावंति चेइआइं)

जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरियलोए अ। सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥१॥

(जावंत केवि साहू)

जावंत केवि साहू, भरहेरवयमहाविदेहे अ। सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंडविरयाणं ॥१॥

(परमेष्ठि-नमस्कार)

देकर नीचे लिखे पाठ को बोलना चाहिये—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! चैत्यवन्दन करूँ, इच्छं।

इस के पश्चात् नीचे लिखे हुए सूत्रों को क्रमशः बोले—

जयउ सामिय जयउ सामिय, रिसह सेत्तुंजि उज्जंनि पहु नेमिजिण जयउ वीर सच्चउरि-मंडण ॥ १ ॥
भरुअच्छय मुणिसुव्वय, मुहरि पास दुह-दुरिय-खंडण।
अवरविदेहिं जे तित्थयरा, चिहुंदिसि विदिसि जं केवि।
तीयाऽणागय-संपइ य वंदू जिण सव्वेवि ॥२॥

कम्मभूमीहिं कम्मभूमीहिं पढम-संघयणि, उक्कोसय सत्तरिसय जिणवराण विहरन्त लब्भइ। नव-कोडीहिं केवलीण, कोडी- सहस्स नव साहु-संपइ। संपइ जिणवर वीसमुणि, बिहुं कोडीहिं वरनाण। समणह कोडीसहस्स दुअ, थुणिज्जइ निच्चविहाण॥ १॥ सत्ताणवइ सहस्सा, लक्खा छप्पन्न अट्ठ कोडीओ। चउसयछायासीया, तिल्लुक्के चेइए वंदे ॥२॥ वंदे नवकोडिसयं, पणवीसं कोडी लक्ख तेवन्ना। अट्ठावीस सहस्सा, चउसय अट्ठासिया पडिमा ॥३॥

जं किंचि नामतित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए।
जाइं जिणबिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ॥ ४ ॥

नमोत्थु णं अरिहंताणं भगवंताणं आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवरपुंडरीआणं पुरिसवरगंधहत्थीणं लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहिआणं लोगपईवाणं लोगपज्जोअगराणं अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं बोहिदयाणं धम्मदयाणं धम्मदेसियाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं अप्पडिहयवरनाणदंसण-धराणं विअट्टछउमाणं जिणाणं जावयाणं तिन्नाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोअगाणं सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्तिसिद्धिगइनामधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं जिअभयाणं ॥ जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले। संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वन्दामि ॥ १ ॥

(जावंति चेइआइं)

जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअलोए अ।
सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥१॥

(जावंत केवि साहू)

जावंत केवि साहू, भरहेरवयमहाविदेहे अ। सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंडविरयाणं ॥१॥

(परमेष्ठि-नमस्कार)

इच्छं ।

कुसुमिण-दुसुमिण-राई- पायच्छित्तविसोहणत्थं करेमि काउस्सग्गं ॥१॥

इस के पीछे नीचे लिखे हुए "अन्नत्थ ऊससिएणं" इत्यादि पाठ को बोलना चाहिये—

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए। सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥१॥

इसके पीछे सोलह नवकार मन्त्र का चिन्तन करते हुए काउस्सग्ग करना चाहिये, इसके पश्चात् "णमो अरिहंताणं" इस वाक्य को कह कर काउस्सग्ग को पार कर नीचे लिखे हुए "लोगस्स" इत्यादि पाठ को बोलना चाहिये—

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥१॥ उसभमजियं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, ध-

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

(उवसग्गहरंस्तवन)

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं । विसहरविसनिन्नासं, मंगलकल्लाणआवासं ॥१॥ विसहरफुलिंगमंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ । तस्स गहरोगमारी-दुट्ठजरा जंति उवसामं ॥२॥ चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामोवि बहुफलो होइ । नरतिरिएसुवि जीवा, पावंति न दुक्खदोहग्गं ॥३॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणि कप्पपायवब्भहिए । पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥४॥ इय संथुओ महायस!, भत्तिब्भरनिब्भरेण हियएण । ता देव! दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास जिणचन्द ॥५॥

(जय वीयराय)

जय वीयराय ! जगगुरु! होउ ममं तुह पभावओ भयवं। भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिया इट्ठफलसिद्धी ॥१॥ लोगविरुद्धच्चाओ, गुरुजणपूआ परत्थकरणं च । सुहगुरुजोगो तव्वयणसेवणा आभवमखंडा ॥२॥

इस प्रकार चैत्यवन्दन करने के पीछे खमासमण देकर नीचे लिखे हुए पाठ को बोलना चाहिये—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! कुसुमिण-दुसुमिण-राई-पायच्छित्त-विसोहणत्थं काउस्सग्ग करूँ ?

इच्छं ।

कुसुमिण-दुसुमिण-राई- पायच्छित्तविसोहणत्थं करेमि काउस्सग्गं ॥१॥

इस के पीछे नीचे लिखे हुए "अन्नत्थ ऊससिएणं" इत्यादि पाठ को बोलना चाहिये—

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए। सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठि संचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥१॥

इसके पीछे सोलह नवकार मन्त्र का चिन्तन करते हुए काउस्सग्ग करना चाहिये, इसके पश्चात् "नमो अरिहंताणं" इस पाठ को पढ़ कर काउस्सग्ग को पार कर नीचे लिखे हुए "लोगस्स" इत्यादि पाठको बोलना चाहिये—

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, ध-

मनःप्रसन्नतामेति पूज्यमाने जिनेश्वरे ।

(उवसग्गहरस्तवन)

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं । विसहरविसनिन्नासं, मंगलकल्लाणआवासं ॥१॥ विसहरफुलिंगमंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ । तस्स गहरोगमारी-दुट्ठजरा जंति उवसामं ॥२॥ चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ । नरतिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्खदोगच्चं ॥३॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणिकप्पपायवब्भहिए । पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥४॥ इअ संथुओ महायस!, भत्तिब्भरनिब्भरेण हियएण । ता देव! दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास जिणचन्द ॥५॥

(जय वीयराय)

जय वीयराय ! जगगुरु! होउ ममं तुह पभावओ भयवं। भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिआ इट्ठफलसिद्धी ॥१॥ लोगविरुद्धच्चाओ, गुरुजणपूआ परत्थकरणं च । सुहगुरुजोगो तव्वयणसेवणा आभवमखंडा ॥२॥

इस प्रकार चैत्यवन्दन करने के पीछे खमासमण देकर नीचे लिखे हुए पाठ को बोलना चाहिये—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! कुसुमिण-दुसुमिण-राई-पायच्छित्त-विसोहणत्थं काउस्सग्ग करूँ ?

इच्छं ।

कुसुमिण-दुसुमिण-राई- पायच्छित्तविसोहणत्थं करेमि काउस्सग्गं ॥१॥

इस के पीछे नीचे लिखे हुए "अन्नत्थ ऊससिएणं" इत्यादि पाठ को बोलना चाहिये ---

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए। सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥१॥

इसके पीछे सोलह नवकार मन्त्र का चिन्तन करते हुए काउस्सग्ग करना चाहिये, इसके बाद 'णमो अरिहंताणं' इस पद को कह कर काउस्सग्ग को पार कर नीचे लिखे हुए "लोगस्स" इत्यादि पाठको बोलना चाहिये-

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, ध-

संघट्टिया राइय-दुचितिय-दुब्भासिय-दुचिट्ठिय, इच्छं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ १ ॥

इस के पीछे दूर्दे लिखा हुआ "अमोतु णं" पाठ बोलना चाहिये। तदनन्तर खड़े होकर नीचे लिखा हुआ "करेमि भंते" का पाठ बोलना चाहिये—

करेमि भंते! सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि जाव नियमं पज्जुवासामि दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि तस्स भन्ते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

इस के पश्चात् नीचे लिखा हुआ "इच्छामि ठामि" का पाठ बोलना चाहिये—

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं जो मे राइओ अइयारो कओ काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छियव्वो असावगपाउग्गो नाणे तह दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं पंचण्हमणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं सिक्खावयाणं बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडियं जं विराहियं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥१॥

इसके पश्चात् नीचे लिखा हुआ "तस्स उत्तरी" का पाठ बोलना चाहिये—

मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणि
सुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्ध
माणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमल
पहीणजरमरणा । चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे प
सीयंतु ॥५॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्त
मा सिद्धा । आरुग्गबोहिलाभं समाहिवरमुत्तमं दिं
॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासय
रा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु॥ ७॥

इसके पीछे पडिक्कमण के ठाने [illegible] करनी चाहि-
ये, उस की विधि यह है कि—

१-प्रथम खमासमण देकर "श्री आचार्यजी मिश्र" कहकर वन्द
करना चाहिये।

२- दूसरा खमासमण देकर "श्री उपाध्यायजी मिश्र" कहकर व
न्दन करना चाहिये।

३- तीसरा खमासमण देकर "जङ्गमयुगप्रधान वर्त्तमान भट्टा
श्रीपूज्यजी" का नाम लेकर वन्दन करना चाहिये।

४-चौथा खमासमण देकर सर्वसाधुओं को वन्दन करना चाहिये

इस प्रकार चार खमासमण देकर पडिक्कमणा को ठाकर गोदु
हन- आसन से बैठकर मस्तक को नमाकर दोनों हाथों से मुंहपत्ती को
मुखपर देकर नीचे लिखे हुए "सव्वस्सवि" इत्यादि वाक्य को बो
लना चाहिये—

...संवरसंवि राइय-दुचिनिय-दुब्भासिय दुचिट्ठिय, इच्छं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ १ ॥

इस के पीछे पूर्व लिखा हुआ "नमोत्थु णं" पाठ बोलना चाहिये। तदनन्तर खड़े होकर नीचे लिखा हुआ "करेमि भंते" का पाठ बोलना चाहिये—

करेमि भंते! सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि जाव नियमं पज्जुवासामि दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि तस्स भन्ते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

इस के पश्चात् नीचे लिखा हुआ "इच्छामि ठामि क..." पाठ बोलना चाहिये—

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं जो मे राइओ अइयारो कओ काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छियव्वो असावगपाउग्गो नाणे तह दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं पंचण्हमणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं सिक्खावयाणं बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडियं जं विराहियं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥१॥

इसके पश्चात् नीचे लिखा हुआ 'तस्स उत्तरी' का पाठ बोलना चाहिये—

पुक्खरवरदीवड्ढे, धायइसंडे अ जंबूदीवे अ। भरहेरवयविदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ॥१॥ तमतिमिरपडलविद्धंसणस्स सुरगणनरिंदमहिअस्स। सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडियमोहजालस्स ॥२॥ जाईजरामरणसोगपणासणस्स, कल्लाणपुक्खलविसालसुहावहस्स। को देवदाणवनरिंदगणच्चिअस्स, धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमायं ॥३॥ सिद्धे भो पयओ णमो जिणमए नंदी सया संजमे, देवंनागसुवन्नकिन्नरगणसब्भूअभावच्चिए। लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं तेलुक्कमच्चासुरं। धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ धम्मुत्तरं वड्ढउ ॥४॥ सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं।

इस के पीछे पूर्व लिखे हुए "वंदणवत्तियाए" इत्यादि पाठ को तथा "अन्नत्थ ऊससिएणं" इत्यादि पूर्ण पाठ को बोल कर आठ नवकार मन्त्र का काउस्सग्ग करना चाहिये।

काउस्सग्ग में आगुणा चार प्रहर को चिन्तना चाहिये, जो आगे आलोयणाविधि में लिखी जावेगी,इस के पीछे नीचे लिखे हुए "सिद्धाणं बुद्धाणं" इत्यादि पाठ को बोलना चाहिये—

सिद्धाणं बुद्धाणं पारगयाणं परंपरगयाणं। लोअग्गमुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं॥१॥ जो देवाण वि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति। तं देवदेवमहिअं, सिरसा वंदे महावीरं ॥ २ ॥इक्को वि नमुक्कारो, जिणवर

तरस उत्तरीकरणेणं पायच्छित्तकरणेणं विसोहीकर-णेणं विसल्लीकरणेणं पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं ॥१॥

इसके पीछे पूर्व लिखा हुआ "अन्नत्थ ऊससिएणं" का इ पाठ बोलना चाहिये।

इसके पीछे चरित्रशुद्धि के निमित्त चार नवकारमन्त्र अथवा पूर्व लिखे हुए एक "लोगस्स" का काउस्सग्ग करके उनको पार क फिर दर्शनशुद्धि के लिये प्रकटरूपसे पूर्व लिखे हुए "लोगस्स" इत्या दि पाठ को बोलना चाहिये।

इसके पीछे नीचे लिखा हुआ पाठको बोलना चाहिये—

सव्वलोए अरिहंतचेइआणं करेमि काउस्सग्गं ॥१॥ वंदणवत्तिआए पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्मा-णवत्तिआए बोहिलाभवत्तिआए निरुवसग्गवत्तिआए सद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणी-ए ठामि काउस्सग्गं ॥१॥

इसके पीछे पूर्व लिखा हुआ "अन्नत्थऊससिएणं" इत्या पाठ बोलना चाहिये।

तदनन्तर चार नवकारमन्त्र का अथवा पूर्व लिखा हुआ ए "लोगस्स" इत्यादि पाठ का काउस्सग्ग करके, पारके पीछे ज्ञानाचार के निमित्त नीचे लिखा हुआ पाठ बोलना चाहिये—

धम्मस्स वद्धमाणस्स । संसारसागराओ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥३॥ उज्जिंतसेलसिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स । तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं नमंसामि ॥४॥ चत्तारि अट्ठ दस दो य वंदिया जिणवरा चउव्वीसं । परमट्ठनिट्ठिअट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥५॥

फिर तीसरे आवश्यक की मुहपत्ती पडिलेहणा करनी चाहिये। बायें हाथ में मुहपत्ती को लेकर उस में बायें कान से दाहिने कान तक ललाट को पूँजकर मुहपत्ती को आगे रखलेना चाहिये और उस के मध्यभाग में गुरुचरण की कल्पना करलेनी चाहिये॥

गुरुवन्दना का पाठ यह है—

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं । निसीहि। अहोकायं कायसंफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे राई वइक्कंता, जत्ता भे जवणिज्जं च भे, खामेमि खमासमणो राइयं वइक्कमं, आवस्सियाए पडिक्कमामि खमासमणाणं राइआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालियाए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ ६॥

यह सुगुरुवन्दन का पाठ सर्वत्र उक्तविधि से दो बार पढ़ना चाहिये, तथा दूसरी बार पढ़ने के समय " आवस्सियाए" यह पद नहीं कहना चाहिये, तथा इस के पीछे नीचे लिखे हुए पाठ को बोलना चाहिये—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् राइअं आलोएउं? इच्छं, आलोएमि जो मे राइओ अइयारो०॥

इत्यादि पंचमसूत्र में लिखे हुए "इच्छाकारेण" इत्यादि समस्त पाठ को बोलना चाहिये।

इस के पश्चात् रात्रिसम्बन्धी अतिचार की आलोचना नीचे लिखे हुए पाठ से करे—

आकुगा चार पहर रात्रि में मैंने जो विराधना होय, सात लाख पृथिवीकाय, सात लाख अप्काय, सात लाख तेउकाय, सात लाख वाउकाय, दश लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय, चौदह लाख साधारणवनस्पतिकाय, दो लाख बेइन्द्रिय, दो लाख तेइन्द्रिय, दो लाख चौरिन्द्रिय, चार लाख देवता, चार लाख नारकी, चार लाख तिर्यञ्चपञ्चेन्द्रिय, चौदह लाख मनुष्य, एवं चार गति के चौरासी लाख जीवयोनि में से मेरे जीव ने जो कोई जीव हण्यो होय, हणाव्यो होय, हणतां प्रत्ये भलो जाण्यो होय, ते सब्वे हुं मने वचने कायाये करी तस्स मिच्छामि दुक्कडं॥

धम्मरस वरचाउरन्तस्स । संसारसागराओ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥ ३ ॥ उज्जितसेलसिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स । तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं नमंसामि ॥ ४ ॥ चत्तारि अट्ठ दस दोय वंदिया जिणवरा चउव्वीसं । परमट्ठनिट्ठिअट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसन्तु ॥ ५ ॥

फिर तीसरे ... मुहपत्ती ... दोनों वांदणा ... गुरु ... हाथ ... मुहपत्ती ... ललाट को छूकर मुहपत्ती ... पहिये और ... मुखभाग में गुरुवन्दना करना चाहिये ॥

सुगुरुवन्दना का पाठ यह है —

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं । निसीहि । अहोकायं काय संफासं, खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंतां बहुसुभेण भे राई वइक्कंता. जत्ता भे जवणिज्जं च भे खामेमि खमासमणो राइयं वइक्कम, आवस्सिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं राइआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

यह गुरुवन्दना का पाठ सर्वत्र उक्तविधि से दो वार पढ़ना चाहिये, तथा दूसरी वार पढ़ने के समय "आवस्सियाए" यह एक पद नहीं पढ़ना चाहिये, तथा इस के पीछे नीचे लिखे हुए पाठको बोलना चाहिये—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! राइअं आलोउं? इच्छं, आलोएमि जो मे राइओ अइयारो० ॥

इत्यादि बोलकर पीछे पूर्व लिखे हुए "इच्छामि ठामि" इत्यादि समस्त पाठ को बोलना चाहिये।

इस के पश्चात् रात्रिसम्बन्धी अतिचार की आलोचना नीचे लिखे हुए पाठ से करे—

आजुणा चार पहर रात्रि में मैंने जो विराधना होय, सातलाख पृथिवीकाय, सातलाख अप्काय, सातलाख तेउकाय, सातलाख वाउकाय, दश लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय, चौदह लाख साधारणवनस्पतिकाय, दोलाख बेइन्द्रिय, दोलाख तेइन्द्रिय, दोलाख चौरिन्द्रिय, चार लाख देवता, चार लाख नारकी, चारलाख तिर्यञ्चपञ्चेन्द्रिय, चौदह लाख मनुष्य, एवं चार गति के चौरासी लाख जीवयोनि में मेरे जीवने जे कोई जीव हण्यो होय, हणाव्यो होय, हणतां प्रत्ये भलो जाण्यो होय, ते सव्वे हुं मने वचने कायाये करी तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

इस के पीछे अठारह पाप स्थानक की आलोचना नीचे
हुए पाठ से करनी चाहिये—

प्राणातिपात मृषावाद अदत्तादान मैथुन प
क्रोध मान माया लोभ राग द्वेष कलह अभ्याख्य
शुन्य रति अरति परपरिवाद मायामृषावाद मिथ्य
शल्य, ये अठारह पापस्थानक सेव्या होय. सेवराव्य
सेवतां प्रत्ये भला जाण्या होय, ते सव्वे हुँ मन वच
यायें करी तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

ज्ञान दर्शन चारित्र पाटी पोथी ठवणी कवल
कारवाली देव गुरु धर्म की आशातना करी होय,
कर्मादानों की आसेवना करी होय, राजकथा, देश
स्त्रीकथा, भक्तकथा करी होय, और जो कोई पाप प
न्दादि कीधुँ होय, कराव्युं होय, करतां अनुमोद्युं हो
सर्व मने वचने काय. ये करके रात्रि अतिचार आ
ण कर के पडिक्कमणा में आलोउं तस्स मिच्छा मि दु

इस आलोचना पाठ के बाद पूर्व लिखा हुआ "सव्वस्स
इय" पाठ बोलना चाहिये।

इस के पीछे संडासा का प्रमार्जन कर आसन पर बै
दाहिने गोडे को ऊंचा और बायें गोडे को नीचा कर कर
"भगवन्! सुत्र भणूँ" इस के पीछे "इच्छं" कहकर ना
नवकार मन्त्र को तथा तीन बार पूर्व लिखे हुए "करेमि

इस के पीछे अठारह पाप स्थानक की आलोचना नीचे लिखे हुए पाठ से करनी चाहिये—

प्राणातिपात मृषावाद अदत्तादान मैथुन परिग्रह क्रोध मान माया लोभ राग द्वेष कलह अभ्याख्यान पैशुन्य रति अरति परपरिवाद मायामृषावाद मिथ्यात्व शल्य, ये अठारह पापस्थानक सेव्या होय, सेवराव्या होय सेवतां प्रत्ये भला जाण्या होय, ते सव्वे हुँ मन वचन कायें करी तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

ज्ञान दर्शन चारित्र पाटी पोथी ठवणी कवली नवकारवाली देव गुरु धर्म की आशातना करी होय, पन्द्रे कर्मादानों की आसेवना करी होय, राजकथा, देशकथा, स्त्रीकथा, भक्तकथा करी होय, और जो कोई पाप परनिन्दादि कीधुँ होय, कराव्युं होय, करतां अनुमोद्युं होय मोसर्व मने वचने काय. ये करके रात्रि अतिचार आलोयण कर के पडिक्कमणा में आलोउं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

इस आलोचना पाठ के बाद पूर्व लिखा हुआ "सव्वस्स वि राइय" पाठ बोलना चाहिये ।

इस के पीछे संडासा का प्रमार्जन कर आसन पर बैठ कर दाहिने गोडे को ऊंचा और बायें गोडे को नीचा कर कहे कि— "भगवन्! सूत्र भणूं" इस के पीछे "इच्छं" कहकर तीन बार नवकार मन्त्र को तथा तीन बार पूर्व लिखे हुए "करेमि भंते"

इत्यादि पाठ को कह कर "इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे राइओ" इत्यादि "इच्छामि ठामि" इत्यादि सम्पूर्ण पाठ को बोल कर नीचे लिखा हुआ वंदित्तु सूत्र को बोलना चाहिये, तथा इस सूत्र को ४२ की गाथा तक बैठ कर ही कहना चाहिये, तथा शेष आठ गाथाओं को खड़े हो कर कहना चाहिये—

वंदित्तु सव्वसिद्धे, धम्मायरिए अ सव्वसाहू अ। इच्छामि पडिक्कमिउं, सावगधम्माइआरस्स ॥१॥ जो मे वयाइआरो, नाणे तह दंसणे चरित्ते अ। सुहुमो अ बायरो वा, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ २॥ दुविहे परिग्गहंमि, सावज्जे बहुविहे अ आरंभे। कारावणे अ करणे, पडिक्कमे राइयं सव्वं ॥३॥ जं बद्धमिंदिएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं। रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥ आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणाभोगे। अभिओगे अ निओगे, पडिक्कमे राइयं सव्वं ॥ ५ ॥ संकाकंखविगिच्छा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु। सम्मत्तस्सइआरे, पडिक्कमे राइयं सव्वं ॥ ६ ॥ छक्कायसमारंभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा। अत्तट्ठा य परट्ठा, उभयट्ठा चेव तं निंदे ॥७॥ पंचण्हमणुव्वयाणं, गुणव्वयाणं च तिण्हमइआरे। सिक्खाणं च चउण्हं, पडिक्कमे राइयं सव्वं ॥८॥ पढमे अणुव्वयंमि, थूलगपाणाइवायविरईओ। आयरिअम-

इस के पीछे अठारह पाप स्थानक की आलोचना नीचे लिखे हुए पाठ से करनी चाहिये—

प्राणातिपात मृषावाद अदत्तादान मैथुन परिग्रह क्रोध मान माया लोभ राग द्वेष कलह अभ्याख्यान पैशुन्य रति अरति परपरिवाद मायामृषावाद मिथ्यात्व शल्य, ये अठारह पापस्थानक सेव्या होय, सेवराव्या होय, सेवतां प्रत्ये भला जाण्या होय, ते सव्वे हुँ मन वचन काया करी तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

ज्ञान दर्शन चारित्र पाटी पोथी ठवणी कवली नवकारवाली देव गुरु धर्म की आशातना करी होय, पन्द्रे कर्मादानों की आसेवना करी होय, राजकथा, देशकथा, स्त्रीकथा, भक्तकथा करी होय, और जो कोई पाप परनिन्दादि कीधुँ होय, कराव्युं होय, करतां अनुमोद्युं होय मो सर्व मने वचने काय. ये करके रात्रि अतिचार आलोयण करके पडिक्कमणा में आलोई तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

इस आलोचना पाठ के बाद पूर्व लिखा हुआ "सव्वस्स वि राइय" पाठ बोलना चाहिये।

इस के पीछे संडासा का प्रमार्जन कर आसन पर बैठ कर दाहिने गोड़े को ऊंचा और बायें गोड़े को नीचा कर कहे कि—"भगवन्! सूत्र भणुँ" इस के पीछे "इच्छं" कहकर तीन बार नवकार मन्त्र को तथा तीन वार पूर्व लिखे हुए "करेमि भंते

त्यादि पाठ को कह कर "इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे राइओ" इत्यादि "इच्छामि ठामि" इत्यादि सम्पूर्ण पाठ को बोल कर नीचे लिखा हुआ वंदित्तु सूत्र को बोलना चाहिये, तथा इस सूत्र को ४२ वीं गाथा तक बैठ कर ही कहना चाहिये, तथा शेष पाठ गाथाओं को खड़े हो कर कहना चाहिये—

वंदित्तु सव्वसिद्धे, धम्मायरिए अ सव्वसाहू अ। इच्छामि पडिक्कमिउं, सावगधम्माइआरस्स ॥१॥ जो मे वयाइआरो, नाणे तह दंसणे चरित्ते अ। सुहुमो अ बायरो वा, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ २॥ दुविहे परिग्गहंमि, सावज्जे बहुविहे अ आरंभे। कारावणे अ करणे, पडिक्कमे राइयं सव्वं॥३॥ जं बद्धमिंदिएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं। रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि॥ ४॥ आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणाभोगे। अभिओगे अ निओगे, पडिक्कमे राइयं सव्वं ॥ ५॥ संकाकंखविगिच्छा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु। सम्मत्तस्सइआरे, पडिक्कमे राइयं सव्वं ॥ ६॥ छक्कायसमारंभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा। अत्तट्ठा य परट्ठा, उभयट्ठा चेव तं निंदे ॥७॥ पंचण्हमणुव्वयाणं, गुणव्वयाणं च तिण्हमइआरे। सिक्खाणं च चउण्हं, पडिक्कमे राइयं सव्वं॥८॥ पढमे अणुव्वयंमि, थूलगपाणाइवायविरईओ। आयरिअम-

प्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ९ ॥ वहबंधछविच्छेए,
अइभारे भत्तपाणवुच्छेए । पढमवयस्सइआरे, पडिक्कमे
राइअं सव्वं ॥ १० ॥ बीए अणुव्वयंमि, परिथूलग
अलिअवयणविरईओ । आयरियमप्पसत्थे, इत्थ पमा-
यप्पसंगेणं ॥ ११ ॥ सहसारहस्सदारे, मोसुवएसे अ
कूडलेहे अ । बीयवयस्सइआरे, पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥
१२ ॥ तइए अणुव्वयंमि, थूलगपरदव्वहरणविरईओ ।
आयरियमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १३ ॥ तेना-
हडप्पओगे, तप्पडिरूवे विरुद्धगमणे अ । कूडतुलकूड-
माणे, पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥ १४ ॥ चउत्थे अणुव्व-
यंमि, निच्चं परदारगमणविरईओ । आयरियमप्पसत्थे,
इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १५ ॥ अपरिग्गहिआ इत्तर,
अणंग विवाह तिव्व अणुरागे । चउत्थवयस्सइआरे,
पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥ १६ ॥ इत्तो अणुव्वए पंचमंमि
आयरियमप्पसत्थंमि । परिमाणपरिच्छेए, इत्थ पमा-
यप्पसंगेणं ॥ १७ ॥ धण-धन्न-खित्त-वत्थू-रुप्प-सुवन्ने अ
कुविअपरिमाणे । दुपए चउप्पयंमि य, पडिक्कमे राइअं
सव्वं ॥ १८ ॥ गमणस्स य परिमाणे, दिसासु उड्ढं अहे
अ तिरिअं च । वुड्ढि सइ अंतरद्धा, पढमंमि गुणव्वए
निंदे ॥ १९ ॥ मज्जंमि अ मंसंमि अ, पुप्फे अ फले अ
गंधमल्ले अ । उवभोगपरिभोगे, बीयंमि गुणव्वए निंदे

२० ॥ सचित्ते पडिबद्धे, अप्पोलिदुप्पोलियं च आहा-
। तुच्छोसहिभक्खणया, पडिक्कमे राइयं सव्वं ॥
। ॥ इंगाली-वणसाडी-भाडी फोडी सुवज्जए कम्मं।
णिज्जं चेव दंत-लक्ख-रस-केस-विस-विसयं ॥२२॥
। खु जंतपिल्लण-कम्मं निल्लंछणं च दवदाणं।
दहतलायसोसं, असईपोसं च वज्जिज्जा ॥ २३ ॥
त्थग्गिमुसलजंतग-तणकट्ठे मंतमूलभेसज्जे। दिन्ने दवा-
ए वा, पडिक्कमे राइयं सव्वं॥ २४ ॥ण्हाणुव्वट्टणवन्नग-
लेवणे सद्दरूवरसगंधे। वत्थासण आभरणे, पडिक्कमे
इयं सव्वं॥ २५ ॥ कंदप्पे कुक्कुइए, मोहरि अहिगरण
भोगअइरित्ते। दंडम्मि अणट्ठाए,तइयंमि गुणव्वए निं-
॥ २६ ॥ तिविहे दुप्पणिहाणे, अणवट्ठाणे तहा सइ
हूणे। सामाइयवितहकए, पढमे सिक्खावए निंदे ॥
७॥ आणवणे पेसवणे, सद्दे रूवे अ पुग्गलक्खेवे।
ावगासियम्मि, बीए सिक्खावए निंदे ॥ २८ ॥
थारुच्चारविही-पमाय तह चेव भोयणाभोए। पोसह-
हिविवरीए, तइए सिक्खावए निंदे॥ २९ ॥ सचित्ते
ारिखवणे, पिहिणे ववएसमच्छरे चेव। कालाइक्कमदा-
, चउत्थे सिक्खावए निंदे॥ ३० ॥ सुहिएसु अ दुहिएसु
अ, जा मे अस्संजएसु अणुकंपा। रागेण व दोसेण
तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३१ ॥ साहूसु संविभागो,

नकम्मो तवचरणकरणजुत्तेसु । संते फासुअदाणे,
निंदे तं च गरिहामि ॥ ३२ ॥ इहलोए परलोए, जीवि
मरणे अ आसंसपओगे । पंचविहो अइआरो, मा मज्
हुज्ज मरणंते ॥ ३३ ॥ काएण काइअस्स, पडिक्कमे वा
यस्स वायाए । मणसा माणसिअस्स, सव्वस्स वयाइ
रस्स ॥ ३४ ॥ वंदणवयसिक्खागा-रवेसु सन्नाकसायदं
। गुत्तीसु अ समिईसु अ, जो अइआरो अ तं निंदे ॥
सम्मदिट्ठी जीवो, जइ वि हु पावं समायरइ किंचि । अप्
होइ बंधो, जेण न निद्धंधसं कुणइ ॥ ३६
तं पि हु सपडिक्कमणं, सप्परिआवं सउत्तरगुणं
खिप्पं उवसामेइ, वाहिव्व सुसिक्खिओ विज्जो ॥
जहा विसं कुट्ठगयं, मंतमूलविसारया । विज्जा हणं
मंतेहिं, तो तं हवइ निव्विसं ॥ ३८ ॥ एवं अट्ठविहं क
रागदोससमज्जिअं । आलोअंतो अ निंदंतो, खिप्प
णइ सुसावओ ॥ ३९ ॥ कयपावोवि मणुस्सो, आलो
निंदिय गुरु-सगासे । होइ अइरेगलहुओ, ओहरि
भरुव्व भारवहो ॥ ४० ॥ आवस्सएण एएण साव
जइवि बहुरओ होइ । दुक्खाणमंतकिरिअं, काही अ
रेण कालेण ॥ ४१ ॥ आलोअणा बहुविहा, न य सं
रिया पडिक्कमणकाले । मूलगुण उत्तरगुणे, तं निंदे
च गरिहामि ॥ ४२ ॥ तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्त

सुभेण भे राई वइक्कंता, जत्ता भे जवणिज्जं च भे खा-
मेमि खमासमणो राइयं वइक्कमं, आवस्सियाए पडिक्क-
मामि खमासमणाणं राइआए आसायणाए तित्तीसन्नय-
राए, जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए काय-
दुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालियाए
सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए
जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो! पडिक्कमामि
निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

इस के पीछे अवग्रह में ही रहते हुए नीचे लिखे हुए पाठ को बोलना चाहिये—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! अब्भुट्ठिओमि अब्भिंतरराइयं खामेउं, इच्छं, खामेमि राइयं। जं किंचि अपत्तियं परपत्तियं भत्ते पाणे विणए वेयावच्चे आलावे संलावे उच्चासणे समासणे अंतरभासाए उवरिभासाए जं किंचि मज्झ विणयपरिहीणं सुहुमं वा बायरं वा तुब्भे जाणह अहं न जाणामि तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

इस पाठ को बोल कर ... आदि-आसन से बैठकर दोनों हाथों को पंजे टेककर मुहपत्ती को बायें हाथ में मुख पर देकर और दाहिने हाथ को गुरु के सामने रखकर तथा नीचे को नमकर "जं किंचि अपत्तियं" इत्यादि "अब्भुट्ठिओमि" का सम्पूर्ण पाठ कहना चाहिये, फिर दो बार "सुगुरुवांदणा" देकर भूमि

...त प्रमार्जन करते हुए पीछे पगों अवग्रह के बाहर आना चाहिये,
...तथा नीचे लिखे हुए पाठ को बोलना चाहिये—

आयरियउवज्झाए, सीसे साहम्मिए कुलगणे अ ।
जे मे केइ कसाया, सव्वे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥ सव्वस्स
समणसंघस्स भगवओ अंजलि करिअ सीसे । सव्वं
खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥ २ ॥ सव्वस्स
जीवरासिस्स, भावओ धम्मनिहिय नियचित्तो । सव्वं
खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥ ३ ॥

इस के पीछे नीचे लिखा हुआ "करेमि भंते" का पाठ बोलना
चाहिये—

करेमि भंते! सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि जाव
नियमं पज्जुवासामि दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काए-
णं न करेमि न कारवेमि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि
गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

इस के पश्चात् नीचे लिखे हुए "इच्छामि ठामि" इत्यादि पा...
को बोलना चाहिये -

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं, जो मे राइओ अइया...
कओ, काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्म...
अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अण...
रो असमणपाउग्गो नाणे दंसणे ... चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए । तिण्हं गुत्तीणं, ...

कसायाणं,पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडियं जं विराहियं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ १ ॥

इसके पीछे नीचे लिखे हुए "तस्स उत्तरी" इत्यादि पाठको बोलना चाहिये—

तस्स उत्तरीकरणेणं पायच्छित्तकरणेणं विसोहीकरणेणं विसल्लीकरणेणं पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं ॥ १ ॥

इस के पीछे यह बोलना चाहिये कि—

श्रीमहावीरस्वामि- छम्मासीतप- चिन्तन- निमित्तं करेमि काउस्सग्गं ॥ १ ॥

इस के पीछे नीचे लिखे हुए "अन्नत्थ" इत्यादि पाठ को बोलना चाहिये—

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए [illegible] अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं [illegible] एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अवि- [illegible] हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

उक्त पाठ को पढ़कर काउस्सग्ग करना चाहिये तथा उस में श्रीमहावीर स्वामीके किये हुए छमासी तप का चिन्तन करना चाहिये, अथवा चौबीस नवकार या छ: " लोगस्स" का काउस्सग्ग करना चाहिये, तथा काउस्सग्ग को पारकर नीचे लिखे हुए " लोगस्स" इत्यादि पाठ को बोलना चाहिये—

लोगस्स उज्जोअगरे,धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअलसिज्जंस वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु॥७॥

उक्त पाठ को पढ़कर मुहपत्ती की पडिलेहना कर के नीचे लिखे हुए "सुगुरुवन्दना" पाठ को दो बार बोलना चाहिये—

उक्त वाक्य को भक्तिपूर्वक बोलना चाहिये ।

इस के पीछे गुरुमुख से पच्चक्खाण कर के "इच्छामो अणुसट्ठिं" इस वाक्य को बोलना चाहिये ।

इस के पीछे "नवकारसी" से लेकर जो कोई पच्चक्खाण करना हो उसे करना चाहिये, पच्चक्खाण की विधि यह है कि—

नवकारसहियं मुट्ठिसहियं पच्चक्खाइ चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं वोसिरामि ॥ १ ॥

पीछे "णमो खमासमणाए, नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः" इस पाठ को बोलकर नीचे लिखे हुए "परसमयतिमिरतरणिं" अथवा "संसारदावा" इत्यादि दोनों पाठों में से किसी एक पाठ के प्रारम्भ की तीन गाथाओं को बोलना चाहिये—

परसमयतिमिरतरणिं, भवसागरवारितरणवरणिम् । रागपरागसमीरं, वन्दे देवं महावीरम् ॥ १ ॥ निरुद्धसंसारविहारकारिदुरन्तभावारिगणा विकामम् । निरन्तरं केवलिसत्तमा वो, भयावहं मोहभरं हरन्तु ॥ २ ॥ सन्देहकारिकुनयागमरूढगूढ-सम्मोहपङ्कहरणामलवारिपूरम्, संसारसागरसमुत्तरणोरुनावं, वीरागमं परमसिद्धिकरं नमामि ॥ ३ ॥

इस के बाद नमोत्थुणं कहना ।

परिमलभरलोमालीढलोलालिमाला, वरकमलनिवासे हारनीहारहासे, अविरलभवकारागारविच्छित्तिकारं, कुरु कमलकरे ! मे मङ्गलं देवि ! सारम् ॥४॥

- संसारदावानलदाहनीरं, संमोहधूलीहरणे समीरम्। मायारसादारणसारसीरं, नमामि वीरं गिरिसारधीरम् ॥१॥ भावावनामसुरदानवमानवेन, चूलाविलोलकमलावलिमालितानि। संपूरिताभिनतलोकसमीहितानि, कामं नमामि जिनराजपदानि तानि ॥२॥ बोधागाधं सुपदपदवीनीरपूराभिरामं, जीवाहिंसाविरललहरीसङ्गमागाहदेहम्। चूलावेलं गुरुगममणीसङ्कुलं दूरपारं, सारं वीरागमजलनिधिं सादरं साधु सेवे ॥३॥ आमूलालोलधूलीबहुलपरिमलालीढलोलालिमाला

झङ्कारारावसारामलदलकमलागारभूमीनिवासे। छायासम्भारसारे वरकमलकरे तारहाराभिरामे, वाणीसन्दोहदेहे भवविरहवरं देहि मे देवि ! सारम् ॥४॥

- इस के पश्चात् नीचे लिखे हुए "नमोत्थुणं" इत्यादि पाठ को बोलना चाहिये—

नमोत्थु णं अरिहंताणं भगवंताणं आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवरपुंडरीआणं पुरिसवरगंधहत्थीणं लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहिआणं लोगपईवाणं लोगपज्जोअगराणं अभ-

दयाणं चक्खुदयाण मग्गदयाणं सरणदयाणं बोहि-
याणं धम्मदयाणं धम्मदेसिआणं धम्मनायगाणं धम्म-
सारहीणं धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं अप्पडिहयवरनाण-
दंसणधराणं विअट्टछउमाणं जिणाणं जावयाणं तिन्नाणं
तारयाणं बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोअगाणं सव्वन्नूणं
सव्वदरिसीणं सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वाबाह-
मपुणरावित्तिसिद्धिगइनामधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जि-
णाणं जिअभयाणं. जे अ अईया सिद्धा, जे अ भविस्संति
णागए काले। संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि॥१॥

इस के पीछे खड़े हो कर नीचे लिखे हुए "अरिहंत चेइया-
णं" इत्यादि पाठ को बोलना चाहिये—

अरिहंतचेइआणं करेमि काउस्सग्गं ॥ १ ॥

इस के पीछे खड़े हो कर नीचे लिखे हुए "वंदणवत्तिआए
इत्यादि पाठ को बोलना चाहिये—

वंदणवत्तिआए पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए
सम्माणवत्तिआए बोहिलाभवत्तिआए निरुवसग्गवत्ति-
आए सद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए वड्
माणीए ठामि काउस्सग्गं ॥ १ ॥

इस के पश्चात् खड़े हुए ही नीचे लिखे हुए "अन्नत्थ उस
एणं" इत्यादि पाठ को बोलना चाहिये—

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छी

परिमलभरलोलालीढलोलालिमाला," वरकमल
निवासे हारनीहारहासे, अविरलभवकारागारविच्छित्ति-
कारं, कुरु कमलकरे ! मे मङ्गलं देवि ! सारम् ॥४॥

संसारदावानलदाहनीरं, संमोहधूलीहरणे समी-
रम् । मायारसादारणसारसीरं, नमामि वीरं गिरिसारधी-
रम् ॥१॥ भावावनामसुरदानवमानवेन, चूलाविलोल
कमलावलिमालितानि । संपूरिताभिनतलोकसमीहिता-
नि, कामं नमामि जिनराजपदानि तानि ॥२॥ बोधागा-
धं सुपदपदवीनीरपूराभिरामं, जीवाहिंसाविरललहरी-
सङ्गमागाहदेहम् । चूलावेलं गुरुगममणीसङ्कुलं दूर-
पारं, सारं वीरागमजलनिधिं सादरं साधु सेवे ॥ ३ ॥
आमूलालोलधूलीबहुलपरिमलालीढलोलालिमाला -
झङ्कारारावसारामलदलकमलागारभूमीनिवासे !
छायासम्भारसारे वरकमलकरे तारहाराभिरामे, वाणी-
सन्दोहदेहे भवविरहवरं देहि मे देवि ! सारम् ॥४॥

इस के पश्चात नीचे लिखा हुआ 'नमोत्थुणं' इत्यादि पाठ को
बोलना चाहिए -

नमोत्थु णं अरिहंताणं भगवंताणं आइगराणं तित्थ-
यराणं सयंसंबुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिस-
वरपुंडरीआणं पुरिसवरगंधहत्थीणं लोगुत्तमाणं लोगना-
हाणं लोगहिआणं लोगपईवाणं लोगपज्जोअगराणं अभ-

जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छा-ए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

उक्त पाठों को बोल कर एक नवकार का काउस्सग्ग करना चाहिये, एक श्रावक काउस्सग्ग पार कर "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः" उक्त वाक्य को कहकर नीचे लिखी हुई स्तुति (थुई) को बोले—

सिद्धं चक्कं चाहं वन्दे ॥ १ ॥

इस के पश्चात् काउस्सग्ग को पारना चाहिये, तथा इसी विधि को आगेकी तीन स्तुतियों में भी करनी चाहिये ।

इस के पीछे नीचे लिखे हुए "लोगस्स" इत्यादि पाठ को बोलना चाहिये—

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअलसिज्जंस वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे

मुणिसुव्ययं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पास तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

उक्त पाठ को बोल कर तथा "सव्वलोए अरिहंतचेइयाणं करेमि काउस्सग्गं" इस पाठ को बोलकर तथा "वंदणवत्तियाए" इत्यादि पाठ को बोलकर तथा "अन्नत्थ ऊससिएणं" इत्यादि पाठ को पढ़ कर एक नवकार का काउस्सग्ग करना चाहिये, इस के पश्चात् नीचे लिखी हुई दूसरी स्तुति (थुई) को बोलना चाहिये—

श्रीमत्प्रत्येकं पादौ वंदे ॥ २ ॥

इस के पश्चात् नीचे लिखे हुए "पुक्खरवरदीवड्ढे" इत्यादि पाठ को बोलना चाहिये-

पुक्खरवरदीवड्ढे, धायइसंडे अ जंबूदीवे अ । भरहेरवयविदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ॥ १ ॥ तमतिमिरपडलविद्धंसणस्स सुरगणनरिंदमहियस्स । सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडियमोहजालस्स ॥ २ ॥ जाईजरामरणसोगपणासणस्स, कल्लाणपुक्खलविसालसुहावहस्स को देवदाणवनरिंदगणच्चियस्स, धम्मस्स सारमुवलब्भ-

करे पमाय ॥ ३ ॥ सिद्धे भो पयओ णमो जिणमए नंदी सया संजमे, देव नागसुवन्नकिन्नरगणस्सब्भूअभावच्चिए । लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं तेल्लुक्कमच्चासुरं धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ धम्मुत्तरं वड्ढउ ॥४॥ सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं ॥

[illegible] हुए "वंदणवत्तियाए" इत्यादि
[illegible] पीछे पूर्व लिखे हुए "अन्न
[illegible] बोलना चाहिये, उसके
[illegible] का काउस्सग्ग करना
[illegible] स्तुति (थुई) को

[illegible] इति स्तवाः ॥ ३ ॥
[illegible] इत्यादि पा

[illegible] पारगयाणं परंपरगयाणं । लोअग्ग [illegible] सिद्धाणं ॥१॥ जो देवाणवि [illegible] नमंसंति, तं देवदेवमहिअं, सिरसा [illegible] नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स [illegible], तारेइ नरं व नारिं वा ॥३॥ [illegible] नाणं निसीहिआ जस्स [illegible] नमंसामि ॥४॥ चत्तारि

सारहीणं धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं अप्पडिहयवरनाण-दंसणधराणं विअट्टछउमाणं जिणाणं जावयाणं तिन्नाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोअगाणं सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्ति सिद्धिगइनामधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं जिअभयाणं जे अ अईया सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले। संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥१॥

॥ इति नमोत्थुणं सम्पूर्णं ॥

[illegible]

अथ श्रीसीमंधरजिन चैत्यवन्दन—

१। जय त्रिभुवन आदिनाथ, पंचम गति गामी। जय जय करुणा शांत दांत, भविजन हितकामी। जय जय इन्द्र नरिंद वृंद, सेवित सिर नामी। जय जय अतिशय अनन्त, अंतरजामी ॥१॥ पुण्य विदेह विराजमान श्रीसीमंधर स्वाम। त्रिकरण-शुद्ध त्रिहु कालसें, नित प्रति करुं प्रणाम ॥ २ ॥

जं किंचि नामतित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए। जाइं जिणबिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ॥१॥

नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥१॥ आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं ॥२॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं,

हाणं, पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं ॥३॥
लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं,
लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अभयदयाणं चक्खुदयाणं
मग्गदयाणं सरणदयाणं बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं
धम्मदेसिआणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचा-
उरंतचक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥ अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं
विअट्टछउमाणं ॥ ७ ॥ जिणाणं जावयाणं तिन्नाणं तार
याणं बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥ सव्वन्नूणं
सव्वदरिसीणं सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वाबाह
मपुणरावित्ति सिद्धिगइनामधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो
जिणाणं जिअभयाणं ॥ ९ ॥ जे अ अईया सिद्धा, जे
अ भविस्संति णागए काले । संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे
तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥

जावंति चेइयाइं उड्ढे अ अहे अ तिरिलोए अ ।
सव्वाइं ताइं वंदे इह संतो तत्थ संताइं ॥ १ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसी
हिआए मत्थएण वंदामि ।

जावन्त केवि साहू भरहेरवयमहाविदेहे अ । सव्वेसि
तेसि पणओ तिविहेण तिदंडविरयाणं ॥ १ ॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

सेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥ २ ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

ए॰ नवकार का काउस्सग्ग करके पार के नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः कहकर नीचे मुजब स्तुति कहे—

महोमंडल पुण्यसौधव-देव जगत्गुरुं देवमहा-धाम । महानंदलच्छा बहुबुद्धिगम्यं सुसेवामि सोम-पदं निस्पृहाणं ॥ १ ॥

अब श्रीसिद्धाचलजी का चैत्यवंदन करना

श्रीसिद्धाचलजी का चैत्यवंदन ।

जय जय नाभि नरिंद नंद, सिद्धाचल मंडण । जय जय प्रथम जिणंद चंद भव दुःख विहंडण । जय जय साधु सुरिंद विंद, वंदिय परमेसर । जय जय जगदानंद कंद, श्रीरिषभ जिणेसर । अमृतसम जिनधर्मनो ए, दायक जगमें जाण । तुझ पद पंकज प्रीति धर, निशि

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसी-
ाए मत्थएण वंदामि ।
जावन्त केवि साहू भरहेरवयमहाविदेहे अ। सव्वे-
सि तेसिं पणओ तिविहेण तिदंडविरयाणं ॥१॥
नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

॥ श्री सिद्धाचल स्तवनम् ॥

सिद्धाचल गिरि भेट्यां रे धन्य भाग्य हमारां ॥
विमलाचल गिरि ० ॥ एह गिरिवरनो महिमा महोटो.
हेतां न आवे पारा । रायण रूंख समोसर्या स्वामी,
र्वि नवाणुं वारा रे ॥ ध ० ॥ १ ॥ मूलनायक श्री आदि
जिनेश्वर, चौमुख प्रतिमा चारा । अष्ट द्रव्यसें पूजो भावें,
समकित मूल आधारा रे ॥ ध ० ॥ २ ॥ दूर देशथी हूं
हां आयो, श्रवण सुणी गुण तहारा । पतित उद्धारण
बिरुद तुमारो, एह तीरथ जग सारा रे ॥ ध ० ॥ ३ ॥
भाव भक्तिसें प्रभु गुण गावे, अपना जन्म सुधारा ।
यात्रा करि भविजन शुभ भावें, नरक तिर्यंच गति वारा
॥ ध ० ॥ ४ ॥ संवत अढार त्र्यासी मास आषाढे,
वदि आठम सोमवारा । प्रभुके चरण प्रतापसे संघमें,
खमारतन प्रभु प्यारा रे ॥ ध ० ॥ ५ ॥
जय वीयराय जगगुरु, होउ ममं तुह पभावओ भय-
वं। भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिया इट्ठफलसिद्धी ॥ १ ॥

अथ सन्ध्यासामायिक-विधिः ।

पिछले प्रहर धर्मशाला में आकर वहां उसका प्रमार्जन कर वस्त्र आदि की पडिलेहणा करनी चाहिए। यदि देर हो गई हो तो केवल दृष्टि प्रतिलेखना करलेनी चाहिए, इस के पीछे यदि गुरुजी विद्यमान हों तो उन के सामने (यदि वे न हों तो स्थापनाचार्य के सामने) या घर भूमि का प्रमार्जन कर आसन की बाये पास में खमासमण देना चाहिए। यदि स्थापनाचार्य के सामने सामायिक लेनी पड़े तो तीन वार नवकार मन्त्र को कहकर स्थापनाचार्य के प्रतिलेखन के तेरह बोलों का चिन्तन करते हुए स्थापनाचार्य की स्थापना करलेनी चाहिए, इस के पीछे खमासमण देकर नीचे लिखे हुए पाठ को बोलना चाहिये -

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक मुहपत्ती पडिलेहुं? इच्छं।

इस के पीछे फिर खमासमण दे कर मुहपत्ती का पडिलेहन करे, फिर एक खमासमण को देकर नीचे लिखे हुए पाठ को बोले—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक संदिसाउं? इच्छं। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक ठाउं? इच्छं।

इस के पीछे फिर एक खमासमण दे कर अर्द्धावनत हो कर तीन वार नवकार मन्त्र का गुणना कर के नीचे लिखे हुए पाठ को बोले—

लोगविरुद्धच्चाओ, गुरुजणपूआ परत्थकरणं च। सुहगुरु-
जोगो तव्वयणसेवणा आभवमखंडा ॥२॥

अरिहंत चेइआणं करेमि काउस्सग्गं, वंदणवत्ति
आए पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्ति
आए बोहिलाभवत्तिआए निरुवसग्गवत्तिआए ॥१॥
सद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए
ठामि काउस्सग्गं ॥२॥

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं
जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छा-
ए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सु-
हुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो
अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं
भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मो-
णेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥१॥

[illegible]
[illegible]

शत्रुंजयगिरि नमिये, ऋषभदेव पुंडरीक। शुभ [illegible]
घनो महिमा, सुणि गुरु मुख निर्धार ॥ शुद्ध मन [illegible]
पवासे, विविध धर्म धरंत। कहिये जिन आगम [illegible]
हारी। पावन सर्वदा ॥१॥

अथ सन्ध्यासामायिक-विधिः ।

पिछले प्रहर धर्मशाला में आकर वहां उसका प्रमार्जन कर वस्त्र आदि की पडिलेहणा करनी चाहिए। यदि देर हो गई हो तो केवल दृष्टि प्रतिलेखना करलेनी चाहिए, इस के पीछे यदि गुरुजी विद्यमान हों तो उन के सामने (यदि वे न हों तो स्थापनाचार्य के सामने) आ कर भूमि का प्रमार्जन कर आसन को बायें पास में रखकर खमासमण देना चाहिए। यदि स्थापनाचार्य के सामने सामायिक लेनी पडे तो तीन बार नवकार मन्त्रको कहकर स्थापनाचार्यके प्रतिलेखन के तेरह बोलों का चिन्तन करते हुए स्थापनाचार्य की स्थापना करलेनी चाहिए, इस के पीछे खमासमण देकर नीचे लिखे हुए पाठको बोलना चाहिये -

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक मुहपत्ती पडिलेहुं? इच्छं ।

इस के पीछे फिर खमासमण दे कर मुहपत्ती का पडिलेहन करे, फिर एक खमासमण को देकर नीचे लिखे हुए पाठ को बोले—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक संदिसाउं? इच्छं । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक ठाउं? इच्छं ।

इस के पीछे फिर एक खमासमण दे कर खड़ा होकर तीन बार नवकार मन्त्र का गुणना कर के नीचे लिखे हुए पाठ को बोले--

लोगविरुद्धचाओ, गुरुजणपूआ परत्थकरणं च। सुहगुरुजोगो तव्वयणसेवणा आभवमखंडा ॥२॥

अरिहंत चेइआणं करेमि काउस्सग्गं, वंदणवत्तिआए पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए बोहिलाभवत्तिआए निरुवसग्गवत्तिआए ॥१॥ सद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥ २ ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥१॥

एक नवकार का काउस्सग्ग करके नमोऽर्हत् कहकर गाथा कहे ... सिद्धाचल ॥ की स्तुति कहे

शत्रुंजयगिरि नमिये, ऋषभदेव पुंडरीक। शुभ तेनो महिमा, सुणि गुरु मुख निरधीक ॥ शुद्ध मन उपवासे, विविध चैत्य वंदनीक। करिये जिन आगलि, वचन अलीक ॥१॥



अथ सन्ध्यासामायिक-विधिः ।

जिसने प्रथम धर्मशाला में आकर वहां उसका प्रमार्जन कर वस्त्र आदि की पडिलेहना करनी चाहिए। यदि देर हो गई हो तो केवल दृष्टि प्रतिलेखना करलेनी चाहिए, इस के पीछे यदि गुरुजी विद्यमान हों तो उन के सामने (यदि वे न हों तो स्थापनाचार्य के सामने) खड़ा कर भूमि का प्रमार्जन कर आसन को बायें पास में रखकर खमासमण देना चाहिए। यदि स्थापनाचार्य के सामने सामायिक लेनी पड़े तो नीचे एक नवकार मन्त्रको कहकर स्थापनाचार्य की प्रतिलेखना के तेरह बोलों का चिन्तन करते हुए स्थापनाचार्य की स्थापना करलेनी चाहिए, इस के पीछे खमासमण देकर नीचे लिखे हुए पाठको बोलना चाहिये

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक मुहप-त्ती पडिलेहुं? इच्छं।

इस के पीछे फिर खमासमण देकर मुंहपत्ती का पडिलेहन करे, फिर एक खमासमण को देकर नीचे लिखे हुए पाठ को बोले—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक संदि-साहुं? इच्छं। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामा-यिक ठाउं? इच्छं।

इस के पीछे फिर एक खमासमण देकर अर्द्धावनत हो कर तीन बार नवकार मन्त्र का गुणना कर के नीचे लिखे हुए पाठको बोले--

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! पसाय करी साम
यिक दंडक उचरावो जी?

इस के पीछे नीचे लिखे हुए "करेमि भंते" सामायिक
को गुरुवचन का अनुभाषण करते हुए तीन वार कहना चाहि

करेमि भंते! सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि
जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं व
याए काएणं, न करेमि न कारवेमि तस्स भंते! पडिक्क
मामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

फिर एक खमासमण देकर नीचे लिखे हुए पाठ को बोल
चाहिये--

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! इरियावहियं पडि
क्कमामि । इच्छं । इच्छामि पडिक्कमिउं । इरियावहिया
विराहणाए गमणागमणे पाणक्कमणे बीयक्कमणे हरिय
क्कमणे ओसा-उत्तिंग-पणग-दग-मट्टी-मक्कडा-संताणा
संकमणे, जे मे जीवा विराहिया एगिंदिया बेइंदि
तेइंदिया चउरिंदिया पंचिंदिया अभिहया वत्ति
लेसिया संघाइया संघट्टिया परियाविया किलामिया उ
द्दविया ठाणाउट्ठाणं संकामिया जीवियाओ ववरोवि
तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥२॥

"तस्स उत्तरी" का पाठ को बोलना चाहिये—

तस्स उत्तरीकरणेणं पायच्छित्तकरणेणं विसोही-
करणेणं विसल्लीकरणेणं पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए
ठामि काउस्सग्गं ॥१॥

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छी-
एणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पि-
त्तमुच्छाए । सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसं-
चालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं । एवमाइएहिं आगा-
रेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव
अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं
ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥२॥

इसके पीछे एक "लोगस्स" का अथवा चार नवकार का
काउस्सग्ग करना चाहिये, फिर "नमो अरिहंताणं" कह कर काउ-
स्सग्ग को पारना चाहिये, इस के पश्चात् प्रगट रीति से नीचे लिखे
हुए "लोगस्स का पाठ को कहना चाहिये

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहं-
ते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं
च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं,
जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं,
सीअलसिज्जंस वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं,
धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे

सीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालियाए, सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥१॥

इस के पीछे एक खमासमण दे कर नीचे लिखे हुए पाठ को बोलना चाहिये

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सज्झाय संदिसाउं? इच्छं ॥

फिर दूसरा खमासमण देकर

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सज्झाय करूं? इच्छं ॥

इस के पीछे नवकार देकर आठ नवकार का गुणन करना चाहिये, फिर एक खमासमण दे कर नीचे लिखे हुए पाठ को बोलना चाहिये

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! बेसणे संदिसाउं? इच्छं ॥

फिर दूसरा खमासमण देकर

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! बेसणे ठाउं? इच्छं ॥

यदि शीत आदि के कारण वस्त्र ओढ़ने आदि की आवश्यकता हो तो एक खमासमण देकर—

मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

इसके बाद नीचे बैठ कर चउविहाहार उपवास कीया हो तो मुहपत्ती नहीं पडिलेहना और वांदणा भी नहीं देना, पच्चक्खाण भी किया गया हो तो फीर नहीं करना। यदि 'तिविहाहार उपवास' हो तो मुहपत्ती का पडिलेहण करना, किन्तु वांदणा नहीं देना चाहिये और यदि 'आयंबिल एकाशन का भोजन किया हो तो मुहपत्ती का पडिलेहण करना और दो वार "सुगुरुवांदणा' देनी चाहिये और दूसरी वार वंदणामें 'आवस्सियाए' पद नहीं कहना चाहिये-

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि। अहोकायं कायसंफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे, दिवसो वइक्कंतो, जत्ता भे जवणिज्जं च भे। खामेमि खमासमणो दिवसियं वइक्कमं आवस्सियाए पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए ति

णेस! पास! थंभणयपुरट्ठिअ ॥१॥ नइ ममरंत लहंति फत्ति वरपुत्तकलत्तइ, धण्णसुवण्णहिरण्णपुण्ण जण भुंजइ रज्जइ। पिक्खइ मुक्ख असंखसुक्ख तुह पास पसाइण, इअ तिहुअणवरकप्परुक्ख सुक्खइ कुण मह जिण ॥२॥ जरजज्जर परिजुण्णकण्ण नट्ठुट्ठ सुकुट्ठिण, चक्खुक्खीण खएण खुण्ण नर सल्लिय सूलिण। तुह जिण सरणरसायणेण लहु हुंति पुणण्णव, जयधन्नंतरि पास मह वि तुह रोगहरो भव ॥३॥ विज्जाजोइसमंत-तंतसिद्धिउ अपयत्तिण, भुवणऽब्भुउ अट्ठविह सिद्धि सिज्झहि तुह नामिण। तुह नामिण अपवित्तओ वि जण होइ पवित्तउ, तं तिहुअणकल्लाणकोस तुह पास निरुत्तउ ॥४॥ खुद्दपउत्तइ मंततंतजंताइ विसुत्तइ, च-रथिरगरलगहुग्गखग्गरिउवग्ग विगंजइ। दुत्थियसत्थ-अणत्थघत्थ नित्थारइ दय करि, दुरियइ हरउ स पास देउ दुरियकरिकेसरि ॥५॥

इसके पश्चात् "जयतिहुअण" की नीचे लिखी हुई अन्तिम दो गाथाओं को पढ़ना चाहिये *

जइ तुह रूविण किणवि पेअपाइण वेलवियउ, तउ जाणउ जिण पास तुम्हि हउं अंगीकरिअउ। इय मह

* [illegible] है।

इच्छिउ जं न होइ सा तुह ओहावणु, रक्खंत तह निय- किचिणेय जुज्जइ अवहीरणु ॥२६॥ एह महारिय जत्त- देव इहु न्हवणमहूसउ, जं अणलियगुणगहण तुम्ह मुणिजणअणिसिद्धउ । इस मह पसिहसुपासनाह थंभणयपुरट्ठिअ, इय मुणिवरू सिरिअभयदेव विण्ण- बइ आणिंदिअ ॥३०॥

इसके पीछे "जयमहायस" को बोलना चाहिये---

जय महायस जय महायस जय महाभाग ज चिंतियसुहफलय, जय समत्थपरमत्थ जाणय जय ज गुरुगरिम गुरु। जय दुहित्त-सत्ताण ताणय थंभणयट्ठि पास जिण, भवियह भीमभवत्थु भयअवं णंताणंत गुण तुज्झ तिसंझ नमोत्थु ॥१॥

इसके पीछे नमोत्थुणं को बोलना चाहिये---

नमोत्थु णं अरिहंताणं भगवंताणं॥ १ ॥ आइगरा तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरि सीहाणं पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं॥ ३ लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अभयदयाणं, चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं बोहिदयाणं॥ ५ ॥ धम्मदया धम्मदेसिआणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरच

भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मो णेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

इस के पीछे एक नवकार का काउस्सग्ग करना चाहिये, प मनुष्य काउस्सग्ग को पार कर- " नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्व साधुभ्यः " इस वाक्य को कह कर नीचे लिखी स्तुति को बोले-

श्री शान्तिनाथजी, साता कारक देव । मनमोहन स्वामी, अनुपम मूरति सेव ॥ मुझ रोम हुलसिया, वं नूँ प्रणमूँ नाथ । शुद्ध समकित माँगूँ, जोड़ प्रभु हाथ ॥ १ ॥

उक्त स्तुति को सुन के पीछे अन्य लोग काउस्सग्ग को पारे इस के पीछे "लोगस्स" को बोलना चाहिये—

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरि हंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सु पासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वं मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीण-जर-मरणा । चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदियमहिया, जे ए लोगस्स

उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

इस के पीछे ''सव्वलोए अरिहंतचेइयाणं करेमि काउस्सग्गं'' कहके 'वंदणवत्तिआए' बोलना चाहिये—

वंदणवत्तिआए पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए बोहिलाभवत्तिआए निरुवसग्गवत्तिआए सद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥ १ ॥

इस के पीछे ''अन्नत्थ'' को बोलना चाहिए---

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

इस के पीछे एक नवकार का काउस्सग्ग करके पूर्व के समान एक मनुष्य पढ़िके काउस्सग्ग को पार कर नीचे लिखी हुई

वंदणवत्तिआए पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए बोहिलाभवत्तिआए निरुवसग्गवत्तिआए सद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥ १ ॥

इस के पीछे " अन्नत्थ " को बोलना चाहिए—

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

एक नवकारका काउस्सग्ग करे उसे पार कर एक मनुष्य को नीचे लिखी हुई तीसरी स्तुति को बोलना चाहिये—

वर आगम जिनवर भाखे अर्थ विचार , श्रीगणधर गुरु ते गूंथ्या गुण हितकार । है श्रीसद्गु सकल को उत्कृष्टो आधार , नित नित भवि सेवो श्रुतसागर सुखकार ॥ ३ ॥

इस के पीछे " सिद्धाणं बुद्धाणं " को बोलना चाहिए—

सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं । लोअग्गमुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥१॥ जो देवा-

णवि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति । तं देवदेवमहियं, सिरसा वंदे महावीरं ॥ २॥ इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स, संसारसागराओ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥ ३॥ उज्जित-सेल-सिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स । तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं नमंसामि ॥ ४ ॥ चत्तारि अट्ठ दस दो, य वंदिया जिणवरा चउव्वीसं। परमट्ठनिट्ठिअट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥५॥

इस के पीछे " वेआवच्चगराणं " को बोलना चाहिये—

वेआवच्चगराणं संतिगराणं सम्मद्दिट्ठिसमाहिगराणं करेमि काउस्सग्गं ॥ १ ॥

इस के पीछे " अन्नत्थ ऊससिएणं" को बोलना चाहिये,

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए । सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं । एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

एक नवकार का काउस्सग्ग करे पीछे एक आदमी काउस्सग्ग को पारकर " नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः " इस बात

को कह कर नीचे लिखी हुई चौथी स्तुति कहे और शेष सद्गुरु स्तुति को सुन कर पीछे काउस्सग्ग को पारे—

श्री जिन शासनदेवी सकल मनोरथ पूर, कर मङ्गल माला मय सङ्कट को चूर । सुख पूरणा स्वामी खरतरगच्छ सुखखान, इन सब को वन्दे क्षेमसागर शुभध्यान ॥ ४ ॥

इस के पीछे बैठ कर "नमोत्थुणं" बोलना चाहिये—

नमोत्थु णं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं सरणदयाणं बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं धम्मदेसिआणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥ अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं विअट्टछउमाणं ॥७॥ जिणाणं जावयाणं तिन्नाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोअगाणं ॥८॥ सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्ति सिद्धिगइनामधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं जिअभयाणं ॥ ९ ॥ जे अ अइ-

ण्हं सत्तमाणं पंचण्हमणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं
ण्हं सिक्खावयाणं बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं
डियं जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ १ ॥

इस के पीछे "तस्स उत्तरी को" बोलना चाहिये—

तस्स उत्तरीकरणेणं पायच्छित्तकरणेणं विसोही-
करणेणं विसल्लीकरणेणं पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए
मि काउस्सग्गं ॥१॥

इस के बाद "अन्नत्थ ऊससिएणं" का बोलना चाहिये—

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छी-
एणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पि-
त्तमुच्छाए । सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसं-
चालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं । एवमाइएहिं आगा-
रेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव
अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं
ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥१॥

इस के पीछे एक नवकार का काउस्सग्ग करना चाहिये । फिर "नमो अरिहंताणं" कह कर काउस्सग्ग को पार कर प्रगट "लोगस्स" को बोलना चाहिये-

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहं-
ते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं

च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । . .
जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं
सीअलसिज्जंस वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं
धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे
मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह
वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला
पहीणजरमरणा । चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे
पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स
उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं
दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पया-
सयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

इस के पीछे संडासा का प्रमार्जन कर बैठ कर तीजे आवश्य-
क की मुहपत्ती का पडिलेहन करना चाहिये, इस के पश्चात् नीचे
लिखे हुए पाठ से 'सुगुरु वन्दना' करना चाहिये—

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसी-
हिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि। अहोकायं
कायसंफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं
बहुसुभेण भे, दिवसो वइक्कंतो, जत्ता भे जवणिज्जं च भे,
खामेमि खमासमणो देवसियं वइक्कमं आवस्सियाए ।
पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए ति-
त्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए

कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्व-कालियाए, सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥१॥

यह पाठ दो बार बोलना। इस में दूसरी बार 'आवस्सियाए' पद नहीं बोलना चाहिये।

इस के पीछे आसन में ही बैठ कर नीचे लिखे हुए पाठ को बोलना चाहिये—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! देवसिअं आलोउं? इच्छं। आलोएमि ॥ १ ॥

इस के पीछे "जो मे देवसिओ" को बोलना चाहिये -

जो मे देवसिओ अइआरो कओ काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दु-ज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छियव्वो अ-सावगपाउग्गो नाणे तह दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सा-माइए। तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं पंचण्हमणु-व्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं सिक्खावयाणं बार-सविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडियं जं विराहियं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ १ ॥

इसके पीछे नीचे लिखे हुए "चाउला चार प्रहर" इत्यादि पाठ को बोलना चाहिये—

अजुणा चार प्रहर दिन में मैंने जो ...
सात लाख पृथिवीकाय, सात लाख अप्काय, सा
लाख तेउकाय, सात लाख वायुकाय, दश लाख प्रत्ये
क वनस्पतिकाय, चौदह लाख साधारण वनस्पतिकाय,
दोय लाख बेइन्द्रिय, दोय लाख तेइन्द्रिय, दोय लाख
चौरिंद्रिय, चार लाख देवता, चार लाख नारकी, चार लाख
तिर्यञ्चपञ्चेन्द्रिय चौदह लाख मनुष्य, एवं चार गति
के चौरसी लाख जीवायोनि में मेरे जीव ने जे कों
जीव हण्यो होय हणाव्यो होय हणतां प्रत्ये भलो जा
ण्यो होय ते सव्वे हूँ मने वचने काया ये करी तस्स
मिच्छामि दुक्कडं ॥१॥

इस के पीछे नीचे लिखे पाठ का बोलना चाहिये

प्राणातिपात मृषावाद अदत्तादान मैथुन परि
ग्रह क्रोध मान माया लोभ राग द्वेष कलह अभ्या
ख्यान पैशुन्य रति अरति परपरिवाद मायामृषावा
मिथ्यात्वशल्य, ये अठारे पापस्थानक सेव्या होय, से
वाव्या होय सेवतां प्रत्ये भला जाण्या होय ते सव्वे
मन वचन काया ये करी तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ १

इस के पीछे नीचे लिखे हुए पाठ को बोलना चाहिये

ज्ञान दर्शन चारित्र पाटी पोथी ठवणी कवली न
उकारवाली देव गुरु धर्म की आशातना करी होय, प

[illegible] राजकथा देशकथा स्त्रीकथा भक्तकथा [illegible] कही होय, [illegible] पाप पर- [illegible] होय, [illegible] होय, [illegible] होय [illegible] दिन अतिचार [illegible] पडिक्कमणा में [illegible] तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ १ ॥

[illegible]

सव्वस्सवि देवसिय दुच्चिन्तिय दुब्भासिय दुच्चिट्ठिय इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इच्छं । तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ २ ॥

[illegible]

भगवन् ! सुद्ध भणु ? इच्छं ।

[illegible] बोलना चाहिये—

करेमि भंते ! सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि जाव नियमं पज्जुवासामि दुविहं तिविहेणं मणेणं वा- याए काएणं न करेमि न कारवेमि तस्स भंते ! पडिक- मामि निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

अजुणा चार प्रहर दिन में मैंने जो विराध-
सात लाख पृथिवीकाय, सात लाख अप्काय,
लाख तेउकाय,सात लाख वायुकाय, दश लाख प्रत्ये-
क वनस्पतिकाय,चौदह लाख साधारण वनस्पतिकाय,
दोय लाख बेइन्द्रिय, दोय लाख तेइन्द्रिय, दोय लाख
चौरिंद्रिय,चार लाख देवता,चार लाख नारकी,चार लाख
तिर्यञ्चपञ्चेन्द्रिय चौदह लाख मनुष्य, एवं चार गति
के चौरसी लाख जीवायोनि में मेरे जीव ने जे कोई
जीव हण्यो होय हणाव्यो होय हणतां प्रत्ये भलो जा-
ण्यो होय ते सब्वे हूँ मने वचने काया यें करी तस्स
मिच्छामि दुक्कडं ॥१॥

इस के पीछे नीचे लिखे पाठ का बोलना चाहिये-

प्राणातिपात मृषावाद अदत्तादान मैथुन परि-
ग्रह क्रोध मान माया लोभ राग द्वेष कलह अभ्या-
ख्यान पैशुन्य रति अरति परपरिवाद मायामृषावाद
मिथ्यात्वशल्य,ये अठारे पापस्थानक सेव्या होय,सेव-
राव्या होय सेवतां प्रत्ये भला जाण्या होय ते सब्वे हूँ
मन वचन काया यें करी तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ १ ॥

इस के पीछे नीचे लिखे हुए पाठ को बोलना चाहिये—

ज्ञान दर्शन चारित्र पाटी पोथी ठवणी कवली नव-
कारवाली देव गुरु धर्म की आशातना करी होय, पनरे

तह संथवो कुलिंगीसु । सम्मत्तस्सइआरे, पडिक्कमे दे-
वसिअं सव्वं ॥ ६ ॥ छक्कायसमारंभे, पयणे अ पयावणे
अ जे दोसा । अत्तट्ठा य परट्ठा, उभयट्ठा चेव तं निंदे
॥ ७ ॥ पंचण्हमणुव्वयाणं, गुणव्वयाणं च तिण्हमइ-
आरे । सिक्खाणं च चउण्हं, पडिक्कमे देवसिअं सव्वं
॥ ८ ॥ पढमे अणुव्वयंमि, थूलगपाणाइवायविरईओ ।
आपरियमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ९ ॥ वह
छविच्छेए, अइभारे भत्तपाणवुच्छेए । पढमवयस्स-
इआरे, पडिक्कमे देवसिअं सव्वं ॥ १० ॥ बीए अणुव्वयं-
, परिथूलगअलियवयणविरईओ । आयरिअमप्प-
, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ११ ॥ सहसारहस्स दारे,
अ कूडलेहे अ । बीयवयस्सइआरे, पडिक्कमे
सव्वं ॥ १२ ॥ तइए अणुव्वयंमि, थूलगपरद-
विरईओ । आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्प-
॥ १३ ॥ तेनाहडप्पओगे, तप्पडिरूवे विरुद्धग-
। कूडतुलकूडमाणे, पडिक्कमे देवसिअं सव्वं ॥
चउत्थे अणुव्वयंमि, निच्चं परदारगमणविरईओ ।
, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १४ ॥ अप-
इत्तर, अणंगविवाह तिव्वअणुरागे । चउ-
तइआरे, पडिक्कमे देवसिअं सव्वं ॥ १५ ॥ इत्तो
ए पंचमंमि आयरिअमप्पसत्थंमि । परिमाणप-

इस के पीछे "इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे देवसिओ" को बोलना चाहिये—

इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे देवसिओ अइआरो कओ काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छियव्वो असावगपाउग्गो नाणे तह दंसणे चरित्ता चरित्ते सुए सामाइए तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं पंचण्हमणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं सिक्खावयाणं बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ १ ॥

इसके पीछे नीचे लिखे हुए 'वंदितुसूत्र' पाठको बोलना चाहिये—

वंदित्तु सव्वसिद्धे, धम्मायरिए अ सव्वसाहू अ। इच्छामि पडिक्कमिउं, सावगधम्माइआरस्स ॥ १ ॥ जो मे वयाइआरो, नाणे तह दंसणे चरित्ते अ। सुहुमो अ बायरो वा, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ २ ॥ दुविहे परिग्गहंमि, सावज्जे बहुविहे अ आरंभे। कारावणे अ करणे, पडिक्कमे देवसिअं सव्वं ॥ ३ ॥ जं बद्धमिंदिएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं। रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥ आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणाभोगे। अभिओगे अ निओगे, पडिक्कमे देवसिअं सव्वं ॥ ५ ॥ संका कंखविगिच्छा, पसंस

तह संपओ कुलिंगीसु । सम्मत्तस्सइआरे, पडिक्कमे देवसिअं सव्वं ॥ ६ ॥ छक्कायसमारंभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा । अत्तट्ठा य परट्ठा, उभयट्ठा चेव तं निंदे ॥ ७ ॥ पंचण्हमणुव्वयाणं, गुणव्वयाणं च तिण्हमइआरे । सिक्खाणं च चउण्हं, पडिक्कमे देवसिअं सव्वं ॥ ८ ॥ पढमे अणुव्वयंमि, थूलगपाणाइवायविरईओ । आयरियमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ९ ॥ वह बंधछविच्छेए, अइभारे भत्तपाणवुच्छेए । पढमवयस्सइआरे, पडिक्कमे देवसिअं सव्वं ॥ १० ॥ बीए अणुव्वयंमि, परिथूलगअलियवयणविरईओ । आयरियमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ११ ॥ सहसारहस्स दारे, मोसुवएसे अ कूडलेहे अ । बीयवयस्सइआरे, पडिक्कमे देवसिअं सव्वं ॥ १२ ॥ तइए अणुव्वयंमि, थूलगपरदव्वहरणविरईओ । आयरियमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १३ ॥ तेनाहडप्पओगे, तप्पडिरूवे विरुद्धगमणे अ । कूडतुलकूडमाणे, पडिक्कमे देवसिअं सव्वं ॥ १४ ॥ चउत्थे अणुव्वयंमि, निच्चं परदारगमणविरईओ । आयरियमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १५ ॥ अपरिग्गहिआ इत्तर, अणंगविवाह तिव्वअणुरागे । चउत्थवयस्सइआरे, पडिक्कमे देवसिअं सव्वं ॥ १६ ॥ इत्तो अणुव्वए पंचमंमि आयरियमप्पसत्थंमि । परिमाणप-

विच्छेए, इत्थ पमाय पसंगणं ॥ १७ ॥ धणधन्नखित्तव
त्थू, रुप्पसुवन्ने अ कु[illegible]विअपरिमाणे । दुपए चउप्पयंमि
य, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ १८ ॥ गमणस्सउ परिमाणे,
दिसासु उड्ढं अहे अ तिरिअं च । वुड्ढिसइअंतरद्धा,
पढमंमि गुणव्वए निंद[illegible] ॥ १९ ॥ मज्जंमि अ मंसंमि अ,
पुप्फे अ फले अ [illegible] [illegible] [illegible]वभोग परीभोगे, बी
यंमि गुणव्वए निंदे [illegible] ॥ २० ॥ [illegible] [illegible]ले पडिक्कमे, अपोलि
दुप्पोलिअं च आहार [illegible] [illegible]सहिअभक्खणया, पडि
क्कमे देवसिअं सव्वं ॥ २१ ॥ इंगा[illegible] [illegible] वणसाडी, भाडीफो
डी सुवज्जए कम्मं । [illegible] [illegible] [illegible]दंतलक्खरसकेसवि
सविसय ॥ २२ ॥ [illegible] [illegible] [illegible]दुग्गा कम्मं निल्लंछ
ण दवदाणं । सरदहतलाय[illegible] [illegible] असइपोसं च वज्जि
॥ २३ ॥ सत्थग्गि मुसल[illegible] [illegible] [illegible] तणकट्ठे मंतमूलभेसज्जे
दिन्ने दवा[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]स । सव्वं ॥ २४ ॥ ण्हा
णुव्वट्टणवन्नग विलेवणे [illegible] [illegible] [illegible]। वत्थासण आ
भरणे, पडिक्कमे देसि[illegible] [illegible] ॥ २५ ॥ कंदप्पे कुक्कु
इए, मोहरि अहिगरण [illegible] [illegible]अइरित्ते । दंडंमि अण
ट्ठाए, तइअंमि गुणव्वए [illegible] [illegible] ॥ [illegible] ॥ तिविहे दुप्पणि
हाणे, अणवट्ठाणे तहा सइ[illegible] [illegible] सामाइयवितहकए
पढमे सिक्खावए निंदे [illegible] [illegible]आणवणे पेसवणे, स
द्दे अ पुग्गलक्खेवे । देसाव[illegible] [illegible]मि, बीए सिक्खा

वए निंदे ॥ २८ ॥ संथारुच्चारविही-पमाय तह चेव भोयणाभोए। पोसहविहिविवरीए, तइए सिक्खावए निंदे ॥ २९ ॥ सच्चित्ते निक्खिवणे, पिहिणे-ववएस-मच्छरे चेव। कालाइक्कमदाणे, चउत्थे सिक्खावए निंदे ॥ ३० ॥ सुहिएसु अ दुहिएसु अ, जा मे अस्संजएसु अणुकंपा। रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३१ ॥ साहूसु संविभागो, न कओ तवचरणकरणजुत्तेसु। संते फासुअदाणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३२ ॥ इहलोए परलोए, जीविअमरणे अ आसंसपओगे। पंचविहो अइआरो, मा मज्झ हुज्ज मरणंते ॥ ३३ ॥ काएण काइअस्स, पडिक्कमे वाइअस्स वायाए। मणसा माणसिअस्स, सव्वस्स वयाइआरस्स ॥ ३४ ॥ वंदणवयसिक्खागारवेसु सन्नाकसायदंडेसु। गुत्तीसु अ समिईसु अ, जो अइआरो अ तं निंदे ॥ ३५ ॥ सम्मद्दिट्ठी जीवो, जइ वि हु पावं समायरइ किंचि। अप्पो सि होइ बंधो, जेण न निद्धंधसं कुणइ ॥ ३६ ॥ तं पि हु सपडिक्कमणं, सप्परिआवं सउत्तरगुणं च। खिप्पं उवसामेइ, वाहिव्व सुसिक्खिओ विज्जो ॥ ३७ ॥ जहा विसं कुट्ठगयं, मंतमूलविसारया। विज्जा हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निव्विसं ॥ ३८ ॥ एवं अट्ठविहं कम्मं, रागदोससमज्जिअं।

आलोअंतो अ निंदंतो, तिन्नि इणाइ गुमाइओ ॥३९
कयपावोवि मणुस्सो, आलोइअ निंदिय गुरुसगासे
होइ अइरेगलहुओ, ओहरिअभरुव्व भारवहो ॥४०
आवस्सएण एएण सावओ जइ वि बहुरओ होइ। दु
क्खाणमंतकिरिअं, काही अचिरेण कालेण ॥ ४१
आलोअणा बहुविहा, न य संभरिआ पडिक्कमणका
। मूलगुण उत्तरगुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४२
इस के पश्चात् खड़े हो कर " वंदित्तु " सूत्र का नी
लिखा हुआ अवशिष्ट पाठ बोलना चाहिए - -
तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स। अब्भुट्ठिओमि आरा
णाए, विरओमि विराहणाए। तिविहेण पडिक्कंतो, वंदा
जिणे चउव्वीसं ॥ ४३ ॥ जावंति चेइआइं, उड्ढे
अहे अ तिरियलोए अ। सव्वाइं ताइं वंदे, इह सं
तत्थ संताइं ॥ ४४ ॥ जावंत के वि साहू, भरहेरव
महाविदेहे अ। सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहे
तिदंडविरयाणं ॥ ४५ ॥ चिरसंचियपावपणासणीए
भव-सय-सहस्समहणीए। चउवीसजिणविणिग्गय
हाइं वोलंतु मे दिअहा ॥ ४६ ॥ मम मंगलमरि
ता, सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ। सम्मद्दिट्ठी दे
दिंतु समाहिं च बोहिं च ॥ ४७॥ पडिसिद्धाणं कर
किच्चाणमकरणे पडिक्कमणं। असद्दहणे अ तहा, वि

णिग्गयकहाए य ॥४८॥ खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे। मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणई ॥४९॥ एवमहं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ दुगं-छिअं सम्मं। तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउ-व्वीसं ॥ ५० ॥

यहां दो बार " सुगुरुवन्दना " देनी चाहिये और दूसरी बार वांदणा में " आवस्सिआए " पद नहीं कहना चाहिये

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए नि-सीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि। अहो-कायं कायसंफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलं-ताणं बहुसुभेण भे, दिवसो वइक्कंतो, जत्ता भे जवणिज्जं च भे, खामेमि खमासमणो देवसिअं वइक्कमं आव-स्सिआए, पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए आ-सायणाए तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए मणदुक्क-डाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालियाए, सव्वमिच्छोवयाराए सव्वध-म्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

अब आसन से ही खड़े रह कर नीचे लिखे हुए पाठ को बोलना चाहिये—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! अब्भुट्ठिओमि, अब्भिंतर देवसिअं खामेउं? इच्छं, खामेमि देवसिअं॥१॥

उक्त पाठ को बोल कर गोडासन आसन से बैठ कर बांयें हाथ से मुहपत्ती को मुख पर रख कर तथा दाहिने हाथ को गुरु के सम्मुख रख कर " अब्भुट्ठिओ " बोलना चाहिये—

जं किंचि अपत्तिअं परपत्तिअं भत्ते पाणे विणए वेआवच्चे आलावे संलावे उच्चासणे समासणे अंतरभासाए उवरिभासाए जं किंचि मज्झ विणयपरिहीणं सुहुमं वा बायरं वा तुब्भे जाणह अहं न जाणामि तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ १ ॥

इस के पीछे दो वार 'सुगुरुवांदणा' देनी चाहिये—

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि अहोकायं कायसंफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो। जत्ता भे जवणिज्जं च भे खामेमि खमासमणो। देवसिअं वइक्कमं। आवस्सिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए तित्तिसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो!

पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

इस के पीछे "आयरियउवज्झाए" को कहना चाहिये—

आयरियउवज्झाए, सीसे साहम्मिए कुलगणे अ।
जे मे केइ कसाया, सव्वे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥
सव्वस्स समणसंघस्स भगवओ अंजलिं करिअ सीसे।
सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥ २ ॥
सव्वस्स जीवरासिस्स भावओ धम्मनिहिअनिअचित्तो। सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥ ३ ॥

इस के पीछे "करेमि भंते" को कहना चाहिये—

करेमि भंते! सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं, न करेमि न कारवेमि तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

इस के पीछे "इच्छामि ठामि" को कहना चाहिये—

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं जो मे देवसिओ अइयारो कओ काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावगपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए। तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं पंचण्हमणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं

पासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीण-जर-मरणा । चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तियवंदियमहिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

सव्वलोए अरिहंतचेइआणं करेमि काउस्सग्गं ॥ १ ॥

वंदणवत्तिआए पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए बोहिलाभवत्तिआए निरुवसग्गवत्तिआए सद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥ १ ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं

चउण्हं सिक्खावयाणं बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडियं जं विराहियं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ १ ॥

इस पाठ को बोल कर " चारित्रशुद्धिनिमित्तं करेमि काउस्सग्गं " कहै इसके पीछे "तस्स उत्तरी" बोलना चाहिये—

तस्स उत्तरीकरणेणं पायच्छित्तकरणेणं विसोहीकरणेणं विसल्लीकरणेणं पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं ॥ १ ॥

इस के पीछे " अन्नत्थ " बोलना चाहिये—

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए । सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं । एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

इस के पीछे दो " लोगस्स " का अथवा आठ नवकार का काउस्सग्ग करना चाहिये । इस के पीछे दर्शनशुद्धि के निमित्त प्रकटरीति से " लोगस्स " बोलना चाहिये—

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सु-

पासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ ३ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीयल सिज्जंस वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीण-जर-मरणा । चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तियवंदियमहिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

सव्वलोए अरिहंतचेइआणं करेमि काउस्सग्गं ॥ १ ॥

वंदणवत्तिआए पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए बोहिलाभवत्तिआए निरुवसग्गवत्तिआए सद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥ १ ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं

[illegible] ॥ १ ॥

[illegible] " [illegible]

पुक्खरवरदीवड्ढे, धायइसंडे अ जंबूदीवे अ, भरहेरवयविदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ॥ १ ॥ तमतिमिरपडलविद्धंसणस्स सुरगणनरिंदमहिअस्स । सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिअमोहजालस्स ॥ २ ॥ जाईजरामरणसोगपणासणस्स, कल्लाणपुक्खलविसालसुहावहस्स । को देवदाणवनरिंदगणच्चिअस्स, धम्मस्स सार[illegible] लब्भ करे पमायं ॥ ३ ॥ सिद्धे भो पयओ णमो जिणमए नंदी सया संजमे, देवंनागसुवन्नकिन्नरगण[illegible] स्सब्भूअ-भावच्चिए । लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं [illegible] लुक्कमच्चासुरं, धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ धम्मु[illegible] वड्ढउ ॥ ४ ॥ सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं

इस के पीछे " वंदणवत्तिआए " बोलना चाहिये--

वंदणवत्तिआए पूअणवत्तिआए सक्कारवत्ति[illegible] सम्माणवत्तिआए बोहिलाभवत्तिआए निरुवसग्ग[illegible] त्तिआए सद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेह[illegible] वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥ १ ॥

इस के पीछे "अन्नत्थ" बोलना चाहिये—

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

इस के पीछे एक "लोगस्स" का अथवा चार नवकार का काउस्सग्ग करना चाहिये। काउस्सग्ग पारकरके "सिद्धाणं बुद्धाणं" को बोलना चाहिए—

सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं। लोअग्गमुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥१॥ जो देवाणवि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति। तं देवदेवमहिअं सिरसा वंदे महावीरं ॥२॥ इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स, संसारसागराओ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥३॥ उज्जिंत-सेल-सिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स। तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं नमंसामि ॥ ४ ॥ चत्तारि अट्ठ दस दो, य वंदिया जिणवरा चउव्वीसं। परमट्ठनिट्ठिअट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥५॥

सुयदेवयाए करेमि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमु-च्छाए सुहुमेहिं ...

सुहुमेहिं दिट्ठिसं-

अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

इस के पीछे एक नवकार का काउस्सग्ग करना चाहिये, यदि गुरुजी न हों तो एक श्रावक यहा काउस्सग्ग को पार कर "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः" इस वाक्य को कह कर नीचे लिखी हुई स्तुति को बोले–

सुवर्णशालिनी देयात्, द्वादशाङ्गी जिनोद्भवा।
श्रुतदेवी सदा मह्य-मशेषश्रुतसम्पदम् ॥१॥

इस स्तुति को सुनने के बाद सब लोग काउस्सग्ग पारें, इस के पीछे "खित्तदेवयाए करेमि काउस्सग्गं" इस वाक्य को बोल कर पूर्व लिखे हुए "अन्नत्थ" को बोलना चाहिये, तदनन्तर पूर्व के समान एक नवकार का काउस्सग्ग पार कर नीचे लिखी हुई स्तुति को बोलना चाहिये–

यासां क्षेत्रगताः सन्ति, साधवः श्रावकादयः ।

जिनाज्ञां साधयन्तस्ताः, रक्षन्तु क्षेत्रदेवताः ॥ १ ॥

इस के पीछे खड़े हो रह कर एक नवकार को पढ़ना चाहिये, तथा संडासा का प्रमार्जन करते हुए बैठ कर छठे आवश्यक की मुहपत्ती का पडिलेहन करना चाहिये, मुहपत्ती को खोलकर अगाड़ी रख कर दो वार वादना नीचे प्रमाणे देना चाहिये—

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि। अहोकायं कायसंफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे, दिवसो वइक्कंतो, जत्ता भे जवणिज्जं च भे, खामेमि खमासमणो देवसियं वइक्कमं आवस्सियाए पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालियाए, सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥१॥

(यदि पच्चक्खाण पहिले न किया हो तो यहां पर उसे ले लेना चाहिये) इस के पश्चात् "इच्छामो अणुसट्ठिं" इसे को बोल कर नीचे बैठ जाना चाहिये यहां पर यदि गुरुजी विद्यमान हों तो नीचे लिखी हुई "नमोऽस्तु वर्धमानाय" की एक गाथा को बोलें— नहीं हो तो श्रावक नीचे प्रमाणे बोलें—

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः।
नमोऽस्तु वर्द्धमानाय, स्पर्द्धमानाय कर्मणा।
तज्जयावाप्तमोक्षाय, परोक्षाय कुतीर्थिनाम् ॥ १ ॥

येषां विकचारविन्दराज्या ज्यायःक्रमकमलावलिं दधत्या। सदृशैरिति सङ्गतं प्रशस्यं, कथितं सन्तु शिवाय ते जिनेन्द्राः ॥ २ ॥ कषायतापार्दितजन्तुनिर्वृतिं करोति यो जैनमुखाम्बुदोद्गतः। स शुक्रमासोद्भववृष्टिसन्निभो, दधातु तुष्टिं मयि विस्तरो गिराम् ॥ ३ ॥

तथा श्राविकाओं को "संसारदावा" की तीन गाथा बोलना चाहिये—

संसारदावानलदाहनीरं, सम्मोहधूलीहरणे समीरम्। मायारसादारणसारसीरं, नमामि वीरं गिरिसारधीरम्॥१॥ भावावनामसुरदानवमानवेन, चूलाविलोलकमलावलिमालितानि। संपूरिताभिनतलोकसमीहितानि, कामं नमामि जिनराजपदानि तानि ॥२॥ बोधागाधं सुपदपदवीनीरपूराभिरामं, जीवाहिंसाविरललहरीसङ्गमागाहदेहम्। चूलावेलं गुरुगममणीसंकुलं दूरपारं, सारं वीरागमजलनिधिं सादरं साधु सेवे ॥ ३ ॥

इस के पीछे "नमोत्थुणं" बोलना चाहिये एक जने सिखे हुए को बोले—

नमोत्थु णं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं सरणदयाणं बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं धम्मदेसिआणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥ अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं वियट्टछउमाणं ॥७॥ जिणाणं जावयाणं तिन्नाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोअगाणं ॥८॥ सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्ति सिद्धिगइनामधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं जिअभयाणं ॥ ९ ॥ जे अ अईया सिद्धा, जे अ भविस्संतिऽणागए काले। संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! वृद्ध स्तवन भणुं ? ।

इस के पीछे आसन पर बैठ कर " नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः " इस को बोल कर कमसे कम ११ गाथावाले स्तवन को कहना चाहिये किन्तु यदि ग्यारह गाथा वाले स्तवन के

होता कोई स्तवन बोला जावे सो यह स्तवन भी बोलना कि [illegible]
" [illegible] " बोलना चाहिये —.

ॐ [illegible] किर
[illegible] । [illegible], [illegible]
॥ १ ॥

अब स्तवन लिखा जाता है जिसे बोलना चाहिये—

श्री चिन्तामणिपार्श्वजिनस्तवनम् ।

भविका श्रीजिन बिंब जुहारो, आतमपरम आधारो रे॥ भ० ॥ श्री० ॥ जिनप्रतिमा जिन सारखी जाणो, न करो शंका कांई । आगमवाणी ने अनुसारे, राखो प्रीति सवाई रे ॥ भ० श्री० ॥ १ ॥ जे जिनबिम्ब स्वरूप न जाणे, ते कहिये किम जाणे । भूला तेह अज्ञाने भरिया, नहिं तिहां तत्त्व पिछाने रे ॥ भ० श्री० ॥ २ ॥ अम्बड श्रावक श्रेणिक राजा, रावण प्रमुख अनेक । विविध परे जिन भगति करंता, पाम्या धर्म विवेक रे ॥ भ० श्री० ॥ ३ ॥ जिन प्रतिमा बहु भगते जोतां, होय निश्चय उपगार । परमारथ गुण प्रकटे पूरण, जो जो आर्द्रकुमार रे ॥ भ० श्री० ॥ ४ ॥ जिन प्रतिमा आकारे जलचर, छे बहु जलधि मज्झार । ते देखी बहुला म त्स्यादिक, पाम्या विरति प्रकार रे ॥ भ० श्री० ॥ ५ ॥ पांचमे

अंगे जिनप्रतिमा नो, प्रकट पणे अधिकार। सूरयाभ-
सुरे जिनवर पूज्या, रायपसेणी मझार रे॥भ०॥श्री०
॥ ६ ॥ दशमे अंगे अहिंसा दाखी, जिन पूजा जिन-
राज। एहवा आगम अरथ मरोड़ी, करिये केम अ-
काज रे ॥भ० श्री०॥७॥ समकित धारी सती द्रौपदी,
जिन पूजा मन रंगे। जो जो एहनो अरथ विचारी,
छट्ठे ज्ञाता अंगे रे ॥ भ० श्री०॥ ८॥ विजय सुरे जिम
जिनवर पूज्या, कीधी चित्त थिर राखी। द्रव्य भाव
बिहुँ भेदें कीनी, जीवाभिगम छे साखी रे ॥भ० श्री०
॥६॥ इत्यादिक बहु आगम साखें, कोई शङ्का मत कर
जो। जिन प्रतिमा देखी नित नयनों, प्रेम घणो चित
धरजो रे ॥भ० श्री०॥१०॥ चिन्तामणि प्रभु पास पसा-
यें; सरधा हो जो सवाई। श्री जिनलाभ सुगुरु उप-
देशे, श्री जिनचन्द्र सवाई रे ॥ भ० श्री० ॥ ११ ॥

इस के पीछे एक एक खमासमण से आचार्य उपाध्याय और
सर्व साधुओं को वन्दन कर फिर चौथा खमासमण देकर नीचे लि-
खे हुए पाठ को बोलना चाहिये—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! देवसियपायच्छि-
त्तविसुद्धिनिमित्तं काउस्सग्गं करूँ? इच्छं, देवसियपा-
यच्छित्त विसुद्धिनिमित्तं करेमि काउस्सग्गं ॥१॥

पीछे कोई स्नात्र [illegible] करे तो [illegible] के [illegible]
" [illegible] " बोलना चाहिये—

ॐ [illegible] जिन
मोहे । [illegible] जिनाली, [illegible]
॥ १ ॥

[illegible] बोलना चाहिये—

श्री चिन्तामणिपार्श्वजिनस्तवनम् ।

भविका श्रीजिन बिंब जुहारो, आगमवयण आधा
रे॥ भ० ॥ श्री० ॥ जिनप्रतिमा जिन सरखी जाणी,
करो शंका कांई । आगमवाणी ने अनुसारें, रा
प्रीति सवाई रे ॥ भ० श्री०॥१॥ जे जिनबिम्ब स्व
न जाणे, ते कहिये किम जाणे । भूला तेह अज्ञा
भरिया, नहिं तिहां तत्त्व पिछाने रे ॥ भ० श्री०॥२
अम्बड श्रावक श्रेणिक राजा, रावण प्रमुख अनेक
विविध परें जिन भगति करंता, पाम्या धर्म विवेक
॥भ० श्री०॥३॥ जिन प्रतिमा बहु भगतें जोता, ह
निश्चय उपगार । परमारथ गुण प्रकटे पूरण, जो
आर्द्रकुमार रे ॥ भ० श्री० ॥ ४ ॥ जिनप्रतिमा आक
जलचर, छे बहु जलधि मज्झार । ते देखी बहुला
स्यादिक, पाम्या विरति प्रकाररे॥भ० श्री॥५॥ पां

अंगे जिन प्रतिमा नो, प्रकट पणे अधिकार। सूरयाम-
सुरे जिनवर पूज्या, रायपसेणी मज्झार रे ॥भ०॥श्री०
॥ ६ ॥ दशमे अंगे अहिंसा दाखी, जिन पूजा जिन-
राज। एहवा आगम अरथ मरोड़ी, करिये केम अ-
काज रे ॥भ० श्री०॥७॥ समकित धारी सती द्रौपदी,
जिन पूजा मन रंगे। जो जो एहनो अरथ विचारी,
छट्ठे ज्ञाता अंगे रे ॥ भ० श्री०॥ ८॥ विजय सुरे जिम
जिनवर पूज्या, कीधी चित्त थिर राखी। द्रव्य भाव
विहुँ भेदें कीनी, जीवाभिगम छे साखी रे ॥भ० श्री०
॥९॥ इत्यादिक बहु आगम साखें, कोई शङ्का मत कर
जो। जिन प्रतिमा देखी जिन सरखी, प्रेम घणो चित्त
धरजो रे ॥भ० श्री०॥१०॥ चिन्तामणि प्रभु पास पसा-
यें, सरधा हो जो सवाई। श्री जिनलाभ सुगुरु उप-
देशे, श्री जिनचन्द्र सवाई रे ॥ भ० श्री० ॥ ११ ॥

इस के पीछे एक एक खमासमण से आचार्य उपाध्याय और
सर्व साधुओं को वन्दन कर फिर चौथा खमासमण देकर नीचे लि-
खे हुए पाठ को बोलना चाहिये—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! देवसियपायच्छि-
त्तविसुद्धिनिमित्तं काउस्सग्गं करूँ? इच्छं, देवसियपा-
यच्छित्त विसुद्धिनिमित्तं करेमि काउस्सग्गं ॥ १ ॥

इस के पीछे "अन्नत्थ" बोलना चाहिये—

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए। सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं। एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥१॥

इस के पीछे चार "लोगस्स" का या सोलह नवकार का काउस्सग्ग करना चाहिये, काउस्सग्ग पार करके प्रगट लोगस्स बोलना चाहिये—

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअलसिज्जंस वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे

पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तियवंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दितु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! खुद्दोवद्दव उड्डावणत्थं करेमि काउस्सग्गं ॥ १ ॥

इस के पीछे " अन्नत्थ " बोलना चाहिये–

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए । सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं । एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

इस के पीछे चार " लोगस्स " का अथवा सोलह नवकार का काउस्सग्ग करना चाहिये । इस के बाद लोगस्स बोलना चाहिये––

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं,

सीयल सिज्जंस वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जि
धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लि
मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं
वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरय
पहीण-जर-मरणा । चउवीसंपि जिणवरा, तित्थय
पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तियवंदियमहिया, जे ए लो
उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवर
दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं
सयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम
॥ ७ ॥

इस के पीछे एक खमासमण दे कर बोलना चाहि

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! चैत्यवन्दन

श्री थंभणापार्श्वनाथजी का चैत्यवन्दन

श्रीसेढीतटिनीतटे पुरवरे श्रीस्तम्भने स्वर्गिरौ,
श्रीपूज्याभयदेवसूरिविबुधाधीशैः समारोपितः ।
संसिक्तः स्तुतिभिर्जलैः शिवफलैः स्फूर्जत्फणापल्ल
पार्श्वः कल्पतरुः स मे प्रथयतां नित्यं मनो वाञ्छित
आधिव्याधिहरो देवो, जीरावल्ली शिरोमणिः ।
पार्श्वनाथो जगन्नाथो, नित्यनाथो नृणां श्रिये ॥

इस के पश्चात् पूर्व लिखे हुए "नमोत्थुणं" इत्यादि

लना चाहिये, तदनन्तर पूर्व लिखे हुए " जावंति चेइयाई "
ादि पाठ को बोलना चाहिये, तदनन्तर पूर्व लिखे हुए " जा-
केवि साहू " इत्यादि पाठ को बोलना चाहिये, तत्पश्चात् "न-
र्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः "इस वाक्यको बोल कर पीछे
खे हुए "उवसग्गहरस्तवन" को बोलना चाहिये, इस के पीछे
लिखे हुए "जय वीयराय" इत्यादि पाठ को बोलना चाहिये,
के पश्चात् खमासमण को देकर तथा मस्तक को नमा कर नीचे
खे हुए पाठ को बोलना चाहिये—

सिरिथंभणयट्ठियपाससामिणो सेसतित्थसामीणं ।
त्थसमुन्नइ कारणं, सुरासुराणं च सव्वेसिं ॥ १ ॥
स अहं सरणत्थं काउस्सग्गं करेमि सत्तीए ।
त्तीए गुणसुट्ठियस्स संघस्स समुन्नइ निमित्तं ॥२॥
श्रीथंभणपार्श्वनाथजी आराधना निमित्तं करेमि
उस्सग्गं ॥ १ ॥

वंदणवत्तिआए पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए
म्माणवत्तिआए बोहिलाभवत्तिआए निरुवसग्गव-
आए सद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए
ड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥ १ ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं
भाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमु-
च्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं,

सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

इस के पीछे चार " लोगस्स " का या सोलह नवकार का काउस्सग्ग करना चाहिये, काउस्सग्ग पार करके प्रगट लोगस्स बोलना चाहिये --

लोगस्स उज्जोअगरे,धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं सीअलसिज्जंस वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तियवंदियमहिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

- इस के पीछे नीचे लिखे हुए पाठ को बोलना चाहिये—

श्रीचौरासीगच्छशृङ्गारहार जङ्गमयुगप्रधान भट्टारक दादाजी श्रीजिनदत्तसूरिजी चारित्रचूडामणि जी आराधनार्थं करेमि काउस्सग्गं ॥ १ ॥

इस के पीछे "अन्नत्थ" बोलना चाहिये

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए। सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं। एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥१॥

- इस के पीछे एक "लोगस्स" का अथवा चार नवकार का काउस्सग्ग करना चाहिये। काउस्सग्ग पारकरके पीछे प्रकट "लोगस्स" को बोलना चाहिये -

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअलसिज्जंस वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे

मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आचेसु अहियं पया-सयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

श्रीचौरासीगच्छशृङ्गारहार जङ्गमयुगप्रधान भट्टारक दादाजी श्रीजिनकुशलसूरिजी चारित्रचूडामणिजी आराधवा निमित्तं करेमि काउस्सग्गं ॥ १ ॥

इस का काउस्सग्ग की विधि उपर मुजब जानली ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! चैत्यवन्दन करूजी ?

चउक्कसायपडिमल्लुल्लूरणु, दुज्जयमयणबाणमुसुमू-रणु । सरसपियंगुवण्णु गयगामिउ, जयउ पासु भुवण-त्तयसामिउ ॥ १ ॥ जसु तणुकंतिकडप्पसिणिद्धउ सोहइ फणमणिकिरणालिद्धउ । नं नवजलहर तडि-ल्ल[illegible]उ, सो जिणु पासु पयच्छउ वंछिउ ॥ २ ॥

[illegible] भगवन्त इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धिस्थिताः,
[illegible] जिनशासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः।
श्रीसिद्धान्तसुपाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः,

पञ्चैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु वो मङ्गलम् ॥१॥

इस के पीछे पूर्व लिखे हुए "नमोत्थुणं" इत्यादि पाठ से ले कर "जय वीयराय" इत्यादि पाठ तक समस्त पाठ बोलना चाहिये । इस के पीछे यदि दीपक का अथवा बिजली का प्रकाश पड़ा हो तो "इरियावहिया" करना चाहिये—

इरियावहियं का पाठ, तस्स उत्तरी का पाठ, अन्नत्थ का पाठ बोल कर एक "लोगस्स" का अथवा चार नवकार का काउस्सग्ग करना चाहिये, काउस्सग्ग पार कर के "लोगस्स" प्रकट रीति से बोलना चाहिये, फिर सामायिक को पारना चाहिये, वह प्रमाद में सामायिक पालने की विधि प्रमाणे पार लेना चाहिये । तथा दादाजी का नीचे लिखा हुआ स्तवन भी बोलना चाहिये—

॥ श्रीजिनकुशलसूरिजी महाराज का स्तवन ॥

दर्शन पाया पाया दर्शन पाया रे, कुशलसूरीश्वर राय तुम्हारे ॥ द० ॥ टेक ॥

मन्त्री जिह्लागर पिता तुम्हारे जैतसिरी है माता रे । छाजेड़ राया गोत्र में छाया छाजेड़ आया रे ॥द० ॥१॥ शान्त दान्तादि गुणों से अलंकृत औरव सुवंश दिपाया रे । अनेक उधारे मुझ को उधारो गौत्रीय पाया रे ॥ द० ॥ २ ॥ स्थान स्थान में परचा तुम्हारा सहु मन भाया रे । निरखि निरखी गुरु चरण तुम्हारे

हर्ष न माया रे ॥ द० ॥ ३ ॥ शरणा शरणा गुरुराज तुम्हारे भविजन को सुख दाया रे । ऐसे शरणों में शीश नमा के आनन्द पाया रे ॥ द० ॥ ४ ॥ शरणा की सेवा कर्म खपैया गुरुवर ध्याया रे । ध्यावो स मंगल गावो पाओ वांछित माया रे ॥ द० ॥ ५ ॥ कर जोड़ी ने अर्ज में करना मङ्गल सकल सुख दाया रे । जिन शासन उजवालो स्वामी जय जयकार वर्ताया रे ॥ द० ॥ ६ ॥ सान्निध्यकारी विघ्ननिवारी पूर्ण गुरु को पाया रे । सुख सागर ने शील शील के क्षेमाणंद गुण गाया रे ॥द०॥७॥

॥ इति देवसियपडिक्कमणविधि संपूर्ण ॥

दशवाँ पाठ ।

पच्चक्खाण-वर्णन ।

दिन के प्रत्याख्यान ।

जो मनुष्य चौदह नियमों को सँभालता हो उसे नीचे लिखे अनुसार प्रत्याख्यानों को करना चाहिए, तथा यदि वह पौरुषी आदि का प्रत्याख्यान करना चाहे तो उसे "नवकारसहियं" के स्थान में "पोरसियं" आदि शब्दों को बोलना चाहिये ।

नवकारसी का पच्चक्खाण ।

उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाइ, ति[illegible] आहारं—असणं पाणं खाइमं साइमं अण्णत्थणा-

सहसागारेणं पच्छण्णकालेणं दिसामोहेणं साहुव- येणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं विगईओ पचक्खाई असत्थणाभोगेणं सहसागारेणं लेवालेवेणं गिहत्थसं- सिट्ठेणं उक्खित्तविवेगेणं पडुचमक्खिएणं, महत्तरागा- रेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि ॥ २ ॥

इसी प्रकार साढ पोरसी के प्रत्याख्यान को जानना चाहिये।

पुरिमड्ढ अवड्ढ का पच्चक्खाण ।

सूरे उग्गए पुरिमड्ढं अवड्ढं वा पचक्खाइ चउव्वि- हंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अणत्थणा- भोगेणं सहसागारेणं पच्छन्नकालेणं दिसामोहेणं साहु- वयणेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वि- गईओ पचक्खाइ असत्थणाभोगेणं सहसागारेणं लेवा- लेवेणं गिहत्थसंसिट्ठेणं उक्खित्तविवेगेणं पडुचमक्खि- एणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि ॥ ३ ॥

एकासण बिआसणा का पच्चक्खाण ।

पोरिसिं साढपोरिसिं वा पचक्खाइ उग्गए सू- चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण- त्थणाभोगेणं सहसागारेणं पच्छन्नकालेणं दिसामो- हेणं साहुवयणेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं एकास-

पिब्भासणं वा पचक्खाइ दुविहं तिविहंपि आहारं असणं
... साइमं अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं सागा-
रिआगारेणं आउंटणपसारेणं गुरुअब्भुट्ठाणेणं पारि-
ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागा-
रेणं विगईओ पचक्खाइ अन्नत्थणाभोगेणं सहसागा-
रेणं लेवालेवेणं गिहत्थसंसिट्ठेणं उक्खित्तविवेगेणं पडु-
च्चमक्खिएणं, महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं
वोसरामि ॥ ४ ॥

एकलठाण का पच्चक्खाण ।

पोरिसिं साड्ढपोरिसिं वा पचक्खाइ उग्गए सूरे
चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं
अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं पच्छण्णकालेणं
दिसामोहेणं साहुवयणेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं
एकासणं एगट्ठाणं पचक्खाइ दुविहं तिविहं चउव्विहंपि
आहारं असणं खाइमं साइमं अण्णत्थणाभोगेणं सह-
सागारेणं सागारिआगारेणं गुरुअब्भुट्ठाणेणं पारिट्ठाव
णियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं
विगईओ पचक्खाइ अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं ले-
वालेवेणं गिहत्थसंसिट्ठेणं उक्खित्तविवेगेणं पडुच्चमक्खि-
एणं, महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि
॥ ५ ॥

आंबिल का पचक्खाण ॥

पोरसि साढपोरसि वा पचक्खाइ उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं पच्छण्णकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं आयंबिलं पचक्खाइ अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं लेवालेवेणं गिहत्थसंसिट्ठेणं उक्खित्तविवेगेणं पारिट्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं एकासणं पचक्खाइ तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं सागारिआगारेणं आउट्टणपसारेणं गुरुअब्भुट्ठाणेणं पारिट्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसरइ ॥३॥

नीवी का पचक्खाण ॥

पोरसि साढपोरसि वा पचक्खाइ उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं पच्छण्णकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं निव्विगइयं पचक्खामि अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं

हत्थसंसिट्ठेणं [illegible]

एकासणं पच्चक्खाइ तिविहंपि आहारं-असणं खाइमं साइमं अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं सागारिआगारेणं आउट्टणपसारेणं गुरुअब्भुट्ठाणेणं पच्छन्नकालेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि।

चउव्विहाहार उपवास का पच्चक्खाण।

सूरे उग्गए अब्भत्तट्ठं पच्चक्खामि चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि ॥ ८ ॥

तिविहाहार उपवास का पच्चक्खाण।

सूरे उग्गए अब्भत्तट्ठं पच्चक्खामि तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं पाणहारपोरिसिं साढपोरिसिं पुरिमड्ढं अवड्ढं वा पच्चक्खाइ अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं पच्छन्नकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि ॥ ६ ॥

इति पच्चक्खाण

पोरिसि साढपोरिसिं पुरिमड्ढं अवड्ढं या पच्चक्खामि उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं . अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं पच्छन्नकालेणं

दिसामोहेणं साहुवयणेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं एगासणं एगट्ठाणं दत्तिंथं पचक्खामि तिविहं चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं सागारिआगारेणं गुरुअब्भुट्ठाणेणं महत्तरागारेणं विगईओ पचक्खाइ अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं लेवालेवेणं गिहत्थसंसिट्ठेणं उक्खित्तविवेगेणं पडुचमक्खिएणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसरामि ॥१०॥

रात्री के पचक्खाण ।

चउव्विहाहार का पचक्खाण ।

दिवसचरिमं पचक्खाइ चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि ।१।

दुविहाहार का पचक्खाण ।

दिवसचरिमं पचक्खामि दुविहंपि आहारं असणं खाइमं अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि ॥ २ ॥

पाणहार का पचक्खाण ।

पाणहार दिवसचरिमं पचक्खामि अन्नत्थणाभोगे-

णं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तिपागा-
रेणं वोसरामि ॥ ३ ॥

॥ ग्यारहवाँ पाठ ॥

। स्तवनसंग्रहः ।

। अथ श्री सद्गुरुगुणाष्टक ।

भजामि पूज्यं च नमामि नित्यं,
यक्ष्यामि भक्त्या प्रणतान्तरात्मा ।
यथाभिधानं किल सद्गुणीयं,
तस्य स्वरूपं शुभभावभाव्यम् ॥ १ ॥
पिता कुलीनश्च मनःसुखाख्यः,
सुशीलधर्मा जननी हि जेती ।
प्राग्वौरवंश्यः सुखलालसञ्ज्ञो,
ग्रामः प्रसिद्धः सरसेति नाम्ना ॥ २ ॥
आब्रह्मचारी जिनधर्मरागी,
सम्यक्त्वधारी विरतिप्रभावी ।
संत्यज्य संसारमसारमृद्धी,
रत्नाकराख्यस्य गुरोश्च पार्श्वात् ॥ ३ ॥
चारित्रमादाय सदा विहारी,
विनाऽतिचारं यतिधर्मधारी ।
श्रीमान् जिताक्षो गुणगुम्फपोतं,
संसारपाराय परं दधार ॥ ४ ॥

सुबुद्धिसङ्गी कुमतिप्रणाशी,
खलप्रबोधी शुभमार्गदर्शी ।
सार्थानि सूत्राणि पपाठ धीरः,
गजेन्द्रतुल्यो वचनेषु वीरः ॥ ५ ॥
रराज नित्यं करुणैकपात्रं,
जीवोपकारी सुखसागराख्यः ।
सत्यार्थवक्ता सुजनाभिनन्द्यः,
साधुप्रभावोज्झितमोहमायः ॥ ६ ॥
अन्तारिपून् बाह्यपरिग्रहादीन्,
त्यागी निरागी भविशर्मकारी ।
जगत्प्रसिद्धो बहुमानधाम,
गुणैर्गुणैः सत्पथमाजगाम ॥ ७ ॥
त्रैलोक्यमित्रो हरिमामुपेत,
आनन्ददात्री शुभमायमस्मिन् ।
कुर्वन्ति लोका नयमत्त्यसिद्धिं,
ते वाञ्छितां वै द्रुतमाप्नुवन्ति ॥ ८ ॥

शिखरिणीवृत्तम्—

सुधन्नी श्रीरामं मतिशुभगुणाधारमरणिं,
गणाधीश ! स्वामिन् ! युगपद्पदध्ये भवजलें
कथं नोत्तरेया मे तव शुभगुणा मङ्गलकराः,

गुरोः पूर्णाब्येवैं चरणयुगले क्षेमनमनम् ॥६॥

श्री कुशलसूर्यष्टकम् ।

शिखरिणी—सुखं सर्वा सम्पद्वसति पदयोर्यस्य वदने,
विनिद्रा वागीशो हृदयकमले संविदधिपम् ।
विरागः सर्वान्त्स्वपि च भगवद्भक्तिरनिशं,
समृद्ध्यर्थं वन्दे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ॥१॥
निशि स्वापाधीनं ह्यनुदिनमधीनौ समविनौ,
परं वाणीलक्ष्मी-निलयमपि तद्दाननिपुणौ ।
सदा यौ वर्त्तेते जगत इव पाथोजयुगलं,
समृद्ध्यर्थं वन्दे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ॥२॥
क्षिपन्तौ तौ प्रेक्षां सरसिरुहयोर्यौ मृदुलयोः,
जपापुष्पाभासौ किसलयजिताशेषमहसौ ।
लसद्रेखालक्ष्मप्रकटितपरा श्रीसदनयोः,
समृद्ध्यर्थं वन्दे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ॥३॥
सुरेभ्यः स्वःस्थेभ्यः कतिपयदिनैर्यः फलमयो,
कदाचिद्दत्ते द्राक् प्रियमपि दरिद्राय परमाम् ।
सुरद्रुं त्यक्त्वा यौ बुधजनसुसेव्यौ भुविगतौ,
समृद्ध्यर्थं वन्दे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ॥४॥
सुरासुरसेव्यावन्ते परमगुरुधर्मोपदिशतः,

---

१ "परमक्षजयोः क्षेमदाराकम्" इति पाठान्तरम् ।

सदा कामं पीतामृतरससरांशैरपि गिरः।
श्रुता यस्य श्रेयः श्रियमपि दिशन्ति स्थिरधियां
समृद्धयर्थं वन्दे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ॥४
निधी सर्वश्रीणामनधिकरणौ सर्वविपदां,
मृदूस्निग्धौ शाणावुपचितनखौ गूढगुल्फौ।
समानौ मातङ्गमदपदशासावितलितौ,
समृद्ध्यर्थं वन्दे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ॥५
ययोरर्चा सूते घनसुखधरा धामरमणी,
शरीरारोगत्वं विनयनयविद्यानिपुणताम्।
गुणानौदार्यादीनपि तनयलक्ष्म्यौ तनुभृतां,
समृद्धयर्थं वन्दे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ॥
भयंकारागारामयसमरपारीन्द्रफणभृत्-
महापारावारद्विरदवनवैश्वानरभवम्।
न डाकिन्याद्युग्रग्रहगरलजं यत्स्मरणतः,
समृद्ध्यर्थं वन्दे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ॥

। शार्दूलविक्रीडितम्।

इत्थं श्रीजिनपद्मसूरिरचितं दिव्याष्टकं सद्गुरो
पुण्यं मन्त्रमयं मनोज्ञफलदं पापौघविध्वंस
भक्त्या यः पठति प्रभातसमये सर्वत्र तस्य
चरणौ भूपतयो भवन्ति सततं लक्ष्मीश्चिरस्थायिनी

श्रीगौतमदेवस्तवनम् ।

श्रीइन्द्रभूतिं वसुभूतिपुत्रं, पृथ्वीभवं गौतमगोत्ररत्नम् । स्तुवन्ति देवाः सुरमानवेन्द्राः, स गौतमो यच्छतु वाञ्छितं मे ॥ १ ॥ श्रीवर्द्धमानात् त्रिपदीमवाप्य, मुहूर्तमात्रेण कृतानि येन । अङ्गानि पूर्वाणि चतुर्दशापि, स गौतमो यच्छतु वाञ्छितं मे ॥ २ ॥ श्रीवीरनाथेन पुरा प्रणीतं, मन्त्रं महाऽऽनन्दसुखाय यस्य । ध्यायन्त्यमी सूरिवराः समग्राः, स गौतमो यच्छतु वाञ्छितं मे ॥३॥ यस्याभिधानं मुनयोऽपि सर्वे, गृह्णन्ति भिक्षाभ्रमणस्य काले । मिष्टान्नपानाम्बरपूर्णकामाः, स गौतमो यच्छतु वाञ्छितं मे ॥४॥ अष्टापदाद्रौ गगने स्वशक्त्या, ययौ जिनानां पदवन्दनाय । निशम्य तीर्थातिशयं सुरेभ्यः, स गौतमो यच्छतु वाञ्छितं मे ॥५॥ त्रिपञ्चसंख्याशततापसानां, तपःकृशानामपुनर्भवाय । अक्षीणलब्ध्या परमान्नदाता, स गौतमो यच्छतु वाञ्छितं मे ॥ ६ ॥ सदक्षिणं भोजनमेव देयं, साधर्मिकं संघसपर्ययेति । कैवल्यवस्त्रं प्रददौ मुनीनां, स गौतमो यच्छतु वाञ्छितं मे ॥ ७ ॥ शिवंगते भर्त्तरि वीरनाथे, युगप्रधानत्वमिहैव मत्वा । पट्टाभिषेको विदधे सुरेन्द्रैः, स गौतमो यच्छतु वाञ्छितं मे ॥८॥ त्रैलोक्यबीजं परमेष्ठिबीजं

नपीजं, परमात्मबीजं परमेश्विरपादम्। यन्नाममन्त्रं विदों सुरेन्द्रैः, स गौतमो गच्छतु वान्छितं मे ॥९॥ श्रीगौतमस्याष्टकमादरेण, प्रबोधकाले मुनिपुङ्गवा ये। पठन्ति ते सूरिपदं सदैवाऽऽनन्दं लभन्ते सुतरां क्रमेण॥१०॥

श्रीगुरुगुणस्तवन ।

श्रीजिनदत्त के चरणों में आया चरणोंमें आया गुरु शीस नमाया॥टेक॥ बावन मंत्री बिना कहाया बाहडदेवी उपरें आया॥ श्री॥१॥ हुम्बड़ वंश में आप सुहाया सकल जीव हरपाया ॥ श्री० ॥२॥ गच्छ चोरासी में श्रृङ्गार हारा युगप्रधान पद छाया ॥ श्री० ॥३॥ देश देश में परचा पाया सकल संघ सुखदाया॥ श्री० ॥४॥ चरण शरणं ग्रही आज उमाया तारो मुझ को अनेकतराय ॥ श्री० ॥५॥ हर्ष धरी दिल काय झुकाया नमि नमि अर्ज मैं लाया ॥ श्री० ॥६॥ ध्यावो ध्यावो संघ दिल हरपाया पावो वाञ्छित माया ॥ श्री० ॥७॥ उद्रामसर में दर्शन पाया आनन्द हर्ष वधाया ॥ श्री० ॥८॥ बीरचौवीसे वर्ष पायाला चैत्र चौथ सुदि आया ॥श्री० ॥९॥ कृपाभिलाषी सद्गुण दाया सुखसागर मन भाया॥ श्री०॥१०॥ पूर्ण गुरु के चरण पसाया क्षेमसागर गुण गाया ॥ श्री० ॥ ११ ॥ इति ॥

। जन्म महोत्सवस्तवनम् ।

आनन्द छाया अङ्ग न माया हर्ष वधाया रे (टेक)
र प्रभु का जन्म हुआ जब इन्द्र से आदेश पाया रे।
रैणगमेषी देव ने जाकर घननन घंटा बजाया रे
आ०॥१॥ सब देवों ने जान लिया सही मेरु शि-
र पर आया रे। पञ्च रूप धरि वीर प्रभू को इन्द्र
नप से लाया रे ॥ आ० ॥ २ ॥ जन से आपूरित
लश को देखे सन्देह दिल में आया रे। नीर प्रवाह
: जावेंगे लघु है इन की काया रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ अ-
धिज्ञान से जान लिया प्रभु अनन्त बली महा राया
वामाङ्गुष्ठे मेरु दबाया थर हर कर कंपाया रे॥आ०
४॥ अवधि लगा कर देख लिया बल प्रभुजी को मह-
या रे। अपराध खमावे काय झुकावे नमि नमि लागे
या रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ गाया गाया मङ्गल गाया प्रभु
रखी हरषाया रे। विविध भक्ति कर के इन्दर जननी
से लाया रे ॥ आ० ॥ ६ ॥ त्रैलोक्यनाथ हरि सुख-
री पूरण प्रेम बढ़ाया रे। सकल संघ मिलि जय जय
लो क्षेमानन्द को पाया रे ॥ आ० ॥ ७ ॥

। श्री पार्श्वप्रभुस्तवन ।

मौदपपास प्यारो है चेतन मारा निरखत हर्ष

अपार है लौद्रव० (टेक) चौवीस अतिशय शोभता है प्रभु चे० पांत्रीस वाणी गुणगान है ॥लौद्रव०॥१॥ चौंतीस पांच अतिशयों है प्रभु चे० लौद्रवनगर मझार है ॥लौद्रव०॥२॥ देवविमान जिसा बन्यां है प्रभु चे० मन्दिर अति सुखकार है ॥ लौद्रव० ॥ ३ ॥ अनन्त गुणे करी दीपता है प्रभु चे० सरस कला श्रीसार है ॥लौद्रव०॥४॥ महिमा मुनि के छाजियो है प्रभु चे० संघ सकल बहु ठाठ है ॥लौद्रव०॥५॥ भव नाटक करता थका है प्रभु चे० आयो श्रीदरबार है ॥लौद्रव० ॥६॥ दीन की विनती धारजो है प्रभु चे० भवसागर थी तार है ॥लौद्रव०॥७॥ संघ में मंगल कीजिये है प्रभु चे० विधि वन्दन करूं नाथ है ॥ लौद्रव० ॥ ८ ॥ वीर चौवीस चालीस मास है प्रभु चे० मागशर सुदि सुखार है ॥लौद्रव॥ ९ ॥ पञ्चमी दिवसे भेटिया हो है प्रभु चे० आनन्द अंग न माया है ॥लौद्रव०॥ १०॥ क्षेमसागर प्रभु प्रेमसुं है प्रभु चे० मांगे अविचल राज है ॥ लौद्रव० ॥ ११ ॥

श्री नेमिनाथस्वामि-स्तवन ।

नेमी जिणंद स्वामिन् चरणों में अब तो लेलो ॥टेक॥
कृपानिधे कर मेलो अर्जी दया कर लेलो ।

संसार पार मेलो चरणों में अब तो लेलो ॥ १ ॥
रास्ता यही बना दो सुखी सदा बना दो ।
आयो विरुद सुन लो चरणों में अबतो लेलो ॥ २ ॥
गिरनार तीर्थ आया मन हूँ सदा सुहाया ।
आनन्द हर्ष भरेलो चरणों में अब तो लेलो ॥ ३ ॥
मुख चन्द्र को मैं देखा निर्मल शान्त चेरा ।
नासाग्र ध्यान थिरेलो चरणों में अब तो लेलो ॥४॥
ऐसी हृदय में रेखा कर्मों की होगी रेखा ।
भव पार हूँगा येलो चरणों में अब तो लेलो ॥५॥
मुक्ति से कर के मेला राजुल को मेरी चेला ।
पशु पर दया करेलो चरणों में अब तो लेलो ॥६॥
अब तो मुझे भी तारो केवल के अंश धारो ।
कुछ ध्यान इधर भी देलो चरणों में अब तो लेलो ॥७॥
अन्तः सन्मय सुधारो यह विनती स्वीकारो ।
दुःखी सदा बनेलो चरणों में अब तो लेलो ॥८॥
अन्तिम प्रार्थना करता आशातना से डरता ।
दयालु दीन चेलो चरणों में अब तो लेलो ॥९॥
संवत् दो हजार में चौसर मास शुक्ला है सुखोत्तर ।
पद्म को आयो चेलो चरणों में अब तो लेलो ॥१०॥
गुरुवर्य पूर्णसागर सच्चिदघन हेमसागर ।
शरणो शरण में लेलो चरणों में अब तो लेलो ॥११॥

श्रीअजितजिन-स्तवन ।

(आधा आम पधारो पूज्य ए देशी)

अजित जिनेश्वर चरण नी सेवा एवा ए हूँ हलियो रे, कहिये अणचाख्या रस अनुभवरस नो टाणो मिलियो। प्रभुजी मेर करी महाराज काज अमारा सारो, अहो म्हारा प्रभुजी अहो म्हारा जिन जी, गिरवा हो गरीब निवाज भवजल पार उतारो ॥१॥

मुकायो पण हूँ नवि मूकूँ चूकूँ ए नवि टाणो रे। भक्ति भाव उठ्यो जे अन्तर ते केम रहे सरमणो ॥ प्र० ॥२॥ लोचन शान्त सुधारस सुभगा मुख मटकालूँ प्रसन्न रे। योगमुद्रा नो लटको चटको अतिशय नो अतिघन ॥ प्र० ॥३॥ बालकालिमा वार अनन्ती सामन्ती नवि जाग्यो रे। यौवन काले ने रस चाखण तूँ सामरथ प्रभु मांग्यो ॥ प्र० ॥४॥ पिण्ड पदस्थ रूप सब लीनो चरण कमल तुझ ग्रहीयो रे। भमर परे रसस्वाद चखानो परसो कीं फरो महियो ॥ प्र० ॥५॥ तूँ अनुभव रस देवा समरथ हूँ पण अर्थी तेनो रे। चित्त वित्त ने पात्र सम्बन्धे अजर रह्यो हवे कहनो ॥ प्र० ॥६॥ प्रभुजी ने मेहर ते रस चाख्यो अन्तरंग सुख पाम्यो रे। मानविजय वाचक इमि जंपे हुवो मुझ मन काम्यो॥प्र०॥७॥

श्रीपार्श्वजिन स्तवन।

शिवपुर वासी परमविलासी तारो पारसनाथ, अब मोहे तारो (टेक)

सर्प नागणी जलते प्रभु दिया नवकार सुनाय। धरणिन्द पउमावई थमाए ऐसे श्रीजिनराय ॥ १ ॥ हो शिव० ॥ नीलवर्ण तनु शोभतो रे परमानन्द प्रकाश। वीतराग विकाशी ऐसे नहीं देखा प्रभु पास॥२॥ हो शिव० ॥ भव नाटक में बहुला करतो आयो प्रभु दरबार। परमकृपा के सागर निरखे सुखकर श्रीहितकार ॥३॥ हो शिव० ॥ भवसागर में भमर कर्म से डूब रही मेरी जाज। दीन दयालु दया करी तारो तारक तुम जिनराज ॥४॥ हो शिव० ॥ कर्मों ने मुझे ऐसा फँसाया धर्म कर्म दिया रोक। श्रीदरबार में आन खड़ा हूँ दूर करो सब ही शोक ॥५॥ हो शिव० ॥ संवत् गुणीसे तियोत्तर कृष्ण फाल्गुन दशमी सार। फलोदी नगर में दर्शन पाया चित्य है अति मनोहार ॥६॥ हो शिव० ॥ पारसनाथ सुपारस तुम ही लोहा है यह क्षेम। चरण शरण मही आज उमायो पूर्णानन्द सुप्रेम ॥७॥ हो शिव० ॥

अथ लघुशांतिस्तवः।

शांतिं शांतिनिशांतं, शांतं शांताशिवं नमस्कृत्य।

स्तोतुः शांतिनिमित्तं, मंत्रपदैः शांतये स्तौमि ॥ १॥
ओमिति निश्चितवचसे, नमो नमो भगवतेऽर्हते पूजाम्
शांतिजिनाय जयवते,यशस्विने स्वामिने दमिनाम्॥२॥
सकलातिशेषकमहासंपत्तिसमन्विताय शस्याय ।
त्रैलोक्यपूजिताय च, नमो नमः शांतिदेवाय ॥ ३॥
सर्वामरसुसमूह,-स्वामिकसंपूजिताय निजिताय। भुव
नजनपालनोद्यत-त्तमाय सततं नमस्तस्मै ॥ ४॥
सर्वदुरितौघनाशनकराय सर्वाशिवप्रशमनाय । दुष्ट
ग्रहभूतपिशाचशाकिनीनां प्रमथनाय ॥ ५॥ यस्येति
नाममंत्र-प्रधानवाक्योपयोगकृततोषा । विजया कुरुते
जनहितमिति च नुता नमत तं शांतिम् ॥ ६॥ भव
नमस्ते भगवति, विजये सुजये परापरैरजिते। अपरा
जिते जगत्यां, जयतीति जयावहे भवति ॥ ७॥ सर्व
स्यापि च संघस्य, भद्रकल्याणमंगलं प्रददे । साधू
च सदाशिव-सुतुष्टिपुष्टिप्रदे जीयाः ॥ ८॥ भव्या
कृतसिद्धे, निर्वृतिनिर्वाणजननि ! सत्वानाम् । अभय
प्रदाननिरते, नमोऽस्तु स्वस्तिप्रदे तुभ्यम् ॥९॥ भक्त
नां जन्तूनां, शुभावहे नित्यमुद्यते देवि ! । सम्यग्
ष्टीनां धृति-रतिमतिबुद्धिप्रदानाय॥ १० ॥ जिनशास
ननिरतानां,शांतिनतानां च जगति जनतानाम् । श्री
संपत्कीर्तियशो-वर्द्धिनि ! जय देवि विजयस्व॥ ११

सलिलानलविषविषधर- दुष्टग्रहराजरोगरणभयतः ।
राक्षसरिपुगणमारी , चौरेतिश्वापदादिभ्यः ॥ १२ ॥
अथ रक्ष रक्ष सुशिवं, कुरु कुरु शांतिं च कुरु कुरु सदे-
ति। तुष्टिं कुरु कुरु पुष्टिं कुरु कुरु स्वस्तिं च कुरुकुरुत्व-
म् ॥ १३ ॥ भगवति गुणवति शिवशांति-तुष्टिपुष्टि-
स्वस्तीह कुरु कुरु जनानाम् । ओमिति नमो नमो
हाँ हीँ हूँ हः यः क्षः ह्रीँ फुट् फुट् स्वाहा ॥१४॥ एवं
यन्नामाक्षरपुरस्सरं संस्तुता जया देवी । कुरुते शांतिं
नमतां नमो नमः शांतये तस्मै ॥ १५ ॥ इतिपूर्वसूरि-
दर्शित-मंत्रपदविदर्भितः स्तवः शांतेः । सलिलादिभ-
यविनाशी, शांत्यादिकरश्च भक्तिमताम् ॥ १६ ॥ यश्चै-
नं पठति सदा, शृणोति भावयति वा यथायोगम् । स
हि शांतिपदं यायात्, सूरिः श्रीमानदेवश्च ॥ १७ ॥
उपसर्गाः क्षयं यांति छिद्यंते विघ्नवल्लयः । मनः प्रस-
न्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ १८ ॥ सर्वमंगलमां-
गल्यं, सर्वकल्याणकारणम् । प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं
जयति शासनम् ॥१९॥

॥ अथ श्रीगौडीपार्श्वजिन वृहत्स्तवन लि० ॥

॥ दोहा ॥

वाणी ब्रह्मावादिनी, जागै जगविख्यात ।
पासतणा गुण गावतां, मुज मुख वसज्यो मात ॥१॥

नारंगे अहिमिजपुरे, अहिमदाबादे पास ।
गौडीनो धणी जागतो, सहुनी पूरे आस ॥२॥
सुभ वेला सुभदिन घडी, महुरत एक मंडाण।
प्रतिमा ते इह पासनी, थई प्रतिष्ठा जाण ॥ ३॥

॥ ढाल ॥

गुणहि विशाला मंगलीक माला, वामानो सु
साचोजी । धण कण कंचण मणि माणक दे, गौडी
धणी जाचोजी ॥ गु० ॥ ४ ॥ अणहिलपुर पाटण मां
प्रतिमा, तुरक तणे घर हुंतीजी । अश्वनी भूमि अ
नी पीडा, अश्वनी चालि विगूती जी ॥गु०॥५॥ जा
तो जक्ष जेहनै कहिये, सुहणो तुरकनें आपैजी । पा
जिनेसर केरी प्रतिमा, सेवक तुझ संतापे जी ॥गु०॥
प्रहऊठीने परगट करजे, मेघा गोठीने देजे जी। अधि
म लेजे ओछो म लेजे । टका पांचसै लेजे जी ॥ गु
॥ ७ ॥ नहीं आपिस तो मारीस मुरडीस, मोरं
मंथास्याजी । पुत्र कलत्र धन हय हाथी तुम, ला
धणी घर जास्यैजी ॥गु०॥८॥ मारग पहिलो तुम
मिलस्यै, साहथवाह जे गोठीजी । निलवट टीलो चा
चोड्या, वस्तु वहै तसु पोठी जी ॥गु०॥९॥

॥ दोहा ॥

मनसुं बीहनो तुरकडो, मांनें वचन प्रमाण ।

पीपीने सुहणा तणो, संभलावैं सहि नाण ॥१०॥
पीपी बोले तुरकने, यहा देव है कोय।
अप सनाथ परगटकरो, नहींतर मारैं तोय ॥११॥
पाछली रात परोढीये, पहली पंथे पाज।
सुहणा माहें सेठने, संभलावै जखराज ॥१२॥

॥ ढाल ॥

एम कही जक्ष आयो राते, सारथवाहने सुहणें जी। पास तणी प्रतिमा तुं लेजे, लेतो मिरमत घूणे जी ॥ एम० ॥ १३॥ पांचसे टका तेहने आपे, अधिको म आपिस वारुजी। जतन करी पहुंचाडे थानिक, प्रतिमा पण संभारिजी ॥एम०॥१४॥ तुझने होसी बहु फलदायक, भाई गोठीने सुणजे जी। पूजीस प्रणमीश तेहमाबापा, प्रहउठीने थुणजे जी ॥ एम० ॥ १५ ॥ सुहणो देईने सुरचाल्यो, अपने थानक पहुंतोजी। पाटण माहें सारथवाहु, हींडे तुरकने जोतोजी ॥एम०॥१६॥ तुरक जातां दीठो गोठी, चोखा तिलक लिलाटे जी। संदेसा पहुंतो साचो जाणि, बोलावे मर्हुलाटे जी ॥एम०॥१७॥ मुझ घरि प्रतिमा तुझनें आपुं, पास जिणेसर केरीजी। पांचसे टका जो मुझ आवे, मोल न मागुं फेरीजी ॥ एम० ॥ १८॥ नाणो देई प्रतिमा लेई, थानक पहुंतो रंगेजी। केसरचंदन मृगमद घोली, विधसुं पूजा रंगेजी

॥ एम० ॥ १९ ॥ गादी रूडी रूनी फीणी, ते मांहि प्रतिमा राखे जी। अनुक्रम आव्या परिकर मांहे, श्रीसंघने सुरसाखे जी ॥ एम० ॥ २० ॥ ओच्छव दिन दिन अधिका थाये, सत्तर भेद सनात्रो जी। ठाम २ ना दरसण करवा, आवे लोक प्रभाते जी ॥ एम० ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

इकदिन देखे अवधिसुं, परिकरपुरनो भङ्ग।
जतन करूं प्रतिमा तणो, तीरथ अछे अभंग ॥२२॥
सुहणो आपे सेठने, थल अटवी उजाड।
महिमा थास्ये अति घणो, प्रतिमा तिहां पुहचाड़॥२३॥
कुशल खेम तिहां अछे, तुम्हनें मुझनें जाणि।
संका छोडी काम करि, करतो मकरि संकाणि ॥२४॥

॥ ढाल ॥

पास मनोरथ पूरा करै, वाहण एक वृषभ जोते। परिकरथी परियाणों करै, एक थल चढ़ि बीजो उतरै ॥ २५ ॥ बारे कोस आव्या जेतलै, प्रतिमा नवि चालै तेतलै। गोठी मनह विमासण थई, पास भुवन मंडावूं सही ॥ २६ ॥ आ अटवी किम करूं प्रयाण, कुदको कोई नदीसै पाहाण। देवल पास जिनेसर तणो, मंडावुं किम घरथै विणो ॥२७॥ जल विन श्रीसंघ रहस्ये किहां, सिलावटो किम आवे इहां। चिंतातुर

पयो निद्रा लहे, पक्षराज आवीने कहे ॥२८॥ गोहली ऊपर नांणो जिहां, गरथ घणो जाणि जे तिहां। स्वस्तिक सोपरी सहीनांण, पाहाण तणी उझ्झरवे खाण ॥२९॥ श्रीफल सजल तिहां किल जूओ, अमृत जल नीसरसी कूओ। ताराकृवा तलो इह सहीनांण, भूमि पड्यो छे नीलो छाण ॥ ३० ॥ सिलावटो सीरोहि वसे, कोइ पराभविषो किस मेसे। तहां थकी तूं इहां आण जे, सत्यवचन मारो मांनजे ॥ ३१ ॥ गोठीनो मन थिर थापियो। सिलावटने सुहणो दियो। रोगगमाउंने पूर्ण आस। पास तणो मंडे आवास ॥३२॥ सुपन मांहे मान्यों ते वेण, हेमवरण देखाड्यो नेण। गोठी मनह मनोरथ हुआ, सेलावटने गया तेड्या ॥ ३३ ॥ सिलावटो आवे हरखें, जोमे खोरखांडघृत धरमो। घडे घाट करें कोरणी, लगन भले पाया रोपणी ॥ ३४ ॥ प्रेम २ तिथी पूतली, नाटक कौतुक करती रली। रंग मण्डप रलियामणो रंग, जोतां मानवनो मन चंग ॥३५॥ नीपायो पूर्ण प्रासाद, स्वर्गसमो मंडे प्रासाद। दिवस विचारि ईण्डो घणो, तमरिगत देवल ऊपर चढ्यो ॥३६॥ सुभ लगन शुभ वेला वास, पव्वासण बैठा श्रीपास। रहिमा मोटी सेठ समान, एकलमिल्ल वगडे रहे थान

॥ ३७ ॥ वात पुराणी में सांभली , तवन मांहि सूधी
सांकली । गोठी तणा गोतरीया अछै, यात्रा करीने पछै
पछै ॥ ३८ ॥

॥ दूहा ॥

विघनविडारण यक्ष जगि , तेहनो अकल सरूप ।
प्रीत करै श्री संघने , देखाडै निज रूप ॥३९॥
गिरुओ गौडी पास जिन , आपै अरथभंडार ।
सानिध करे श्रीसंघने , आशा पूरणहार ॥४०॥
नील पलाणै नील हय, नीलो थइ असवार ।
मारग चूका मानवी, वाट दिखावणहार ॥४१॥

॥ ढाल ॥

धरण अढार तणो लहै भोग, विघन निवारै टाले
रोग । पवित्र थई समरै जे जाप , टालै सगला पा
संताप ॥४२॥ निरधनने घरि धननो सूत , आपै अ
पुत्रीयाने पुत्र । कायरने सूरापण धरै , पार उतारै
च्छी धरै ॥ ४३ ॥ दोभागीने दै सोभाग , पग विहूणा
आपै पग । ठाम नहीं तेहने दे ठाम, मन वंछित पूरै अभि
राम ॥ ४४ ॥ निराधार ने दे आधार, भवसायर उता
पार । आरतीयानि आरत भंग । धरे ध्यान ते
सुरंग ॥४५॥ समरथ्या सहाय दीये यक्ष राज,
अछै दिवाज । बुद्धि हीणा ने बुद्धि प्रकाश ,

वन विलास ॥ ४६ ॥ दुखियाने सुखनो दातार, भव
जग रंजण अवतार। बंधन तूटे बेडी तणा, श्री
वनाम अक्षर समरणां ॥४७॥

॥ दोहा ॥

श्रीपार्श्व नाम अक्षर जपे, विश्वानर विकराल।
हस्तियूथ दूरे टले, दुर्द्धर सिंह सियाल ॥४८॥
घोर तणा भय चूकवे, विष अमृत उडकार।
विष धरनो विष ऊतरे, संग्रामे जयजयकार ॥४९॥
रोग सोग दालिद्र दुख, दोहग दूर पुलाय।
परमेसर श्री पासनो, महिमा मन्त्र जपाय ॥५०॥

॥ ढाल ॥ (वडखानी चाल)

उंजितु २ उंज उपसम धरी, ॐ ह्रीं श्रीं श्रीपार्श्व
अक्षर जपंते। भूतने प्रेत झोटिंग व्यंतरसुरा, उपस-
धार इकवीस गुणंते ॥उं०॥५१॥ दुर्द्धरारोग सोगाजरा
जमने, ताव एकांतरा दुत्तपंते। गर्भबंधन सर्ण सर्प
विच्छू विषं, बालिका बालनेया भलंते ॥उं०॥५२॥
शाइगी शाइणी रोहिणी रंकणी, फोटका मोटका दोष
दंते। दाढ उंदर तणी घोल नोला तणी, स्वान सीयाल वि-
कराल दंते ॥उं०॥५३॥ धरणेंद्र पद्मावती समरशोभा-
वती, वाट आघाट अटवी अटंते। लखमी लीला मिले
सुजस वेलाउले, सफल आसा फले मन हसंते ॥ उं०

॥५४॥ अष्ट महाभय हरे कानपीडा टले, ऊतै सीसग भणंते । वदत वर प्रीतसुं प्रीति विमल प्र पास जिण नाम अभिराम मन्त्रै ॥ उंजितु ॥
इति श्रीगोडी पार्श्वनाथजी वृद्ध स्तवन सम

गौतमस्वामी का छंद।

वीर जिनेश्वर केरो शिष्य, गौतम नाम ज शदिस । जो कीजे गौतम नो ध्यान, तो घर नवे निधान ॥ १ ॥ गौतम नामे गिरिवर चढे वाञ्छित लीला संपजे ।गौतम नामे नावे रोग, नामे सर्व संजोग ॥ २ ॥ जे वैरी विरुआ वंकड नामे नावे ढूकडा । भूत-प्रेत नवी मंडे प्राण, ते ना कहुं वखाण ॥ ३ ॥ गौतम नामे नीरमल गौतम नामे वाधे आय । गौतम जिन शासन श गौतम नामे जय जयकार ॥ ४ ॥ शाल दाल घृत गोल, मन वाञ्छित कापडत बोल । घरढ़ निरमल चित्त, गौतम नामे पुत्र विनीत ॥५॥ उदयो अविचल भाण, गौतम नाम जपो जग मोटा मंदिर मेरु समान, गौतम नामे सफल ॥ ६ ॥ घर मंगल घोडानी जोड, वारु विलहे कोड । महियल माने मोटा राय, जो तुठे

॥ ५४ ॥ अष्ट महाभय हरे कानपीडा टले, ऊतरे श...
सीमग भणंते । यदत यर प्रीतार्नु प्रीति विमल प्रभु, ...
पाम जिण नाम अभिराम मन्ते ॥ उंजितु ॥ ५५ ॥
इति श्रीगोडी पार्श्वनाथजी वृद्ध स्तवन मम्पूर्ण ।

गोतमस्वामी का छंद।

वीर जिनेश्वर केरो शिष्य, गौतम नाम जपो नि...
शदिस । जो कीजे गौतम नो ध्यान, तो घर विलसे
नवे निधान ॥ १ ॥ गौतम नामे गिरिवर चढे, म...
घान्छित लीला संपजे । गौतम नामे नावे रोग, गौतम
नामे सर्व संजोग ॥ २ ॥ जे वैरी विरुआ वंकडा, ...
नामे नावे ढूकडा । भूत-प्रेत नवी मंडे प्राण, ते गौतम
ना करूं वखाण ॥ ३ ॥ गौतम नामे नीरमल काय
गौतम नामे बाधे आय । गौतम जिन शासन शणगार
गौतम नामे जय जयकार ॥ ४ ॥ शाल दाल सुर...
घृत गोल, मन वान्छित कापडन तोल । घरसूं घर...
निरमल चित्त, गौतम नामे पुत्र विनीत ॥ ५ ॥ गौतम
उदयो अविचल भाण, गोतम नाम जपो जग जाण
मोटा मंदिर मेरु समान, गौतम नामे सफल विहा...
॥ ६ ॥ घर मंगल घोडानी जोड़, वारु विलहे वान्छि...
कोड़ । महियल माने मोटा राय, जो तुठे गोतम

ए ॥ ७ ॥ गौतम प्रणम्यां पातिक टले, उत्तम नरनी
तन मीले । गौतम नामे नीरमल ज्ञान, गौतम नामे
वे वान ॥ ८ ॥ पुन्यवंत अवधारो सहु, गुरु गौतमना
ण छे बहु । कहे लावण्य समय कर जोड़, गौतम तुठे
रति कोड़ ॥९॥ इति ॥

देसावगासी का पच्चक्खाण ।

श्रावक के तीन सामायिक लेनी हो तो तथा जितनी ज्यादा पचखनी हो तो उस की विधि—

उपासरे में जा कर तथा घर के एकान्त स्थान में काना हो तो प्रथम काजा निकाल कर ऊठामण एक वारू गर कर नवकार मन्त्र देवे—

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसी-
हिआए मत्थएण वन्दामि ।

कह कर इरियावहिया करे—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरियावहियं प-
डिक्कमामि ? इच्छं । इच्छामि पडिक्कमिउं, इरियावहि-
याए विराहणाए गमणागमणे पाणक्कमणे बीयक्कमणे
हरियक्कमणे ओसा उत्तिंग पणगदग मट्टीमक्कडा संता-
णा संकमणे, जे मे जीवा विराहिया, एगिंदिया, बेइं-
दिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया,

वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियावि
किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जी
वियाओ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

तस्स उत्तरीकरणेणं पायच्छित्तकरणेणं विसोहि
करणेणं विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घाय
ट्ठाए ठामि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छी
एणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए
समुच्छाए। सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेल
चालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं। एवमाइएहिं आग
रेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। ज
अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव का
ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥१॥

वार [illegible] १ या एक लोगस्स का काउस्सग्ग करे, का
स पार कर प्रग[illegible] लोगस्स " कहना चाहिये—

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरि
हंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥१॥ उसभमजि
च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपा
जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदं
सीअलसिज्जंस वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जि
धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं

मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

फिर एक खमासमण देकर-इच्छाकारेण संदिसह भगवन् देसावगासिय मेशा मुँहपती पडिलेहुँ, मुँहपती पडिलेवे. फिर खमासमण देकर-देसावगासी संदिसाउँ, दूसरा खमासमण देकर देसावगासी ठाउँ, तीन नवकार गुणे, गुरुकर- इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! देसावगासी उच्चरावो जी. उस का पाठ नीचे प्रमाणे---

अह णं भंते ! तुम्हाणं समीवे देसावगासियं पच्चक्खामि दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ, दव्वओ णं देसावगासियं, खित्तओ णं उग्गा अणत्थणा, कालओ णं मुहुत्तधारणा प्रमाणे जाव नियमं पच्चक्खामि, भावओ णं जाव गहेण न गहिज्जामि, छलेण न छलिज्जामि सन्निवाय वेताइ रायसेवाया, एसो परिणामो न पडिवज्जइत्ता अभिगइ अन्नत्थणाभोगेणं सहसागा-

लोगस्सं उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउव्वीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु॥ ७ ॥

फिर जगउ सभी का पाठ बोलना

जयउ सामिय जयउ सामिय, रिसह सेत्तुंजि उज्जिंति पहु नेमिजिण जयउ वीर सच्चउरि-मंडण ॥१॥ भरुअच्छहि मुणिसुव्वय, मुहरिपास दुह दुरिय-खंडण। अवरविदेहिं जे तित्थयरा, चिहुंदिसि विदिसि जं केवि। तीआणागय-संपइय च वंदूं जिण सव्वेवि॥२॥

तेल नरकना मुख के गाणो फीने । एकासणो आंबिलनो काउ-सग्ग नौली एकलठाणो पूजा निविय नरकागमो पेलमी मार्ग दुःखी विशेष कृत चोविहार फागि १ गाथा ऊपर प्रमाणे ।

॥ श्री वासक्षेप पूजा ॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥

शासनपति अरिहा नमुं, धर्मधुरंधर धीरोजी ॥ देशना अमृत वरसता, निज वीरज गह धीरोजी ॥उल्लालो॥ वर समय निर्मल ज्ञान भासन, सर्वभाव प्रकाशना । निज शुद्ध श्रद्धा आत्मभावे, चरण थिरता वासना ॥ जिन नाम धर्म प्रभाव अतिशय, प्रातिहारज शोभता ॥ जग जंतु करुणावंत भगवंत, भविक जनने थोभता ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मने अनंतानंतज्ञानशक्तये जन्म जरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय अरिहंतपदे वास-क्षेपं यजामहे स्वाहा ॥१॥

नमोऽर्हत्० ॥ सकल करम मल क्षयकरी, पूरण शुद्ध स्वरूपो जी ॥ अव्याबाध प्रभुता मयी, आतम संपत्ति भूपोजी ॥ १ ॥ (उल्लालो) जेह भूप आतम सहज संपत्ति, शक्ति व्यक्ति पणे करी । स्वद्रव्य क्षेत्र स्वकाल भावे, गुण अनन्ता आदरी । सुस्वभाव गुण पर्याय परिणति, सिद्ध साधन परभणी । मुनिराज

जरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय चारित्रपदं वासक्षेपं यजामहे स्वाहा ॥८॥

इच्छा रोधन तप नमो, बाह्य अभ्यंतर भेदेजी ॥ आतम सत्ता एकता, पर परिणति उच्छेदे जी ॥ १ ॥ (उलालो) उच्छेदे कर्म अनादि संतति, जेह सिद्धपणुं धरे। योग संगे आहार टाली, भाव अक्रियता करे। अंतर मुहूर्त तत्व साधे, सर्व संवरता करी। निज आत्म सत्ता प्रगट भावे, करो तप गुण आदरी ॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मनेऽनन्तानन्तज्ञानस्वरूपाय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय तपपदं वासक्षेपं यजामहे स्वाहा ॥९॥ इति

अथ नव पदों के नव चैत्यवंदन, नव स्तवन तथा नव थुइ ॥

॥ अथ अरिहंतपद चैत्यवंदन ॥

जय २ श्रीअरिहंत भानु, भविकमल विकासी॥ लोकालोक अमूर्ति मूर्ति, सम धातु प्रकाशी ॥१॥ समुद्घात शुभ केवले, क्षयकृत मलराशी. शुक्ल चरम शुचि पादसे, भयो वर अविनाशी ॥ २ ॥ अंतरंग रिपुगण हणीए, हुए अप्पा अरिहंत ॥ तसु पद पंकज में रमत, हीरधरम नित संत ॥३॥ इति ॥ 'अविनि नामनिक्षे'ने समोऽर्हन नव ॥

ॐ ह्रीं श्री परमात्मनेऽनन्तानन्तज्ञानस्वरूपाय जन्म जरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय दर्शनपदं वामहे यजामहे स्वाहा ॥३॥

नमोऽर्हत०॥ भव्य नमो गुण ज्ञानने, स्वपर प्रकाशक भावेजी । पर जय धर्म अनन्ता, भेदाभेद स्वभावेजी ॥ १ ॥ (उलालो) जे मुख्य परिणति सकल ज्ञायक बोधक भाव विलच्छणा । स्याद्वाद-संगीनत्व- रंगी, प्रथम भेदा भेदता । सविकल्पने अविकल्पवस्तु, सकल संशय छेदना ।

ॐ ह्रीं श्री परमात्मनेऽनन्तानन्तज्ञानस्वरूपाय जन्म जरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय ज्ञानपदं वामहे यजामहे स्वाहा ॥७॥

नमोऽर्हत० ॥ चारित्र गुण वली वली नमो, तत्व रमण जसु मूलोजी ॥ पर रमणीय पणुं टले, सकल सिद्ध अनुकूलोजी ॥१॥ (उलालो) प्रतिकूल आश्रव त्याग संजम, तत्व थिरता दम मयी ॥ शुचि परम खंति मुत्ति दस पद, पंच संवर उपचयी ॥सामायिक दिक भेद धर्मे, यथाख्याते पूर्णता ॥ अकषाय अकलुष अमल उज्वल, काम कश्मल चूर्णता ॥

ॐ ह्रीं श्री परमात्मनेऽनन्तानन्तज्ञानस्वरूपाय जन्म

जरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय चारित्रपदं वास-
क्षेपं यजामहे स्वाहा ॥८॥

इच्छा रोधन तप नमो, बाह्य अभ्यंतर भेदेजी ॥
आतम सत्ता एकता, पर परिणति उच्छेदे जी ॥ १ ॥
(उलालो) उच्छेदे कर्म अनादि संतति, जेह सिद्धपणु
वरे । योग संगे आहार टाली, भाव अक्रियता करे ।
अंतर मुहूरत तत्व साधे, सर्व संवरता करी । निज
आत्म सत्ता प्रगट भावे, करो तप गुण आदरी ॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मनेऽनन्तानन्तज्ञानस्वरूपाय जन्म-
जरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय तपपदं वासक्षेपं
यजामहे स्वाहा ॥९॥ इति

अथ नव पदों के नव चैत्यवंदन, नव स्तवन तथा नव थुइ ॥

॥ अथ अरिहंतपद चैत्यवंदन ॥

जय २ श्रीअरिहंत भानु, भविकमल विकासी ॥
लोकालोक अरूपि रूपि, सम वस्तु प्रकाशी ॥१॥ स-
मुद्घात शुभ केवले, क्षयकृत मलराशी, शुक्ल च-
रम शुचि पादसे, भयो वर अविनाशी ॥ २ ॥ अंतरंग
रिपुगण हणीए, हुए अप्पा अरिहंत ॥ तसु पद पं-
कजमें रमत, हीरधरम निज संत ॥३॥ इति ॥ 'अर्हि-
त्ति नामसिद्धं'से नमोऽर्हत् तक ॥

मृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय चारित्रपदं यास-
पजामहे स्वाहा ॥८॥

इच्छा रोधन तप नमो, बाह्य अभ्यंतर भेदेजी ॥
आतम सत्ता एकता, पर परिणति उच्छेदे जी ॥ १ ॥
(ढलालो) उच्छेदे कर्म अनादि संतति, जेह सिद्धपणुं
रे। योग संगे आहार टाली, भाव अक्रियता करे।
अंतर मुहूरत तत्व साधे, सर्व संवरता करी। निज
आत्म सत्ता प्रगट भावे, करो तप गुण आदरी ॥
ॐ ह्रीं श्री परमात्मनेऽनन्तानन्तज्ञानस्वरूपाय जन्म-
जरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय तपपदं यासभेरं
पजामहे स्वाहा ॥९॥ इति

अथ नव पदों के नव चैत्यवंदन, नव स्तवन
तथा नव थुइ ॥

॥ अथ अरिहंतपद चैत्यवंदन ॥

जय २ श्री अरिहंत भानु, भविकमल विकासी।
लोकालोक अरूपि रूपि, सम वस्तु प्रकासी ॥१॥
मुहूर्त्तान शुभ ध्यान, नाणरूप मलरासी, शुभ
रम गुणि पाटेस, भयो पर अविनासी ॥ २ ॥ अंत
रिपुगण हणीए, हुआ अप्पा अरिहंत ॥ तसु पद
पंकज में रमन, हीरधरम नित संत ॥३॥ इति ॥
श्रि नामसिद्धेभ्ये नमोऽर्हत सध ॥

ॐ ह्रीं श्री परमात्मनेऽनन्तानन्तज्ञानशक्तये जन्म
जरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय दर्शनपदं
यजामहे स्वाहा ॥३॥

नमोऽर्हन्०॥ भव्य नमो गुण ज्ञानने, स्वपर प्रकाशक
भानेजी । पर जय धर्म अनन्ता, भेदाभेद स्वभावे
॥ १ ॥ (उल्लालो) जे मुख्य परिणति सकल ज्ञायक
बोधक भाव विलच्छना । स्याद्वाद-संगीतमय
प्रथम भेद भेदना । सविकल्पने अविकल्पवस्तु, सकल
संशय छेदना ।

ॐ ह्रीं श्री परमात्मनेऽनन्तानन्तज्ञानशक्तये जन्म
जरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय ज्ञानपदं
यजामहे स्वाहा ॥४॥

नमोऽर्हन्० ॥ चारित्र गुण वर्यो नमो नमो,
स्थान ज्ञान भूत्यारा ॥ पर स्वभाव वर्ते दले,
थिर अनुभवी ॥१॥ (उल्लालो) अविकृत
स्थान सत्तम, अर नियमा सत्ता वर्यो ॥ शुचि
भावि पूर्ण वत पद, पेग ठेवर पदपर्या॥सामायि
दिक भेद धर्म यथाख्यात पूर्णता ॥ शुद्धान
अरण अवल रमण काम अगम पूर्णता ॥

ॐ ह्रीं श्री परमात्मनेऽनन्तानन्तज्ञानशक्तये जन्म

॥ अथ अरिहंतपद स्तवन ॥

(नमो भवियण हो तो ध्याय कुशलसूरिंद, ए चाल)

थां सेवत सुख सहित तेज, कर्मांदु भेटे श्री अरिहंत ॥ मन मानो ॥ आदु समवमें समता भेद, करे आतमरी हिरदे श्रेत ॥म०॥१॥ वादर जागे मन वच जोग । मनु वे ही सूक्ष्म दूर मनुयोग ॥ म० ॥ सूक्ष्म काय में मन वच रोक, जिन योगे जाकूं कर रोक ॥ म० ॥ २ ॥ ऐसो ध्यावे मन व्यापार, वेदेंने भव पार ॥ म० ॥ आदि समय रचो पनकसु और सूक्ष्म लखो सिण योग पर्याय ॥ म० ॥ ३ ॥ एहे योगथी समयें एक, हीना भेद गुणो कर टेक ॥म०॥ समयामेंले जोग निरोध, कृष्ण जो लाख जोगी बोध ॥ म० ॥ ४ ॥ वेदमसेनाहातना राग, कुशल कहूं श्रीजिनराय ॥म०॥ तेरमें गुणमें गुण सबै देव, आतमा जगकूं नितमेव ॥ म० ॥ ५ ॥ इति अरिहंतपद स्तवन ॥

॥ अथ अरिहंतपद स्तुति ॥

सकल द्रव्य पर्याय प्ररूपक लोकालोक सरूपो जी, केवलज्ञानकी ज्योति प्रकाशक अनंत गुणे करि पूरो जी ॥ सांजे भव थानक आराधी गोत्र तीर्थंकर नूरो जी, बारे गुणां करि एहवा भूरो

है ॥ इति अरिहंत पद स्तुति ॥

॥ अथ सिद्धपद चैत्यवंदन ॥

श्रीशैलेशी पूर्व अंत, तनुत्रिभाग भागी ॥ पूर्व प्रयोग प्रसंग में, ऊरध गति जागी ॥ १ ॥ समय एक में लोकांत, गये निगुण निरागी ॥ चेतनभूपे आत्मरूप, सुदिशा लही सागी ॥ २ ॥ केवल दंसणनाणथी ए, रूपातीत स्वभाव ॥ सिद्ध भये तसु हीरधर्म, वंदे धरि शुभ भाव ॥ ३ ॥ इति सिद्धपद चैत्यवंदन ॥

॥ सिद्धपद स्तवन ॥

(धरि महिला ऊपर मेह भरोसे पाजली, ए चाल)

अष्ट करम वन दाह होता कोई पूर्वमें ॥ म्हा-
लाल हो० ॥ उत्कृष्टो करे दाम सयोगी धाममें ॥
म्हा० स० ॥ अजोगी के अंत सजे भविजन्यता ॥
म्हा० म० ॥ शैलेशी लहे धर्म दर्शे गुण श्रेणिता ॥
म्हा० द० ॥ १ ॥ ह्रस्वाक्षर पंच काल रहे ते योगमें ॥
म्हा० र० ॥ तेरम प्रकृतिनो अन्त करीने अन्तमें ॥म्हा-
क० ॥ गमन करे नगरक्षमें अचित्य होयने ॥ म्हा०
अ० ॥ पुव्वपयोग असंग स्वभाव अपेखने ॥ म्हा०
स्व० ॥ २ ॥ इषुगुण नय परमाण योजन लक्षे कही ॥
म्हा० यो० ॥ वर्तुल विशदा भास निरालंबन सही ॥
म्हा० नि० ॥ मध्ये योजन अष्टघनाकृति अन्तमें ॥

धारी जीवर्क, आचारिजपद सार । तिन कुं वंदे हीर धर्म, अहोनर मौ धार ॥ ३ ॥ इति आचार्यपद चैत्यवंदन ॥

॥ अथ आचार्य पद स्तवन ॥

(नणदल चींदली रो, ए चाल)

खंती खडगधी जेणे, हणयो क्रोध सुभट सम देणे हो, गणपति गुण पेखो ॥ टेर ॥ मान महागिरि घपरे, अतिशोभन मद्दव वपरे हो ॥ग० ॥१॥ दंभरूप विसवेली, घर अज्जव कीनें टेली हो॥ग०॥ मुच्छा वेलधी भरियो, लोह सागर मुत्तें तरियो हो ॥ग०॥२॥ मदन नाग मद होनो, जिण दम शाम जंत्रें कीनो हो ॥ग०॥ मोह महामल्ल माड्यो, पुण वैराग मुगरें पाड्यो हो ॥ ग० ॥३॥ दोस गयंद यम कीनो, धरि उपशम अंकुस लीनो हो ॥ग०॥ अंतरंग रिपु भेला, सुरधर विण जिण निपेला हो ॥ग०॥४॥ रस कृति गुणधी लीनो, सूत्र अरथे आगम पीनो हो ॥ ग० ॥ आचारजपद ग्रहघो, धरी जीव कुशलता सेवो हो ॥ ग० ॥ ५ ॥ इति आचार्यपद स्तवन ॥

॥ अथ आचार्यपद स्तुति ॥

पंचाचार कुं पाले उजयालें दोष रहित गुणधारी जी । गुण छत्तीसे आगमधारी द्वादश अंग विचारी

म्हा० घ० ॥ मक्षी पक्ष थी हीन भर्णी सिद्धांतमें
म्हा० भ० ॥ ३ ॥ तनुपब्भारा नाम शिलासें जोयनें
म्हा० शि०॥ युग लोचन में भाग अलोक कुं स्पर्श
॥ म्हा० अ० ॥ लघु अंगुल पत्तीस प्रमाणऽवगा
॥म्हा० प्र० ॥ वृद्धि धनुशतपंच गुणासे हीनना ॥म्हा
॥गु०४॥ मिलिया एकमें अनंत आबाधा ना लही ॥म्हा
भ० ॥ अष्ट प्राण धरि रम्य सिरोही जो सही ॥म्हा
मि० ॥ पीजो पद श्री सिद्ध धरो मनगेह में ॥ म्हा
धरो०॥ कुशल भये जग जीव मिलोगा तेहमें ॥म्हा
मि० ॥ ५ ॥ इति सिद्धपद स्तवन ॥

॥ सिद्धपद स्तुति ॥

अष्ट करमकुं दमन करीनें गमन कियो शिववा
जी । अव्याबाधे सादिअनादि चिदानंद चिदरामीजी
परमातम पद पूरण विलासी अघ घन दाघ विना
जी । अनंत चतुष्टय शिवपद ध्यावो केवलज्ञा
नामीजी ॥१॥ इति सिद्धपद स्तुति ॥

॥ तृतीय आचार्य पद चैत्यवंदन ॥

जिन पद कुल सुन्दरस अनिल । सिमरण गु
धारी । प्रथम सयम गन सोहकी । जिण में चमुधारी
॥ १ ॥ उत्यादिक जिनराज नाम । सवनत किया
अब कुर्च पार्श्व पर्चन । अगजन सिम्हारी ॥ २ ॥ पंच

धारी जीवकं, आचारिजपद सार । तिन कुं वंदे हर
धर्म , अष्टोतर सौ वार ॥ ३ ॥ इति आचार्यपद चै
त्यवंदन ॥

॥ अथ आचार्य पद स्तवन ॥

(नणदल चींदली ने, ए चाल)

पंचाँ लक्षणथी जेणे, हणो क्रोध सुभट सम दे
हो, गणपति गुण पेखो ॥ टेर ॥ मान महागिरि चगे
अतिशोभन मदव वपरे हो ॥ग० ॥१॥ दंभरूप विम
वेली, पर आजव काटि टेली हो॥ग०॥ मुच्छा वेलथ
भरियो, लोह सागर मुत्ते तरियो हो ॥ग०॥२॥ मदन
नाग मद हीनो, जिण दम साम जंत्र कीनो हो ॥ग०
मोह महामल्ल माडयो, पुण वैराग मुगरें पाडयो हो ॥
ग०॥३॥ दोस गयंद वस कीनो, धरि उपशम अंकुश
लीनो हो ॥ग०॥ अंतरंग रिपु भेगा, सुरधर विण जिण
निवेसा हो ॥ ग० ॥४॥ रस शृति गुणधी लीनो, गुण
अरथ आगम वीलो हो ॥ ग० ॥ आचारजपद एह
धो, धरो जीव कुशलता सेवो हो ॥ ग० ॥ ५ ॥ इति
आचार्यपद स्तवन ॥

॥ अथ आचार्यपद स्तुति ॥

पंचाचार कुं पाले उजवाले दोष रहित गुणधारी
सी । गुण छत्तीसे आगमधारी द्वादश अंग विचारी

जी। प्रबल सबल घन मोह हरणकूं अनिल समो गुण वाणी जी। क्षमा सहित जे संजम पाले आचारज गुण ध्यानी जी॥ इति आचार्यपद स्तुति॥

॥ चतुर्थ उपाध्यायपद चैत्यवंदन॥

भव धन श्री उवज्झाय राय, शठता घन भंजन। जिनवर दिसत दुवाल संग, कर कृत जन रंजन॥१॥ गुणवण भंजण मग्ग गयंद, सुय शुणि कियगंजण। कुणालंभ लोय लोयणं, जत्थय सुयमंजण॥२॥ मह प्राणमें जिन लह्यो ए, आगममें पद तुर्य। निर्मे अहनिश हीरधर्म वंदे पाठक वर्य॥३॥ इति उपाध्यायपद चैत्यवंदन॥

॥ अथ उपाध्यायपद स्तवन॥

(सांवलिया अलगा रहोने, ए चाल)

तुमने रे तुरी तुमने, चेतन भावे भठने॥ तुरी तुमनें॥नुं मुझ पास यथुं आवे॥तु० तुमने कुण यन लावे, तु०॥ए आंकणी॥तो संग निज पंचेंद्रीनो, रथन धरम भुलाणो। नाणावरणी खय उपशमसे, भावे संघाणो॥ तु०॥१॥ द्रव्ये ने परजाते कीना, जाति नाम ध्यपदेश। एवंतो गो तुरग गजादिक, किण को उपदेश॥ तु०॥२॥ इत्यादिक बहु मुझकूं शंका, तें संगे लागी। नीलवर्णकी समता सेती, में भयो वी

रागी ॥ट्ट०॥३॥ उपकहिये हगियो भविपानो, प्रभियाँ लाभन श्राग। आणीनां मन पीड़ानामें, मायोचेनविलाय ॥ट्ट०॥४॥ श्राश्रिनये मर्मरोगें पर आगम, मुश्रस्रेते उपउज्फाग। तत् सेवातें हणि शठताकूं, चेतन कुशलता पाय ॥ ट्ट० ॥५॥ इति उपाध्याय स्तवन ॥

॥ अथ उपाध्यायपद स्तुति ॥

अंग इग्यार चउदं पूरव गुण पचवीसना धारी जी, सूत्र अरथधर पाठक कहिये जोग समाधि विचारी जी। तपगुण सुरा आगम पुन नम निर्दोषें नारी जी, गुनिगुण धारि गुण विचारी पाठक पूजो अविकारी जी ॥ १ ॥ इति उपाध्याय स्तुति ॥

॥ अथ पंचम साधुपद चैत्यवंदन ॥

दंसण नाण चरित्र करी, घर शिवपद गामी, धर्म शुक्ल शुचि ध्यानमें, आदिम ग्यप कामी ॥ १ ॥ गुणपमत अपमत्तनें, भये अंतरजामी। मानस इंद्रिय दमनभून, समदम अभिरामी ॥२॥ पालति घन गुणगणा भरयो ए, पंचम पद मुनिराज। नन्वदूंकाज समन हैं, ईशरधर्म के काज ॥ ३ ॥ इति साधुपद चैत्यवंदन ॥४॥

॥ साधुपद स्तवन ॥

(मालव मालन मनि कारी, ए चाल)

निरवाया जगजन कहें, और अडगादि वसन से

रोसहो ॥मुनींदजी॥ राग हीन भय तु करें ॥साधिपद॥ शिव रमणी में हेत हो ॥ मुनींदजी ॥ १ ॥ सर्व प्रमाद मजी रहे ॥ सा० ॥ छटे पूरव कोडहो ॥ मु० ॥ ज्ञान मोगम श्रागम करें ॥ सा० ॥ लघु काले गुण आदि हो ॥मु०॥२॥ स्त्यानर्द्धि निद्रा उदे ॥सा०॥ पामें कर्म निरंद हो ॥ मु० ॥ प्रचला निद्रा में रही ॥ सा० ॥ परम गुणना धाम हो ॥ मु० ॥३॥ स्थिति रम धाम प्रमुख भरें ॥ सा० ॥ जो गुण संख्यातीत हो ॥ मु० ॥ सो पिण निज जगमें लही ॥ सा० ॥ त्रिकरण गुणनां ध्यान हो ॥मु०॥४॥ रयण त्रय में शिव पावे ॥सा०॥ साधन पर घर जांयहो ॥ मु० ॥ साधु हुयइ मधु धर्म में ॥सा०॥ कुशल भवन जगमीयहो ॥मु०॥५॥इति पंचम साधुपद स्तवन ॥

। अथ साधुपद स्तुति ॥

सुमति गुपति कर संजम पाले दोष बयालीस टाले जी, षटकाया गोकुल रखवाले नवविध ब्रह्मचर्य पाले जी। पंच महाव्रत सूधा पाले धर्म शुक्ल उजवाले जी। क्षपक श्रेणि कर कर्म खपावे इस पद गुण उजवावे जी ॥ इति साधुपद स्तुति ॥

॥ छठे दर्शनपद चैत्यवंदन ॥

शुद्ध पुद्गल परिचय, अष्ट ...... संसार।

जी। प्रत्याख्याने सम तुल्य भाख्यो गणधर अरिहंत
सूरा जी, ए दर्शनपद नित नित वंदो भवसागर को
तीरा जी ॥ १ ॥ इति दर्शनपद स्तुति ॥ ६ ॥

॥ अथ ज्ञानपद चैत्यवंदन ॥

क्षियादिक रस राम चहि, मित ध्यादम नाण।
भाव मित्यापमें जिन जनित, सुण यास प्रमाण ॥१॥
मन सुण पबालि ओहि दोय, मण लोचन नाण। लोय
लोक स्वरूप जाण, इक केवल भाण ॥२॥ नाणावर्णी
नाशथी ए, केवल नाण प्रकाश। सप्तम पदमें हरखसे,
नित चाहत अवकाश ॥३॥ इति ज्ञानपद चैत्यवंदन॥

॥ अथ ज्ञानपद स्तवन ॥

(म्हारे आंगन उल्लरंगे, ए चाल)

जिनवर भाखित आगम भणिया, गणधर गणाधिप
गणिया जी ॥म्हारे ज्ञानपद मांहि॥ ये उत्तम पद मा
कहाणि, भविजन अहनिश चाहे जी ॥ म्हा० ॥ १ ॥
अज्ञानमय कुपंथ सुपंथा, देखावेण समंथा जी ॥म्हा०॥
देव कुदेव अहित हितकारी, जाणे जेण विचारी जी।
म्हा० ॥२॥ श्रुति मति दोय छे इंद्री माहे, जेण मांहि
विचार जी ॥म्हा०॥ ओहि मन केवल छे चाहे, जीव
प्रत्यक्ष सुखकार जी ॥म्हा०॥३॥ ज्ञान विनाश नहीं जस
जाणे, तागादिक अनुमाने जी ॥म्हा०॥ त्रिभुवन [illegible]

कृत्वा जोग सुधा मना, लब्धा मंख स्वभाव (सु०)
॥ ३॥ पर्याप्ता लघु जोग में, वृद्धि लहै जगमान (सु०)
मध्ये वसु समये लहै, अंते ढांले जाण (सु०) ॥३॥
सहकारी मानसमुख्या, कारण रम्य बलेग (सु०)ग्राम्य
धम्म प्रकारना, सप्त प्रभृन का तेन (सु०) ॥४॥ तो
धन रूपी भलो, चेतन संयम धाम (सु०)कर धन मित
पद धर्म में, कुशल भवतु अभिराम (सु०) ॥५॥
॥ इति चारित्र पद स्तवन ॥

अथ चारित्रपद स्तुति ॥

करम अपचय दूर खपावे आतम ध्यान लगावेजी,
धारे भावना सुधी भावे सागर पार उतारें जी। पटमंत्र
राज कुं दूर तजी ने चक्री संयम धारैंजी। एहवो
चारित्र पद नित वन्दो आतम गुण हितकारें जी।
इति चारित्र पद स्तुति ॥

नवमो तपपद चैत्यवन्दन ॥

श्रीऋषभादिक तीर्थनाथ, तद्भव शिव जाण। विधि
अंतेरपि याद्य, मध्य द्वादश परिमाण ॥१॥ वसु कर
मित आमो सही, आदिक लब्धि निदान। भेदे समता
युत विणे, दग्धन कर्म विमान। २। नवमो श्री तपपद
भलोए, इच्छा रोध सरूप। वन्दन से नित हीरधर्म
दूर, भवतु भवकूप ॥ ३॥ इति तप चैत्यवंदन ॥

अथ तपपद स्तवन ॥

बारम भेद भण्या जिनराजे, बाह्य तणा अगकाजे (शिव पदश्रेणि)। तिण भव सिद्धि तणा धर जाता। जिनवर पिण तपना कर्ता रे ॥१॥(शि०)समता सहिते जिनने भाखि,भलो कर्मचमू पिणहारिरे(शि०)जीव निकटे मैं कर्म कठोरा। दहे तप पावक का जोरा रे (शि०)॥२॥तप तरुवर ना कुसुम हे ऋद्धि, देव नर नी फलते सिद्धि रे(शि०) पाप सकल हे समनी राशी, उपमान से जाय नाशी रे(शिव०) ॥३ ॥जस्स पसाये लहिये घास। त्यागी ममता जग हित काम रे(शि०) मनि दृषट कुण साध्यना हीना. काम साने थार्न कि- यारे (शि०) ॥४॥इच्छा रोधन रूपी कहिये,तपपद ही मन वहिये रे (शि०) पाठक हीरधर्म कृपा से। नव पदे कुशला कुं भासे रे ॥शि०५॥इति तपपदस्तवन॥

अथ तपपद स्तुति ॥

इच्छारोधन तप से भाख्यो आगम नेहनो साखी जी, द्रव्य भावसे द्वादश दाखी जोग समाधी राखी जी। चेतन निजगुण परिणाम देखी तेहीज तपगुण दाखी जी, लब्धि सकलनो कारण देखी ईश्वर से मुख भाखी जी॥ इति तपपद स्तुति ॥

॥ अथ नवपद वृद्ध स्तवन ॥

सुरमणी सम सहु मंत्रमा, नवपद अभिरामी
लोय ॥ अहो नव० ॥ करुणासागर गुणनिधि, जा
अंतरजामी रे लोय ॥ अहो ज० ॥ १ ॥ त्रिभुवनज
पूजित सदा, लोकालोक प्रकासी रे लोय ॥ अ
लो० ॥ एहवा श्रीअरिहंतजी, नमुं चित्त उल्लासी
लोय ॥ अहो न० ॥ २ ॥ अष्ट करमदल क्षय क
थया सिद्ध सरूपी रे लोय ॥ अहो थ० ॥ सिद्ध न
भवि भावर्णा, जे आगम अरूपी रे लोय ॥ अहो ज
॥ ३ ॥ गुण छत्तीसे सोभना, सुंदर सुखकारी रे ल
॥ अहो सु० ॥ आचारज नीजे पदे, वंदू अविकारी
लोय ॥ अहो वं० ॥ ४ ॥ आगमधारी उपशामी,
दुविध आधारी रे लोय ॥ अहो न० ॥ चौथे पद
ठक नमो, संवेग समाधी रे लोय ॥ अहो सं० ॥
पंचाचार पालण परा, पंचाश्रव त्यागी रे लोय ॥ अ
पं० ॥ गुणरागी मुनि पांचमें, प्रणमुं बडभागी रे ल
॥ अ० प्र० ॥६॥ निज पर गुणने ओलखे, शुभ श्र
आवे रे लोय ॥ अ० श्र० ॥ छट्टे गुण दरसण नमो, आ
शुभ भावे रे लोय ॥ अ० आ० ॥७॥ ज्ञान नमो गु
सातमे, जे पंच प्रकारे रे लोय ॥ अ० जे० ॥ स
प्रकाशक दिनमणी, अज्ञान निवारे रे लोय ॥ अ० अ

॥ ८ ॥ आठमें चारित्रपद नमो, परभव निवारी रे लोय ॥अ० प०॥खांत्यादिक दस धर्मनो, जेह छे अधिकारी रे लोय ॥ अ० जे० ॥ ६ ॥ नवमे वलि तपपद नमो, बाह्याभ्यंतर भेदे रे लोय ॥अ० बा०॥ बांध्या काल अनंतना, जे कर्म उच्छेदे रे लोय ॥ अ० जे० ॥ १० ॥ ए नवपद बहुमानथी, ध्यावै शुभ भावे रे लोय ॥अ० ध्या०॥ नृप श्रीपालतणी परै, मन वंछित पावै रे लोय ॥अ० म० ॥११॥ आसू चैत्रक मासमां, नव आंबिल करिये रे लोय ॥ अ० न० ॥ नव ओली विधि युत करी, शिवकमला वरिये रे लोय ॥अ० शि० ॥१२॥ सिद्धचक्रनी बहु परै, वर महिमा कीजे रे लोय ॥ अ० व० ॥ श्रीजिनलाभ कहे सदा, अनुपम जस लीजे रे लोय ॥अ० अ०॥१३॥ इति नवपद स्तवन ॥

अथ नवपद स्तवन २ जुं ॥ राग मारू ॥

नीरधनायक जिनवरू जी, अतिशय जास अनूप। सिद्ध अनंत महागुणी जी, परमानंद सरूप । भविक मन धारज्यो रे । धारज्यो नवपद ध्यान ॥ भ० ॥१॥ ॥ ए टेर ॥ श्री आचारज गणधरू रे, गुण छत्तीस निवास । पाठक पदधर मुनिवरू जी, श्रुत दायक सुविलास ॥ भ० ॥ २॥ सुमति गुपति धर ओपमा जी, साधु समतावंत।सम्यग्दर्शन सुंदरू जी, ज्ञान प्रकाश

अनेम ॥ भ० ॥ ३ ॥ संवर साधना चरण छै रे, स
उसम विधि होय। ए नवपदना ध्यानथी रे, निरुपाधि
सुख होय ॥ भ० ॥ ४ ॥ अमृत सम जिनधर्मनो रे
मूल ए नवपद जाण। अविचल अनुभव कारणे आ
निशदिन नमन कल्याण ॥ भ० ॥ ५ ॥ इति पद ॥

॥रागप्रभाति॥ नवपद ध्यान धरीरे ॥भविका नव
मन वचन काया कर एकांते, विकथा दूर हरीरे ॥भ
न० ॥ १ ॥ मंत्र जड़ी अरु मंत्र घने रा। इन सब
विसरो रे। अरिहन्तादिक नवपद जपने, गुण भंडा
भरीरे ॥ भ० ॥२॥ वाद सिद्ध नव निध मंगल माल,
मंगलिक सहज घरीरे। बालचन्द्र गावो पनिहारी, शिव
सुख बीज खरीरे ॥ भ० ॥ न० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पुनः ॥ ओपा चतुर सुजाण, नवपद के गुण गावो
॥ ओ० ॥ नवपद महिमा जगमें मोटी, गणधर पार
पाय रे ॥ ओ० ॥१॥ करम निकाचित दूर करण कों,
सुन्दर शुद्ध उपाय रे ॥ ओ० ॥ २ ॥ इनकों पुट अ
नन्त करमां, अजरामर सुख पावे ॥ ओ० ॥ ३ ॥
जिन धर आराधी होयगे, नवपद संग चलावे ॥ओ
॥४॥ परम क्षमा शिव रमणी वर के, समर समा हद
लावे ॥ ओपा० ॥ ५ ॥ सिद्ध ॥

॥ श्रीनवपद स्तुति ॥

प्रभु वंदन करो जिनचन्दपदा ,
सब कालिन है सिद्धराजपदम ।
सह ध्येय मैं पद ध्येयपदम ,
शुभभावन मन शुभभोगपदम ॥ १ ॥
आचारिज नारद गुण जिनपदम ,
जिन सूरिंदै पाठक उवझायपदम ।
सह साधु दर्शनज्ञानचरम ,
तपकर्म हरे भ्रम रोग अरम ॥ २ ॥
धरो भव्यजनो मन आनन्दकरो ,
नवपद दरो वहे शास्त्र सरो ।
शुभ ध्यान धरो बहुमान करो ,
भगवान पदो जिनराज वरो ॥ ३ ॥
गहरा स्मरणमें सुगुण पूर्ण लियो ,
विमलेश्वर मनमें सान्त्व दियो ।
जय हो जय हो सुख मान लियो ,
कहै क्षेमसागर आराम लियो ॥ ४ ॥

॥ श्री नवपदस्तुतिः ॥

सिद्धं चक्रं नाहं वन्दे ॥ १ ॥
श्रीमन्तेकं पादं नौमि ॥ २ ॥

शान्ते पोक्तं कर्तुं भक्त्याः ॥ ३ ॥
सानिध्यं कुर्वन्तु देवाः ॥ ४ ॥

॥ नवपद चैत्यवन्दनानि ॥

उप्पन्नसन्नाण महोमयाणं, सप्पाडिहेरास
संठियाणं। सद्देसणाणंदियसज्जणाणं,नमो नमो हो
सया जिणाणं ॥ १ ॥ सिद्धाणमाणं दरमालया
नमो नमोऽणंतचउक्कयाणं। सूरीण दूरीकयकुग्गहा
नमो नमो सूरसमप्पहाणं ॥२॥ सुत्तत्थवित्थारणत
राणं, नमो नमो वायगकुंजराणं । साहूण संसाहि
संजमाणं, नमो नमो सुद्धदयादमाणं ॥३॥ जिणुत्त
रुइ लक्खणस्स, नमो नमो निम्मलदंसणस्स । अन्न
संमोहतमोहरस्स , नमो नमो नाणदिवायरस्स ॥ ४
आराहियाखंडिय सक्कियस्स, नमो नमो संजमवी
रियस्स । कम्मद्दुमोम्मूलणकुंजरस्स, नमो नमो ति
तवोभरस्स ॥५॥ इय नवपयसिद्धं लद्धिविज्जासमि
पयडियसरवग्गं ह्रीँतिरेहासमग्गं। दिसिवइ सु
सारं , खोणिपीढावयारं । तिजय विजय चक्कं , सि
द्धचक्कं नमामि ॥ ६ ॥ इति प्रथमम् ॥

॥ पुनः द्वितीयमारभ्य ॥

श्रीसिद्धचक्र उदार कांति , अति सुन्दर
सेवो सिद्ध अनन्त शान्त , आतमगुण भर ॥

प्राचारज उपज्झाय साधु , समता रस धाम । जिन भाखित सिद्धान्त शुद्ध , अनुभव अभिराम ॥ २ ॥ बोध बीज गुण संपदाए, नाण चरण तप शुद्ध । ध्यावो परमानन्दपद , ए नव पद अविरुद्ध ॥ ३ ॥ इह परभव आनन्दकन्द , जग माहि प्रसिद्धो । चिन्तामणि सम जाण जोग , बहु पुण्ये लद्धो ॥ ४ ॥ सिद्धचक्र सार अपार जस महिमा मनधारो, परिहर पर जंजाल-जाल निज गुण संभारो ॥५॥ सिद्धचक्र पद संपदा , सहजानन्द स्वरूप । अमृतमय कल्याणनिधि , प्रगटे चेतन भूप ॥ ६ ॥ इति चैत्यं संपूर्णम ॥

॥ श्रीनवपदजी की स्तुति॥

निरुपम सुखदायक जगनायक, लायक शिवगति गामी जी । करुणासागर निजगुण आगर , शुभ समता रसधामी जी । श्रीसिद्धचक्र शिरोमणि जिनवर, ध्यावे जे मन रंगेजी । ते मानव श्रीपाल तणी परे, पामे सुख सुरंगेजी ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध आचारिज पाठक , साधु महागुणवंताजी । दरिसण नाण चरण तप उत्तम, नवपद जग जयवंता जी ॥ एहनुं ध्यान धरतां लहिये, अविचल पद अविनाशीजी । ते सघला जिननायक नमिये , जिण ए नीति प्रकाशीजी ॥ २ ॥ आसू मास मनोहर तिम वलि, चैत्रक मास जगीशें जी ।

उजवाली सातमथी करियें, नव आंबिल नव दिवसेंजी। तेर सहस वलि गुणीयें गुणणुं, नवपद करो सारोजी। इणपरी निर्मल तप आदरियें, आगम साख उदारोजी ॥३॥ विमल कमल दल लोयण सुन्दर, श्रीचक्रेसरि देवीजी। नवपद सेवग भविजन केरां, विघन हरो सुर सेवीजी। श्रीखरतरगच्छ नायक सद्गुरु, श्रीजिन भक्ति सुरींदाजी। तासु पसायें इन पर पभणे, श्रीजिनलाभ सुरींदाजी ॥ ४ ॥ इति संपूर्णम् ॥

अथ द्वादश आर्हत गुणाः ॥

१ अशोकवृक्षप्रातिहार्यसंयुताय श्रीअर्हते नमः ॥
२ पुष्पवृष्टिप्रातिहार्यसंयुताय श्री अ० ॥
३ दिव्यध्वनिप्रातिहार्यसंयुताय श्री अ०
४ चामरयुग्मप्रातिहार्यसंयुताय श्री अ०
५ दुंदुभिप्रातिहार्यसंयुताय श्री अ०
६ छत्रत्रयप्रातिहार्यसंयुताय श्री अ०
७ सुवर्णसिंहासनप्रातिहार्यसंयुताय श्री अ०
८ भामंडलप्रातिहार्यसंयुताय श्री अ०
९ ज्ञानातिशयसंयुताय श्री अ०
१० पूजातिशयसंयुताय श्री अ०
११ वचनातिशयसंयुताय श्री अ०

१२ आपायापगमातिशयसंयुताय श्री अ०

॥ इति द्वादश आर्हत गुणाः ॥

इत्यादि नमस्कार करके अनन्थ ऊससिएणं कहके १२ लोगस्सका काउस्सग्ग करै, काउस्सग्ग पार कर एक लोगस्स प्रगट कहै, पीछे स्वस्थानक जा कर के चैत्यवंदन करै, पच्चक्खाण पार के आंबिल करै पहले प्रथम जल पीवे तब चैत्यवंदन कर के पीवे, पीछे मध्याह्न फिर पाछे शक्रस्तवसे देव वांदे। देव वांदणे की विधि आगे लिखी है सो देख लेना। गुणना नवे पदका दो हजार २००० करणा—

१ ॐ ह्रीं नमो अरिहंताणं, २ ॐ ह्रीं नमो सिद्धाणं, ३ ॐ ह्रीं नमो आयरियाणं, ४ ॐ ह्रीं नमो उवज्झायाणं ५ ॐ ह्रीं नमो लोए सव्वसाहूणं ६ ॐ ह्रीं नमो दंसणस्स ७ ॐ ह्रीं नमो नाणस्स ८ ॐ ह्रीं नमो चारित्तस्स ९ ॐ ह्रीं नमो तवस्स

इस प्रमाणे गुणना करे।

अथ सिद्धअष्टगुणाः ॥

१ अनंतज्ञानसंयुताय श्रीसिद्धाय नमः ॥
२ अनंतदर्शनसंयुताय श्री सि०
३ अव्याबाधगुणसंयुताय श्री सि०
४ अनंतसम्यक्त्वचारित्रगुणसंयुताय श्री सि०
५ अक्षयस्थितिगुणसंयुताय श्री सि०
६ अरूपिनिरंजनगुणसंयुताय श्री सि०

७ अगुरुलघुगुणसंयुताय श्री सि०
८ अनंतवीर्यगुणसंयुताय श्री सि०

॥ इति सिद्ध अष्टगुणाः ॥

यह आठ नमस्कार करके अन्नत्थ ऊस्ससि० करके आठ लोगस्स का काउस्सग्ग करे एक लोगस्स प्रगट कहे, फीर पूर्वोक्त करे ॥ जितना खमासमणा जिस पदमें है उतना लोगस्स का काउस्सग्ग करे, प्रगट लोगस्स कहिके उपर परमाणे गुणना लिखा है सो करे—

अथ आचार्य छत्रीस गुणाः ॥

१ प्रतिरूपगुणसंयुताय श्री आचार्याय नमः ॥
२ सूर्यवत्तेजस्विगुणसंयुताय श्री आ० ॥
३ युगप्रधानागमसंयुताय श्री आ०
४ मधुरवाक्यगुणसंयुताय श्री आ० ॥
५ गांभीर्यगुणसंयुताय श्री आ० ॥
६ धैर्यगुणसंयुताय श्री आ० ॥
७ उपदेशगुणसंयुताय श्री आ० ॥
८ अपरिश्राविगुणसंयुताय श्री आ० ॥
९ सौम्यप्रकृतिगुणसंयुताय श्री आ० ॥
१० शीलगुणसंयुताय श्री आ० ॥
११ अविग्रहगुणसंयुताय श्री आ० ॥
१२ अविकथकगुणसंयुताय श्री आ० ॥

१३ अचपलगुणसंयुताय श्री आ० ॥
१४ प्रसन्नवदनगुणसंयुताय श्री आ० ॥
१५ क्षमागुणसंयुताय श्री आ० ॥
१६ मृदुगुणसंयुताय श्री आ० ॥
१७ सर्वसंगमुक्तिगुणसंयुताय श्री आ० ॥
१८ ऋजुगुणसंयुताय श्री आ० ॥
१९ द्वादशविधतपगुणसंयुताय श्री आ० ॥
२० सप्तदशविधसंयमगुणसंयुताय श्री आ० ॥
२१ सत्यव्रतगुणसंयुताय श्री आ० ॥
२२ शौचगुणसंयुताय श्री आ० ॥
२३ अकिंचनगुणसंयुताय श्री आ० ॥
२४ ब्रह्मचर्यगुणसंयुताय श्री आ० ॥
२५ अनित्यभावनाभावकाय श्री आ० ॥
२६ अशरणभावनाभावकाय श्री आ० ॥
२७ संसारस्वरूपभावनाभावकाय श्री आ० ॥
२८ एकत्वस्वरूपभावनाभावकाय श्री आ० ॥
२९ अन्यत्वभावनाभावकाय श्री आ० ॥
३० अशुचिभावनाभावकाय श्री आ० ॥
३१ आश्रवभावनाभावकाय श्री आ० ॥
३२ संवरभावनाभावकाय श्री आ० ॥
३३ निर्जराभावनाभावकाय श्री आ० ॥

११ वनस्पतिकायरक्षकाय श्री सा०
१२ त्रसकायरक्षकाय श्री सा०
१३ एकेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
१४ बेइंद्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
१५ तेइंद्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
१६ चउइंद्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
१७ पंचेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
१८ लोभनिग्रहकाय श्री सा०
१९ क्षमागुणयुक्ताय श्री सा०
२० शुभभावनाभावकाय श्री सा०
२१ प्रतिलेखनादिक्रियाशुद्धकारकाय श्री सा०
२२ संजमयोगयुक्ताय श्री सा०
२३ मनोगुप्तियुक्ताय श्री सा०
२४ वचनगुप्तियुक्ताय श्री सा०
२५ कायगुप्तियुक्ताय श्री सा०
२६ शीतादिद्वाविंशतिपरीसहसहनतत्पराय श्री सा०
२७ मरणांतउपसर्गसहनतत्पराय श्री सा०

॥ अथ सम्यक्तके सडसठ भेद लिख्यते ॥

१ परमार्थसंस्तवनारूपश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥
२ परमार्थज्ञसेवनारूप सद्द० ॥
३ व्यापन्नदर्शनवर्जनरूप सद्द० ॥

४ कुदर्शनवर्जनरूप सद्द० ॥
५ शुश्रूषारूप सद्द० ॥
६ धर्मरागरूप सद्द० ॥
७ वैयावृत्त्यरूप सद्द० ॥
८ अर्हद्विनयरूप सद्द० ॥
९ सिद्धविनयरूप सद्द० ॥
१० चैत्यविनयरूप सद्द० ॥
११ श्रुतविनयरूप सद्द० ॥
१२ धर्मविनयरूप सद्द० ॥
१३ साधुवर्गविनयरूप सद्द० ॥
१४ आचार्यविनयरूप सद्द० ॥
१५ उपाध्यायविनयरूप सद्द० ॥
१६ प्रवचनविनयरूप सद्द० ॥
१७ दर्शनविनयरूप सद्द० ॥
१८ संसारे जिनाज्ञासारमिति चिन्तवनरूप सद्द० ॥
१९ संसारे जिनमतसारमिति चिन्तवनरूप सद्द० ॥
२० संसारे जिनमतस्थितसाध्वादिसारमिति चिं० ॥
२१ शंकादूषणरहिताय सद्द० ॥
२२ कांक्षादूषणरहिताय सद्द० ॥
२३ विचिकित्सारूपदूषणरहिताय सद्द० ॥
२४ कुदृष्टिप्रशंसारूपदूषणरहिताय सद्द० ॥

२५ नन्दिषेणवृत्तगाहिताय सद० ॥
२६ प्रवचनप्रभावकस्य सद० ॥
२७ धर्मकथाप्रभावकस्य सद० ॥
२८ वादिप्रभावकस्य सद० ॥
२९ नैमित्तिकप्रभावकस्य सद० ॥
३० तपस्विप्रभावकस्य सद० ॥
३१ प्रज्ञप्त्यादिकविद्याभृत्प्रभावक सद० ॥
३२ चूर्णांजनादिसिद्धप्रभावक सद० ॥
३३ कविप्रभावकस्य सद० ॥
३४ जिनशासने कौशलता भूषण स० ॥
३५ प्रभावनाभूषणस्य स० ॥
३६ तीर्थसेवाभूषणस्य स० ॥
३७ स्थैर्यनाभूषणस्य स० ॥
३८ जिनशासने भक्तिभूषणस्य स० ॥
३९ उपशमगुणरूप स० ॥
४० संवेगगुणस्य स० ॥
४१ निर्वेदगुणस्य स० ॥
४२ अनुकंपागुणरूप स० ॥
४३ आस्तिक्यगुणरूप सद० ॥
४४ परतीर्थिकादिवंदनवर्जनस्य सद० ॥
४५ परतीर्थिकादिनमस्कारवर्जनस्य सद० ॥

४६ परतीर्थिकादिआलापवर्जनरूप स० ॥
४७ परतीर्थिकादिसंलापवर्जन रूप श्रीस० ॥
४८ परतीर्थिकादि अशनादिदानवर्जन श्रीस० ॥
४९ परतीर्थिकादि गंधपुष्पादिप्रेषणवर्जन श्रीस० ॥
५० राजाभियोगाकारयुक्तश्रीसद्द० ॥
५१ गणाभियोगाकारयुक्तश्रीस० ॥
५२ बलाभियोगाकारयुक्त श्री सद्द० ॥
५३ सुराभियोगाकारयुक्त श्रीसद्द० ॥
५४ कांतारवृत्त्याकारयुक्त श्रीसद्द० ॥
५५ गुरुनिग्रहाकारयुक्त श्रीसद्द० ॥
५६ सम्यक्त्वचारित्रधर्मस्य मूलमिति चिंतनरूप सद्द०॥
५७ चारित्रधर्मस्य पुरस्य द्वारमिति चिंतन श्री सद्द० ॥
५८ चारित्रधर्मस्य प्रतिष्ठानमिति चिंतनरूप सद्द० ॥
५९ चारित्रधर्मस्य प्रतिष्ठानमिति चिंतनरूप सद्द० ॥
६० चारित्रधर्मस्य धारकमिति चिंतनरूप सद्द० ॥
६१ चारित्रधर्मस्य भाजनमिति चिंतनरूप स० ॥
६२ चारित्रधर्मस्य सन्निधिमिति चिंतनरूप स० ॥
६३ अस्तिजीव इति श्रद्धानस्थानयुक्त श्री सद्द० ॥
६४ स च जीवो नित्य इति श्रद्धानस्थानयुक्त सद्द० ॥
६५ स च जीवः कर्माणि करोतीति श्रद्धानस्थानयुक्त स०
६६ स च जीवः कृतकर्माणि वेदयतीति श्रद्धानस्थानयुक्त स

६७ जीवस्थानि निर्वाणमिति श्रद्धानस्थानगुणाय नमः
६८ अस्ति पुनर्मोक्षोपायेति श्रद्धानस्थानगुणाय नमः
इसी तरह [illegible]

अथ ज्ञानपदके ५१ भेद लिख्यते ॥

१ स्पर्शनेंद्रियव्यंजनावग्रहमतिज्ञानाय नमः ॥
२ रसनेंद्रियव्यंजनावग्रहमतिज्ञानाय नमः ॥
३ घ्राणेंद्रियव्यंजनावग्रह मति० ॥
४ श्रोत्रेंद्रियव्यंजनावग्रह मति० ॥
५ स्पर्शनेंद्रियअर्थावग्रह मति० ॥
६ रसनेंद्रियअर्थावग्रह मति० ॥
७ घ्राणेंद्रियअर्थावग्रह मति० ॥
८ चक्षुरिंद्रियअर्थावग्रह मति० ॥
९ श्रोत्रेंद्रियअर्थावग्रह मति० ॥
१० मन इन्द्रिय अर्थावग्रह मति० ॥
११ स्पर्शनेन्द्रिय ईहा मति० ॥
१२ रसनेन्द्रिय ईहा मति० ॥
१३ घ्राणेन्द्रिय ईहा मति० ॥
१४ चक्षुरिंद्रिय ईहा मति० ॥
१५ श्रोत्रेंद्रिय ईहा मति० ॥
१६ मन इन्द्रिय ईहा मति० ॥
१७ स्पर्शनेन्द्रिय अपाय मति०
१८ रसनेन्द्रिय अपाय मति० ॥

४० आगमिकश्रुत० ॥
४१ अंगप्रविष्टश्रुत० ॥
४२ अनंगप्रविष्टश्रुत० ॥
४३ अनुगामि अवधिज्ञानाय नमः ॥
४४ अननुगामि अवधि० ॥
४५ वर्द्धमान अवधि० ॥
४६ हीयमान अवधि० ॥
४७ प्रतिपाति अवधि०
४८ अप्रतिपाति अवधि० ॥
४९ ऋजुमतिमनःपर्यवज्ञानाय नमः ॥
५० विपुलमतिमनःपर्यवज्ञा० ॥
५१ लोकालोकप्रकाशकश्रीकेवलज्ञानाय
॥ इति ज्ञानपदके ५१ भेद ।

इस तरह इकावन ५१ नमस्कार करें ।

अथ चारित्रपदके ७० भेद

१ प्राणातिपातविरमणरूपचारित्राय
२ मृषावादविरमणरूपचारि० ॥
३ अदत्तादानविरमणरूपचारि० ॥
४ मैथुनविरमणरूपचारि० ॥
५ परिग्रहविरमणरूपचारि० ॥
६ क्षमाधर्मरूपचारि० ॥

४० आगमिकश्रुत० ॥
४१ अंगप्रविष्टश्रुत० ॥
४२ अनंगप्रविष्टश्रुत० ॥
४३ अनुगामि अवधिज्ञानाय नमः ॥
४४ अननुगामि अवधि० ॥
४५ वर्द्धमान अवधि० ॥
४६ हीयमान अवधि० ॥
४७ प्रतिपाति अवधि०
४८ अप्रतिपाति अवधि० ॥
४९ ऋजुमतिमनःपर्यवज्ञानाय नमः ॥
५० विपुलमतिमनःपर्यवज्ञा० ॥
५१ लोकालोकप्रकाशकश्रीकेवलज्ञानाय नमः ॥

॥ इति ज्ञानपदके ५१ भेद ॥

इस तरह इकावन ५१ नमस्कार करे ।

अथ चारित्रपदके ७० भेद लिख्यते ॥

१ प्राणातिपातविरमणरूपचारित्राय नमः ॥
२ मृषावादविरमणरूपचारि० ॥
३ अदत्तादानविरमणरूपचारि० ॥
४ मैथुनविरमणरूपचारि० ॥
५ परिग्रहविरमणरूपचारि० ॥
६ क्षमाधर्मरूपचारि० ॥

२८ अतिरिक्तवस्त्रमक्तादिपरठापनारूपसंयम चा० ॥
२९ प्रमार्जनरूपसंयमचारि० ॥
३० मनःसंयमचारि० ॥
३१ वाक्संयमचारि० ॥
३२ कायासंयमचारि० ॥
३३ आचार्यवैयावृत्यरूपसंयमचारि० ॥
३४ उपाध्यायवैयावृत्यरूपसंयमचारि० ॥
३५ तपस्विवैयावृत्यरूपसंयमचारि० ॥
३६ लघुशिष्यादिवैयावृत्यरूपसंयमचारि० ॥
३७ ग्लानसाधुवैयावृत्यरूपसंयमचारि० ॥
३८ साधुवैयावृत्यरूपचारि० ॥
३९ श्रमणोपासकवैयावृत्यरूपचारि० ॥
४० संघवैयावृत्यरूपचारि० ॥
४१ कुलवैयावृत्यरूपचारि० ॥
४२ गणवैयावृत्यरूपचारि० ॥
४३ पशुपंडगादिरहितवसतिवसनब्रह्मगुप्तिचारि० ॥
४४ स्त्रीहास्यादिविकथावर्जनब्रह्मगुप्तिचारि० ॥
४५ स्त्रीआसनवर्जनब्रह्मगुप्तिचारि० ॥
४६ स्त्रीअंगोपांगनिरीक्षणवर्जनचारि० ॥
४७ कुड्यंतरसहितस्त्रीहावभावश्रवणवर्जनचारि० ॥
४८ पूर्वस्त्रीसंभोगचिंतनवर्जनब्रह्मगुप्तिचारि० ॥

४९ अतिसरसआहारवर्जनब्रह्मगुप्तिधारि० ॥
५० अतिआहारकरणवर्जनब्रह्मगुप्तिधारि० ॥
५१ अंगविभूषावर्जनब्रह्मगुप्तिधारि० ॥
५२ अनशनतपोरूपधारि० ॥
५३ उणोदरीतपोरूपधारि० ॥
५४ वृत्तिसंक्षेपरूपधारि० ॥
५५ रसत्यागतपोरूपधारि० ॥
५६ कायक्लेशतपोरूपधारि० ॥
५७ संलेखणातपोरूपधारि० ॥
५८ प्रायश्चित्ततपोरूपधारि० ॥
५९ विनयतपोरूपधारि० ॥
६० वैयावृत्यतपोरूपधारि० ॥
६१ सज्झायतपोरूपधारि० ॥
६२ ध्यानतपोरूपधारि० ॥
६३ उपसर्गतपोरूपधारि० ॥
६४ अनंतज्ञानसंयुक्तधारि० ॥
६५ अनंतदर्शनसंयुक्तधारि० ॥
६६ अनंतचारित्रसंयुक्तधारि०
६७ क्रोधनिग्रहकरणधारि० ॥
६८ माननिग्रहकरणधारि० ॥
६९ मायानिग्रहकरणधारि० ॥

७० लोभनिग्रहकरणचारि० ॥

अथ तपपद के ५० भेद लिख्यते॥

१ यावत्कथितनपसे नमः ॥
२ इत्वरतपोभेदतपसे नमः ॥
३ बाह्यऊणोदरीतपभेदतपसे नमः ॥
४ अभ्यंतरऊणोदरीतपभेदतपसे नमः ॥
५ द्रव्यतपवृत्तिसंक्षेपतपभेद त० ॥
६ क्षेत्रतपवृत्तिसंक्षेपतपभेद त० ॥
७ कालतपवृत्तिसंक्षेपतपभेद त० ॥
८ भावतपवृत्तिसंक्षेपतपभेद त० ॥
९ कायक्लेशतपभेद त० ॥
१० रसत्यागतपभेद त० ॥
११ इन्द्रियकषाययोगविषयकसंलीनतातपसे नमः
१२ स्त्रीपशुपंडकादिवर्जितस्थानप्रयरिथतसंलीनता त
१३ आलोयणप्रायश्चित्त तप०
१४ प्रतिक्रमणप्रायश्चित्त तप०
१५ मिश्रप्रायश्चित्त तप०
१६ विवेकप्रायश्चित्त तप०
१७ उत्सर्गप्रायश्चित्त तप०
१८ तपप्रायश्चित्त त०
१९ छेदप्रायश्चित्त त०

२० मूलप्रायश्चित्तस्य न०
२१ अनवस्थितप्रायश्चित्तस्य न०
२२ पारंचियप्रायश्चित्तस्य न०
२३ ज्ञानविनयस्य न०
२४ दर्शनविनयस्य न०
२५ चारित्रविनयस्य न०
२६ गुर्वादिकमनविनयस्य न० ॥
२७ वचनविनयस्य न०
२८ कायविनयस्य न० ॥
२९ उपचारकविनयस्य न० ॥
३० आचार्यवैयावच्च न० ॥
३१ उपाध्यायवैयावच्च न० ॥
३२ साधुवैयावच्च न० ॥
३३ तपस्विवैयावच्च न० ॥
३४ लघुशिष्यादिवैयावच्च न० ॥
३५ ग्लानसाधुवैयावच्च न० ॥
३६ श्रमणोपासकवैयावच्च न० ॥
३७ संघवैयावच्च न० ॥
३८ कुलवैयावच्च न० ॥
३९ गणवैयावच्च न० ॥
४० वाचनातपसे नमः ॥

४१ पृच्छनातपसे नमः ॥
४२ परावर्त्तनातपसे नमः ॥
४३ अनुप्रेक्षानपसे नमः ॥
४४ धर्म्मकथातपसे नमः ॥
४५ आर्त्तध्याननिवृत त०॥
४६ रौद्रध्याननिवृत त० ॥
४७ धर्म्मध्यानचिंतन त० ॥
४८ शुक्लध्यानचिंतन त० ॥
४९ बाह्यउपसर्गतपसे नमः ॥
५० अभ्यंतरउपसर्गतपसे नमः ॥इतिपंचाशततपसे
इस तरह ५० नमस्कार करै

अथ पंच कल्याणकी टीप

॥ कार्तिक-कृष्णपक्ष-कातिक वदी ॥

५ शम्भवनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः
१२ अरिष्टनेमिनाथजिनाय च्यवनप्राप्ताय नमः
१२ पद्मप्रभजिनाय जातजन्मने नमः
१३ पद्मप्रभजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः
३० महावीरजिनाय मोक्षगताय नमः

कार्तिक-शुक्लपक्ष-कातिक सुदी ॥

३ सुविधिनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः
१२ अरनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः

मार्गशीर्ष-कृष्ण-पक्ष-मिगसर वदी।

सुविधिनाथजिनाय जातजन्मने नमः
सुविधिनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः
१० महावीरजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः
११ पद्मप्रभजिनाय मोक्षगताय नमः

॥ मार्गशीर्ष-शुक्लपक्ष-मिगसर सुदी ॥

१० अरनाथजिनाय जातजन्मने नमः
१० अरनाथजिनाय मोक्षगताय नमः
११ अरनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः
११ मल्लिनाथजिनाय जातजन्मने नमः
११ मल्लिनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः
११ मल्लिनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः
११ अरिष्टनेमिजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः
१४ सम्भवनाथजिनाय जातजन्मने नमः
१५ सम्भवनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः

॥ पौष-कृष्णपक्ष-पोष वदी ॥

१० पार्श्वनाथजिनाय जातजन्मने नमः
११ पार्श्वनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः
१२ चन्द्रप्रभजिनाय जातजन्मने नमः
१२ चन्द्रप्रभजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः

१४ शीतलनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः

॥ पौष-शुक्लपक्ष-पौष सुदी ॥

६ विमलनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः
९ शांतिनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः
११ अजितनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः
१४ अभिनन्दनजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः
१५ धर्मनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः

॥ माघ-कृष्णपक्ष-माघ वदी ॥

६ पद्मप्रभजिनाय च्यवनप्राप्ताय नमः
१२ शीतलनाथजिनाय जातजन्मने नमः
१२ शीतलनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः
ऋषभदेवजिनाय मोक्षगताय नमः
३० श्रेयांसनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः

॥ माघ-शुक्लपक्ष-माघ सुदी ॥

२ अभिनन्दनजिनाय जातजन्मने नमः
२ वासुपूज्यजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः
३ विमलनाथजिनाय जातजन्मने नमः
३ धर्मनाथजिनाय जातजन्मने नमः
४ विमलनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः
८ अजितनाथजिनाय जातजन्मने नमः

अजितनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः
२ अभिनन्दनजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः
३ धर्मनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः

॥ फाल्गुन-कृष्णपक्ष-फागण वदि ॥

६ सुपार्श्वनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः
७ सुपार्श्वनाथजिनाय मोक्षप्राप्ताय नमः
७ चन्द्रप्रभजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः
९ सुविधिनाथजिनाय च्यवनप्राप्ताय नमः
११ ऋषभदेवजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः
१२ श्रेयांसनाथजिनाय जातजन्मने नमः
१२ मुनिसुव्रतजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः
१३ श्रेयांसनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः
१४ वासुपूज्यजिनाय जातजन्मने नमः
३० वासुपूज्यजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः

॥ फाल्गुन-शुक्लपक्ष-फागण सुदी ॥

२ अरनाथजिनाय च्यवनप्राप्ताय नमः
४ मल्लिनाथजिनाय च्यवनप्राप्ताय नमः
८ शम्भवनाथजिनाय च्यवनप्राप्ताय नमः
१२ मल्लिनाथजिनाय मोक्षगताय नमः
१२ मुनिसुव्रतजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः

॥ चैत्र-कृष्णपक्ष-चैत्र वदी ॥

४ पार्श्वनाथजिनाय च्यवनप्राप्ताय नमः
४ पार्श्वनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः
५ चन्द्रप्रभजिनाय च्यवनप्राप्ताय नमः
८ ऋषभदेवजिनाय जातजन्मने नमः
८ ऋषभस्वामिजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः

॥ चैत्र-शुक्लपक्ष-चैत्र सुदी ॥

३ कुंथुनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः
५ अजितनाथजिनाय मोक्षगताय नमः
५ संभवनाथजिनाय मोक्षगताय नमः
५ अनन्तनाथजिनाय मोक्षगताय नमः
९ सुमतिनाथजिनाय मोक्षगताय नमः
११ सुमतिनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः
१३ महावीरजिनाय जातजन्मने नमः
१५ पद्मप्रभजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः

॥ वैशाख-कृष्णपक्ष-वैशाख वदि ॥

१ कुंथुनाथजिनाय मोक्षगताय नमः
२ शीतलनाथजिनाय मोक्षगताय नमः
५ कुंथुनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः
६ शीतलनाथजिनाय च्यवनप्राप्ताय नमः

॥ ज्येष्ठ-शुक्लपक्ष-जेठ वदि ॥

५ धर्मनाथजिनाय मोक्षगताय नमः
६ वासुपूज्यजिनाय च्यवनप्राप्ताय नमः
१२ सुपार्श्वनाथजिनाय जातजन्मने नमः
१३ सुपार्श्वनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः

॥ आषाढ़-कृष्णपक्ष-आषाढ़ वदी ॥

४ ऋषभदेवजिनाय च्यवनप्राप्ताय नमः
७ विमलनाथजिनाय मोक्षगताय नमः
९ नमिनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः

॥ आषाढ़-शुक्लपक्ष-आषाढ़ सुदि ॥

६ महावीरजिनाय च्यवनप्राप्ताय नमः
८ अरिष्टनेमिजिनाय मोक्षगताय नमः
१४ वासुपूज्यजिनाय मोक्षगताय नमः

॥ श्रावण-कृष्णपक्ष-श्रावण वदि ॥

३ श्रेयांसनाथजिनाय मोक्षगताय नमः
७ अनन्तनाथजिनाय च्यवनप्राप्ताय नमः
८ नमिनाथजिनाय जातजन्मने नमः
९ कुन्थुनाथजिनाय च्यवनप्राप्ताय नमः

॥ श्रावण-शुक्लपक्ष-श्रावण सुदी ॥

२ सुमतिनाथजिनाय च्यवनप्राप्ताय नमः

अथ दीपमालाको गुणनो लिख्यते ॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिनाथाय नमः
ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिसर्वज्ञाय नमः
ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिपारंगताय नमः
ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकेवलज्ञानाय नमः

॥ इति दीपमालाको गुणनो ॥

॥ अथ २० विहरमानों के नाम ॥

१ श्री सीमंधर स्वामी	२ श्री युगमंधर
३ श्री बाहुस्वामी	४ श्री सुबाहु स्व
५ श्री सुजात स्वामी	६ श्री स्वयंप्रभ स
७ श्री ऋषभानन स्वामी	८ श्री अनंतवीर्य
९ श्री सुरप्रभव स्वामी	१० श्री विशालधर
११ श्री वज्रधर स्वामी	१२ श्री चंद्रानन स
१३ श्री चंद्रबाहु स्वामी	१४ श्री भुजंग स्वा
१५ श्री ईश्वर स्वामी	१६ श्री नेमप्रभ स
१७ श्री वीरसेन स्वामी	१८ श्री महाभद्र
१९ श्री देवयश स्वामी	२० श्री अजितवीर्य

चार साश्वते जिनवर के नाम ।

१ श्री ऋषभानन स्वामी २ श्री चंद्रानन स्वामी
३ श्री वारिषेण स्वामी ४ श्रीवर्द्धमान स्वामी

साम्यभाव रक्खूँ मैं उनपर, ऐसी परिणति हो जावे ॥५॥
गुणीजनोंको देख हृदयमें, मेरे प्रेम उमड़ आवे।
बने जहाँतक उनकी सेवा, करके यह मन सुख पावे॥
होऊँ नहीं कृतघ्न कभी मैं, द्रोह न मेरे उर आवे।
गुण-ग्रहणका भाव रहे नित, दृष्टि न दोषों पर जावे॥६॥
कोई बुरा कहो या अच्छा, लक्ष्मी आवे या जावे।
लाखों वर्षों तक जीऊँ या, मृत्यु आज ही आजावे॥
अथवा कोई कैसा ही भय, या लालच देने आवे।
तो भी न्यायमार्गसे मेरा, कभी न पद डिगने पावे॥७॥
होकर सुख में मग्न न फूले, दुखमें कभी न घबरावें।
पर्वत-नदी-श्मशान-भयानक, अटवीसे नहीं भय खावें॥
रहे अडोल-अकंप निरन्तर, यह मन दृढ़तर बन जावे।
इष्टवियोग-अनिष्टयोग में, सहनशीलता दिखलावे॥८॥
सुखी रहें सब जीव जगतके, कोई कभी न घबरावें।
बैर-पाप-अभिमान छोड़ जग, नित्य नये मंगल गावें॥
घरघर चर्चा रहे धर्मकी, दुष्कृत दुष्कर हो जावें।
ज्ञान-चरित उन्नत कर अपना, मनुज-जन्मफल सब पावें॥९॥
ईति-भीति व्यापे नहीं जगमें, वृष्टि समय पर हुआ करे।
धर्मनिष्ठ होकर राजा भी, न्याय प्रजाका किया करे॥
रोग मरी-दुर्भिक्ष न फैले, प्रजा शांति से जिया करे।
परम अहिंसा-धर्म जगत में, फैल सर्वहित कियाकरे॥१०॥

छट्ठी अशुचि भावना;—

दिपै चाम चादर मढ़ी, हाड पींजरा देह।
भीतर या सम जगतमें, और नहीं घिन गेह ॥६॥

॥ सोरठा ॥

सातमी आश्रव भावना;—

मोह नींद के जोर, जगवासी घूमैं सदा।
कर्म चोर चहुँ ओर, सरवस लूटे सुधि नहीं ॥७॥

आठमी संवर भावना;—

सत गुरु देय जगाय, मोह नींद जब उपशमे।
तब कुछ बने उपाय, कर्म चोर आवत रुके ॥८॥

॥ दोहा ॥

नवमी निर्जरा भावना;—

ज्ञान दीप तप तेल भर, घर शोधै भ्रम छोर।
या विधि बिन निकसे नहीं, पैठे पूरव चोर ॥
पंच महाव्रत संचरण, समिति पंच प्रकार।
प्रबल पंच इन्द्रिय विजय, धार निर्जरा सार ॥९॥

दशमी लोक संठाण भावना;—

चौदह राजु उतंग नभ, लोक पुरुष संठान।
तामें जीव अनादितै, भरमत है बिन ज्ञान॥१०॥

इग्यारमी बोधिबीज-भावना;—

धन तन कंचन राजसुख, सबहि सुलभ कर जान ।
दुर्लभ है संसारमें, एक यथारथ ज्ञान ॥११॥

॥ बारमी धर्म भावना ॥

जाँचे सुरतरु देय सुख, चिंतत चिन्ता रैन ।
बिन जाचे बिन चिंतवे, धर्म सकल सुख दैन॥१२॥

अथ आठ-थुई से देववांदने की विधि ॥

पहला खमासमण देकर चैत्यवंदन करना ।

सकलकुशलवल्ली-पुष्करावर्त्तमेघो,
दुरिततिमिरभानुः कल्पवृक्षोपमानः ।
भवजलनिधिपोतः सर्वसम्पत्तिहेतुः,
स भवतु सततं वः श्रेयसे पार्श्वदेवः ॥१॥

नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवरपुंडरिआणं पुरिसवरगंधहत्थीणं लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहिआणं लोगपईवाणं लोगपज्जोअगराणं अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं बोहिदयाणं धम्मदयाणं धम्मदेसियाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं अप्पडिहय-

तिन्नाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोअगा
सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं सिवमयलमरुअमणंत
क्खय-मव्वाबाह-मपुणरावित्ति सिद्धिगइ नामधेयं ठा
संपत्ताणं नमो जिणाणं जियभयाणं जे अ अइ
सिद्धा जे अ भविस्संति णागए काले संपइ अ वट्टमा
सव्वे तिविहेण वंदामि ॥१॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् इरियावहियं
क्कमामि, इच्छं। इच्छामि पडिक्कमिउं इरियावहिया
विराहणाए गमणागमणे पाणक्कमणे बीयक्कमणे हरि
क्कमणे ओसा उत्तिंग पणगदग मट्टीमक्कडासंताणा संक
णे जे मे जीवा विराहिया एगिंदिया बेइंदिया तेइंदि
चउरिंदिया पंचिंदिया अभिहया वत्तिया लेसिया
घाइया संघट्टिया परियाविया किलामिया उद्दविया ठ
णाओठाणं संकामिया जीवियाओ ववरोविया त
मिच्छामि दुक्कडं।

तस्स उत्तरीकरणेणं पायच्छित्तकरणेणं विसो
करणेणं विसल्लीकरणेणं पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठा
ठामि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीए
जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्त
च्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसं

जय जय नाभि नरिंद नंद सिद्धाचल मंडण ।
जय जय प्रथम जिणंद चन्द भव दुःख विहंडण ॥
जय जय साधु सुरिंद विंद वंदिय परमेसर ।
जय जय जगदानंद कंद श्रीरिषभ जिणेसर ॥
अमृत सम जिनधर्मनो ए दायक जग मे जाण ।
तुझ पद पंकज प्रीति धर निशि दिन नमत कल्याण ॥

नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवरपुंडरीआणं पुरिसवरगंधहत्थीणं लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहिआणं लोगपईवाणं लोगपज्जोअगराणं अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं बोहिदयाणं धम्मदयाणं धम्मदेसियाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं विअट्टछउमाणं जिणाणं जावयाणं तिन्नाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहियाणं मुत्ताणं मोअगाणं सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्ति सिद्धिगइ नामधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं जियभयाणं जे अ अईया सिद्धा जे अ भविस्संति णागए काले संपइ अ वट्टमाणा सव्वे तिविहेण वंदामि ॥

नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च
॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीण जरम
रणा। चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु॥५
कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा
आरुग्ग बोहिलाभं, समाहिवर मुत्तमं दिंतु॥६॥ चंदे
निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवर
गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

सव्वलोए अरिहंत चेइआणं करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्तिआए पूअणवत्तिआए सक्कारवत्ति आए सम्माणवत्तिआए बोहिलाभवत्तिआए निरुवस ग्गवत्तिआए सद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पे हाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥२॥

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जं भाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छा सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमे हिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि तावकायं ठाणेणं मो णेणं झाणेणं अप्पाणं वोसरामि ॥

एक नवकार का काउस्सग्ग करके पीछे पार के एक आदमी दूसरी स्तुति को बोले

ताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि

एक नवकार का काउस्सग्ग कर पार के एक आदमी नीचे स्तुति पढ़े—

जैनं पात्र्यं भूयाद् भूत्यै ॥ ३ ॥

सिद्धाणं बुद्धाणं पारगयाणं परंपरगयाणं। लोअग्गमुवगयाणं नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥१॥ जो देवाण विदेवो,जं देवा पंजली नमंसंति। तं देव देव महिअं, सिरसा वंदे महावीरं ॥२॥ इक्कोवि नमुक्कारो जिणवर वसहस्स वद्धमाणस्स। संसारसागराओ, तारेइ नरं व नारिंवा ॥३॥ उज्जिंतसेलसिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स। तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं नमंसामि ॥४॥ चत्तारि अट्ठ दस दोयवंदिया जिणवरा चउव्वीसं। परमट्ठ निट्ठि अट्ठा सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु॥

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

वगेरा कहे । पीछे चार स्तुति क्रमसर पूरी हो जावे पीछे नमोत्थुणं का पाठ पूरा कहे ।

नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवरपुंडरिआणं पुरिसवरगंधहत्थीणं लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहिआणं लोगपईवाणं लोगपज्जोअगराणं अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं बोहिदयाणं धम्मदयाणं धम्मदेसियाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं विअट्टछउमाणं जिणाणं जावयाणं तिन्नाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोअगाणं सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं सिवमयलमरुअमणंतमक्खय-मव्वाबाह-मपुणराविति सिद्धिगइ नामधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं जियभयाणं जे अ अइआ सिद्धा जे अ भविस्संति णागए काले संपइ अ वट्टमाणा सव्वे तिविहेण वंदामि ॥१॥

जावंति चेइआइं उड्ढे अ अहे अ तिरिअलोए अ। सव्वाइं ताइं वंदे इह संतो तत्थ संताइं ॥१॥

जावंत केवि साहू भरहेरवय महाविदेहे अ। सव्वेसिं तेसिं पणओ तिविहेण तिदंड विरयाणं ॥१॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

को अवश्य त्याग करना चाहिये और शेष (५) घी, तेल, दूध, दही, गुड, खांड अथवा मीठा पक्वान।

४ 'उपानह'–जूता, बूंट, सिलीपर, मोजा आदि जो पांवमें पहना जाय।

५ 'तंबोल'–पान, सुपारी, इलायची, लौंग, पान का मसाला आदि।

६ 'वत्थ'--वस्त्र (आभूषण 'जेवर' की संख्या भी इसी नियममें धार लेनी चाहिये) पगडी, टोपी साफा, अंगरखा, चोगा, कुड़ता, धोती, पायजामा, दुपट्टा, चद्दर, अंगोछा, रुमाल आदि मरदाना और जनाना कपड़ा जो ओढने पहेरने में आवे।

७ 'कुसुमेसु'--फूल, फूलकी चीजें जैसे–शय्या, पैखा, सेहरा, तुर्रा, हार, गजरा, अत्तर जो चीज संघनेमें आवे।

८ 'वाहन'–सवारी-गाडी, फिटीन, सिगराम, हाथी, घोडा, रथ, पालखी, डोली, मोटर, साईकल, रेल, नाव, जहाज, स्टीमर आदि याने 'तरता-फिरता, चरता, और उडता'।

९ 'शयन'–कुरसी, टेबल, पट्टा, पलंग, गद्दी, तकिया बिछौना, तख्त, मेज, सुखासन, आदिसोने वा बैठने की चीजें।

३ काय.

१ पृथ्वीकाय–मिट्टी निमक आदि (खानेमें वा उपभोगमें आवे) उसका वर्जन।

२ अपकाय - जो पानी पीनेमें या दूसरे उपयोगमें आवे उसका वर्जन. पानीकी जात कूवा, बावडी, तलाव, नदी, नल और मेघ आदिका प्रमाण संख्या भी करना अच्छा है, पानी छानकर कोईभी काममें लाना तथा जीवानीका यत्न करना अत्यावश्यकीय है।

३ तेउकाय–चूल्हा, अंगीठा, भट्ठी, चिराक आदि का प्रमाण।

४ वायुकाय–हिंडोले पंखे [अपने हाथसे वा हुकमसे] जितने चलते होवें उनकी संख्याका प्रमाण. 'रूमालसे या कागजसे हवा लेनी यह भी पंखेमें गिनी जाती है उसकी जयणा'।

५ वनस्पतिकाय– हराशाक तथा फलादि इतनी जातके खाने घर संबंधी मंगाने जिसकी गिनती तथा वजन।

६ त्रसकाय– त्रसजीव अपराधी, विनापराधीका विचार करना। यह ६ कायका परिमाण कर लेना।

६ कर्म.

१ असी (शस्त्र और औजार) तलवार, बंदूक,

६ काय.

१ पृथ्वीकाय–मिट्टी निमक आदि (खानेमें वा उपभोगमें आवे) उसका वर्जन।

२ अप्काय-- जो पानी पीनेमें या दूसरे उपयोगमें आवे उसका वर्जन. पानीकी जात कूवा, बावडी, तलाव, नदी, नल और मेघ आदिका प्रमाण संख्या भी करना अच्छा है, पानी छानकर कोईभी काममें लाना तथा जीवानीका यत्न करना अत्यावश्यकीय है।

३ तेउकाय- चूल्हा, अंगीठा, भट्ठी, चिराग आदि का प्रमाण।

४ वायुकाय–हिंडोले पंखे [अपने हाथसे या दूसरेसे] जितने चलते होंवे उनकी संख्याका प्रमाण. 'हमालोंसे या कागजसे हवा लेनी यह भी पंखेमें गिनी जाती है उसकी जयणा'।

५ वनस्पतिकाय-- हराशाक तथा फलादि इनकी जातके खाने या संख्या मंगाने जिसकी गिनती तथा वजन।

६ त्रसकाय-- त्रसजीव अपराधी, निरपराधीका विचार करना। यह ६ कायका परिमाण कर लेना।

६ कर्म.

१ असी (शस्त्र और औजार) तलवार, बंदूक,

३ कंदमूल १५ कर्मादान, या इत्यादि इत्यादि बहुत दोष होनेसे बिलकुल छोडने लायक है।

४ रजस्वला औरतों को २४ प्रहर गृहकार्य न करना चाहिये।

५ विवाह, शादीमें वेश्या, आतशबाजी आदि कुरिवाजका त्याग करना चाहिये।

६ रात्रि शादियोंका करना जिसमें कि जीवोंके बहुत संहार है उसका भी त्याग करना चाहिये।

७ बाल लग्न और वृद्ध विवाह या कन्याविक्रय आदि कुरीतियोंको मिटा देना चाहिये क्योंकि इनसे मनुष्योंको बहुत हानि होती है।

८ अपने बच्चे और कन्याओंको नीति और धर्मशास्त्रकी शिक्षाके लिये पाठशाला आदिका प्रबन्ध करना चाहिये।

प्यारे जैनी भाइयों इस लघु विभाग द्वारा नित्य देवगुरुवंदन या १४ नियम विचारके अवश्य लाभ लेना चाहिये। इति शम्.

अथ श्रावकोंके प्रत्याख्यान के ४९ भांगा।

(आंक नंबर ९)

आंक एक ११ का. एक करण और एक जोग से कहे सब।

१ करुं नहीं मनसे
२ करुं नहीं वचन से
३ करुं नहीं काया से
४ कराउं नहीं मन से
५ कराउं नहीं वचन से
६ कराउं नहीं काया से
७ अनुमोदुं नहीं मन से
८ अनुमोदुं नहीं वचन से
९ अनुमोदुं नहीं काया से

अंक एक १२ का, एक करण और दोय जोग से भांगा ऊठे नव।

१ करुं नहीं मन से वचन से
२ करुं नहीं मन से काया से
३ करुं नहीं वचन से काया से
४ कराउं नहीं मन से वचन से
५ कराउं नहीं मन से काया से
६ कराउं नहीं वचन से काया से
७ अनुमोदुं नहीं मन से वचन से
८ अनुमोदुं नहीं मन से काया से
९ अनुमोदुं नहीं वचन से काया से

आंक एक १३ का, एक करण और तीन जोग से

भांगा ऊठा एक ।

१ करुं नहीं कराउं नहीं अनुमोदुं नहीं मनसें वचनसे कायासे ॥ १॥

जूमले ४९ ओगणपचास भांगा ॥ इति ॥

॥ अथ श्री आराधनाका स्तवन प्रारंभ ॥

॥ दोहा ॥

सकल सिद्धि दायक सदा, चोवीसे जिनराय ।
सहगुरु स्वामिनि सरस्वति, प्रेमे प्रणमूं पाय ॥१॥
त्रिभुवनपति त्रिशला तणो, नंदन गुण गंभीर ।
शासन नायक जग जयो, वर्द्धमान वड वीर ॥२॥
इक दिन वीर जिणंदने, चरणे करि परणाम ।
भविक जीवना हित भणी, पूछे गौतम स्वाम ॥३॥
मुक्तिमार्ग आराधिये, कहो किण परे अरिहंत ।
सुधा सरस तव वचन रस, भांखे श्रीभगवंत ॥४॥
अतिचार आलोइये, व्रत धरिये गुरु साख ।
जीव खमावो सयल जे योनि चोराशी लाख ॥५॥
विधिशुं वली वोसिराविये, पापस्थान अढार ।
चार शरण नित अनुसरो, निंदो दुरित आचार ॥६॥
शुभकरणी अनुमोदिये, भाव भलो मन आण ।
अणसण अवसर आदरी, नवपद जपो सु—

५ करूं नहीं अनुमोदूं नहीं मन से काया से
६ करूं नहीं अनुमोदूं नहीं वचन से काया से
७ कराउं नहीं अनुमोदूं नहीं मन से वचन से
८ कराउं नहीं अनुमोदूं नहीं मन से कायासे
९ कराउं नहीं अनुमोदूं नहीं वचन से कायासे

अंक एक २३ का, दो करण और तीन जोग से भांगा उठे तीन।

१ करूं नहीं कराउं नहीं मन से वचन से कायासे
२ करूं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसे वचनसे कायासे
३ कराउं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसे वचनसे कायासे

अंक एक ३१ का, तीन करण और एक जोग से भांगा उठे तीन।

१ करूं नहीं कराउं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसे
२ करूं नहीं कराउं नहीं अनुमोदूं नहीं वचनसे
३ करूं नहीं कराउं नहीं अनुमोदूं नहीं कायासे

अंक एक ३२ का, तीन करण दो जोग से भांगा उठे तीन।

१ करूं नहीं कराउं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसे वचनसे
२ करूं नहीं कराउं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसे कायासे
३ करूं नहीं कराउं नहीं अनुमोदूं नहीं वचनसे कायासे

अंक एक ३३ का, तीन करण और तीन जोग से

भांगा ऊठा एक ।

१ करुं नहीं कराउं नहीं अनुमोदुं नहीं मनसें वचनसे कायासे ॥ १॥

जुमले ४९ ओगणपचास भांगा ॥ इति ॥

॥ अथ श्री आराधनाका स्तवन प्रारंभ ॥

॥ दोहा ॥

सकल सिद्धि दायक सदा, चोवीसे जिनराय ।
सद्गुरु सामिनि सरस्वति, प्रेमे प्रणमुं पाय ॥१॥
त्रिभुवनपति त्रिशला तणो, नंदन गुण गंभीर ।
शासन नायक जग जयो, वर्द्धमान वड वीर ॥२॥
इक दिन वीर जिणंदने, चरणे करि परणाम ।
भविक जीवना हित भणी, पूछे गौतम स्वाम ॥३॥
मुक्तिमार्ग आराधिये, कहो किण परे अरिहंत ।
सुधा सरस तव वचन रस, भाखे श्रीभगवंत ॥४॥
अतिचार आलोइये, व्रत धरिये गुरु साख ।
जीव खमावो सयल जे, योनि चोराशी लाख ॥५॥
विधिसुं वली वोसिराविये, पापस्थान अढार ।
चार शरण नित अनुसरो, निंदो दुरित आचार ॥६॥
शुभकरणी अनुमोदिये, भाव भलो मन आण ।
अणसण अवसर आदरी, नवपद जपो सुजाण ॥७॥

शुभगति आराधन तणा, ए छे दश अधिकार।
चित्त आणीने आदरो, जिम पामो भवपार ॥८॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ ए छिंडि किहां राखी ॥ ए देशी ॥

ज्ञान दरिसण चारित्र तप वीरज, ए पांचे आ
चार। एह तणा इह भव परभवना, आलोइये अति
चार रे ॥ १ ॥ प्राणी,ज्ञान भणो गुणखाणी। वीर वदे
एम वाणी रे ॥ प्राणी ॥ ज्ञा०॥ ए आंकणी॥ गुरु ओ
लवीये नहीं गुरु विनये, काले धरी बहुमान। सूत्र
अर्थ तदुभय करी सूधां, भणिये वही उपधान रे॥२॥
प्राणी ॥ ज्ञा०॥ ज्ञानोपकरण पाटी पोथी,ठवणी नोक
रवाली,तेह तणी कीधी आशातना,ज्ञान भक्ति न सं
भाली रे ॥ ३ ॥ प्राणी ॥ ज्ञा० ॥ इत्यादिक विपरीत
पणाथी, ज्ञान विराध्युं जेह। आ भव परभव वलिय
भवोभव, मिच्छादुक्कड तेह रे ॥४॥ प्राणी, समकित
ल्यो शुद्ध जाणी ॥ ए आंकणी ॥ जिनवचने शंका नवि
कीजे,नवि परमत अभिलाख। साधु तणी निंदा परि-
हरजो फलसंदेह म राख रे ॥५॥ प्राणी ॥ स० ॥ मू-
ढपणुं छंडो परशंसा, गुणवंतने आदरिये। साहामीने
धर्मे करी थिरता, भक्ति प्रभावना करीये रे॥६॥ प्राणी
स० ॥ संघचैत्य प्रासाद तणो जे, अवर्णवाद मन

किइयो । द्रव्य देवनां जे विणासाड्यां, विणसंता उवेख्यां
॥७॥ प्राणी ॥ ज्ञा० ॥ इत्यादिक विपरीत पणाथी,
समकित डहोळ्युं जेह । आ भव० ॥ मिच्छा० ॥ ८ ॥
प्राणी, चारित्र ल्यो चित्त आणी ॥ ए आंकणी ॥ पांच
समिति त्रण गुप्ति विराधि, आठे प्रवचन माय । साधु-
तणे धर्म परमादे, अशुद्ध वचन मन काय रे ॥९॥ प्राणी
॥चा०॥श्रावकने धर्म सामायिक, पोसहमां मन वाली ।
जे जयणापूर्वक ए आठे, प्रवचनमाय न पाली रे॥१०॥
प्राणी ॥ चा० ॥ इत्यादिक विपरीतपणाथी, चारित्र
डहोळ्युं जेह ॥ आ भव० ॥ मिच्छा० ॥ ११ ॥ प्रा०॥
चा०॥ बारे भेदे तप नवि कीधुं,छते जोगे निज शक्ते ।
धर्मे मन वच काया वीरज, नवि फोरविड भगते रे ॥
॥१२॥ प्राणी ॥ चा० ॥ तपवीरज आचारे एणि परे,
विविध विराध्या जेह ॥ आ भव० ॥ मिच्छा० ॥१३
॥ प्राणी ॥ चा०॥ वळीय विशेषे चारित्र केरा, अति-
चार आलोइये । वीर जिणेसर वयण सुणीने, पाप
मयल सवि धोइये रे ॥ १४ ॥ प्राणी ॥ चा० ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ पामी सुगुरु पसाय ॥ ए देशी ॥

पृथिवी पाणी तेउ, वाउ वनस्पति ॥ ए पांचे
थावर कह्यां ए । करि करसण आरंभ, क्षेत्र जे खेडियां
कूवा तळाव खणावीयां ए ॥ १ ॥ घर आरंभ अनेक

ांकां भोयरां । मेडी माल चणावीयां ए । लींपण धुंपण
ाज, इणी परे परपरे । पृथिवी काय विराधिया ए ॥२॥
ोयण नायण पाणी, झीलण अपकाय । छोनी धोती
री दूहव्या ए । भाठीगर कुंभार, लोह सोवन गरा ।
ाडभुंजा लिहालागरा ए ॥ ३ ॥ तापण शेकण काज,
ाल निखारण । रंगण रांधण रसवती ए । इणी परे
र्मादान, परे परे केवली । तेउ वाउ विराधिया ए
॥ ४ ॥ वाडी वन आराम वावि वनस्पति । पान फूल
ल चूंटीयां ए । पोंहोक पापडी शाक, शेक्यां सुक
यां । छुंद्यां छेद्यां आथीयां ए ॥ ५ ॥ अलसीने एरंड,
ाणी घालीने । घणा तिलादिक पीलीया ए । घाली
ोल्हु मांहि, पीली शेलडी । कंद मूल फल वेचीयां ए॥
॥६॥ एम एकेंद्रिय जीव, हण्या हणावीया । हणतां जे
अनुमोदीया ए ॥ आभव परभव जेह, वलिय भवोभव
ते मुझ मिच्छामि दुक्कडंए ॥ ७ ॥ कृमी सरमीयां
ीडा, गाडर गंडोला । इयल पूरा अलसीयां ए ।
ाला जलो चूडेल, विचलित रसतणा ॥ वली अथा-
ां प्रमुखनां ए ॥८॥ एम बेइन्द्रिय जीव, जे मे दूह-
्या ॥ ते मुझ० ॥ उदेही जू लीख, मांकड मंकोडा ॥
ांचड कीडी कुंथुआ ए ॥९॥ गद्दहीयां घीमेल, कान
वजरडा । गींगोडा धनेडीयां ए । एम तेइन्द्रिय जीव,

जे मैं दूहव्या। ते मुज० ॥१७॥ माछी मगर झाल्या, मत्स्य पकडिया। कंसारि कोलिया खड्या ए। रिंगण छिदि घीर, भमरा भमरीयां। कोता वन खरखोलाईए ॥ १८ ॥ एम चौरिंद्रिय जीव, जे मैं दूहव्या ॥ ते मुज० ॥ जलमां नाख्यां जाल, जलचर दूहव्या। वनमां मृग संताप्या ए ॥ १८ ॥ पीड्या पंखी जीव, पाडी पासमां। पोपट घाल्या पांजरे ए। एम पंचेंद्रिय जीव, जे मैं दूहव्या ॥ ते मुज० ॥ १९ ॥

॥ ढाल चौथी ॥

॥ प्रथम गोवाला तणे भवे जी ॥ ए देशी ॥

क्रोध लोभ भय हास्यथी जी, बोल्यां वचन असत्य ॥ कूड करी धन पारकां जी, लीधां जेह अदत्त रे ॥ जिनजी ॥ १ ॥ मिच्छामि दुक्कडं आज ॥ तुम साखे महाराज रे ॥ जिनजी ॥ देइ सारुं काज रे ॥ जिनजी ॥ मि० ॥ ए आंकणी ॥ देव मनुज तिर्यंचनां जी, मैथुन सेव्यां जेह। विषयारस लंपटपणे जी, घणुं विडंब्यो देह रे ॥ जि० ॥२॥मि०॥ परिग्रहनी ममता करी जी, भव भव मेली आथ। जे जिहांनी ते तिहां रही जी, कोइ न आवी साथ रे ॥ जि० ॥३॥ मि० ॥ रयणी भोजन जे कर्यां जी, कीधां भक्ष्य अभक्ष्य। रसना रसनी लालचे जी, पाप कर्यां प्रत्यक्ष रे ॥

जि० ॥ ४ ॥ जि० ॥ अब नेह निवारिये जि. कोपे लोभनी पण कश्मला। कारदंतु [illegible] करे छे, कोपो ध्रम [illegible] है ॥ जि० ॥ ५ ॥जि०॥ [illegible] दुःखे सौ, [illegible] [illegible] । जिनपति आराधन करो सौ, [illegible] [illegible] है ॥ जि० ॥ ६ ॥

॥ राग कांफी ॥ सांईलईयां देसी ॥

नेम [illegible] पधारो । सांईलईयां है , [illegible] [illegible] मन लाइ मो ॥ [illegible] मन [illegible], मा० । [illegible] [illegible] मो ॥ १ ॥ मन [illegible] [illegible] , मा० । [illegible] [illegible] [illegible] मो। जिनपति आराधना करो , मा० । ए [illegible] अधिकार मो ॥ २ ॥ जीव सब [illegible] , मा० । [illegible] [illegible] मो । मन शुद्ध करी [illegible]-मणां , मा० । कोइथी [illegible] न [illegible] मो ॥ ३ ॥ मन थिर करी थिमणां , मा० । कोई न आतां [illegible] मो । राग द्वेष मद परिहारो , मा० । [illegible] जन्म पवित्र मो ॥ ४ ॥ [illegible] संग [illegible] , मा० । जे [illegible] अर्थानि मो । मस्तक कुंप करी [illegible] , मा० । ए जिनशासन रीति मो ॥ ५ ॥ [illegible] अने [illegible] , मा० । एहज धर्मनो सार मो । जिनपति आराधन करो,

सा०। ए ग्रीजो अधिकार तो ॥ ५॥ मृषा-
वाद हिंसा चोरी, सा० । धन मूर्छा मैथुन तो ।
क्रोध मान माया तृष्णा, सा० । प्रेम द्वेष पैशुन्य
तो ॥ ७॥ निंदा कलह न किजीये, सा० । कूडां
न दीजे आल तो । रति अरति मिथ्या तजो,
सा०। माया मोस जंजाल तो ॥ ८ ॥ त्रि-
विध त्रिविध वोसिराविये , सा० । पापस्थान
अढार तो॥ शिवगति आराधन तणो , सा० ।
ए चोथो अधिकार तो ॥ ९ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ हवे निःसुणो इहां आवीयाए ॥ ए देशी ॥

जनम जरा मरणे करी ए, ए संसार असार
तो । करयां कर्म सहु अनुभवे ए , कोई न राखण
हार तो ॥ १ ॥ शरण एक अरिहंतनुं ए, शरण
सिद्ध भगवंत तो । शरण धर्म श्री जैननो ए, साधु
शरण गुणवंत तो ॥ २॥ अवर मोह सवि परिहरी ए,
चार शरण चित्त धार तो । शिवगति आराधन तणो
ए, ए पांचमो अधिकार तो ॥ ३ ॥ आभव परभव
जे करयां ए, पाप कर्म केइ लाख तो । आत्मसाखे ते
निंदीये ए, पडिक्कमिये गुरु साख तो ॥४॥ मिथ्यामति
वर्त्ताविया ए, जे भांख्यां उत्सूत्र तो । कुमति कदा-

ले यहो ए, वली भागवां उन्मूत्र गो ॥ ५ ॥ पड्यां
ाल्यां जे मर्गा ए, मंडी हल हथीयार गो । भवभव
ी मुकिया ए, करता जीव संहार गो ॥ ६ ॥ पाप
ोनें पोषिया ए, जनम जनम परिवार गो । जनमां
पोहोता पछी ए, कोइ न कीधी सार गो ॥ ७॥ आ
य परभव जे करयां ए, इम अधिकरण अनेक तो।
ाविविध वोसरावीये ए, आणी हृदय विवेक तो॥ ८॥
कृत निंदा इम करी ए, पाप करयां परिहार तो।
वगति आराधन तणो ए,ए छठो अधिकार तो॥९॥

॥ ढाल छठी ॥

॥ आदि तुं जोइने आपणो ॥ ए देशी ॥

घन धन ते दिन माहरो, जिहां कीधो धर्म । दान
ोयल तप आदरी, टाल्यां दुष्कर्म ॥ ध०॥ १ ॥ शेत्रुं
ादिक तीर्थनी, जे कीधी यात्र । युगते जिनवर पूजीया,
ली पोख्यां पात्र ॥ ध० ॥ २ ॥ पुस्तक ज्ञान लखा
यां, जिणहर जिणचैत्य । संघ चतुर्विध साचव्या,
साते खेत्र ॥ ध० ॥ ३ ॥ पडिक्कमणां सुपरें कर्यां,
नुकंपा दान । साधु सूरि उवज्झायने, दीधां बहुमान
ध० ॥ ४ ॥ धर्मकारज अनुमोदीये, इम वारोवार ।
ावगति आराधन तणो, ए सातमो अधिकार ॥ध०
५॥ भाव भलो मन आणीये, चित्त आणी ठाम ।

समता भावे भावीये, ए आतमराम ॥ प्र० ॥ ६ ॥ सुख दुःख कारण जीवने, कोइ अवर न होय । कर्म आप जो आचर्यां, भोगविये सोय ॥ प्र० ॥ ७॥ समता विण जे अनुसरे, प्राणी पुण्यनां काम । छार उपर ते लींपणुं, झांखर चित्राम ॥ प्र० ॥ ८॥ भाव भली परे भावीये, ए धर्मनो सार ॥ शिवगति आराधन तणो, ए आठमो अधिकार ॥ प्र० ॥ ९ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ रैवतगिरि उपरे ॥ ए देशी ॥

हवे अवसर जाणी, करिये संलेखण सार ॥ अणसण आदरीये, पच्चखी चार आहार ॥ ललुता सवि मूकी, छांडी ममता अंग । ए आतम खेले, समता ज्ञान तरंग ॥१॥ गति चारे कीधा, आहार अनंत निःशंक । पण तृप्ति न पाम्यो, जीव लालचीयो रंक । दुलहो ए वली वली, अणसणनो परिणाम । एहथी पामीजे, शिव पद सुरपद ठाम ॥२॥ धन धन्नो शालिभद्र, खंधो मेघकुमार । अणसण आराधी, पाम्या भवनो पार ॥ शिवमंदिर जाशे, करी एक अवतार । आराधन केरो, ए नवमो अधिकार ॥३॥ दशमे अधिकारे, महामंत्र नवकार । मनथी नवि मूको, शिवसुख फल सहकार ॥ ए जपतां जाए, दुरगति दोष विकार । सुपरे ए समरो, चउद पूरवनो सार ॥४॥ जन्मांतरे जातां, जो पामे

हुवे निमर्हाज ॥ पचासनी संख्या परगई । मि० ॥ ४ ॥ अतीत अनागत गिणनां एम । दोढसे कल्याणक था- ये तेम ॥ कुण तिथि छे ए तिथि जेवर्ड । मि० ॥ ५ ॥ अनंत चौवीशी इण परे गिणो । लाभ अनंत उपवास तणो ॥ ए तिथि सहु तिथि गिरराखई ॥ मि० ॥ ६ ॥ मौनपणे रह्या श्री मल्लिनाथ । एक दिवस संयम ग्रम साथ ॥ मौन तणो परिव्रत इम पई । मि० ॥ ७ ॥ आठ पोहरी पोसो लीजिये । चौविहार विधिशुं कीजिये ॥ पण परमादन कीजे घई । मि० ॥ ८ ॥ वरस इग्यारे कीजे उपवास । जाव जीव पण अधिक उल्हा- स ॥ ए तिथि मोक्ष तणी पावई । मि० ॥ ९ ॥ उज- मणुं कीजे श्रीकार । ज्ञाननां उपगरण इग्यार इग्यार ॥ करो काउस्सग्ग गुरु पाये पडी । मि० ॥ १० ॥ देहरे स्नात्र कीजे वली । पोथी पूजीजे मन रली ॥ मुगतिपुरी कीजे दूकर्ड । मि० ॥ ११ ॥ मौन इग्यारस महोटुं पर्व । आराध्यां सुख लहिये सर्व ॥ व्रत पचखाण करी आ- खर्ड । मि० ॥ १२ ॥ जेसल सोल इयासी समें । की- धुं स्तवन सहु मन गमे ॥ समय सुन्दर कहे करो ध्याव- ई । मि० ॥ १३ ॥

भलेरो, पहिलो उत्तर आपिरे ॥ ज० मु० ॥ ८ ॥ तुझ सरिखा साहिब विण सहारे, जो नवि कारज सारेरे ॥ ज० ॥ तो मुझ करम तणी गति अवली, दोष न कोई तुमारो रे ॥ ज० मु० ॥९॥ दीनदयाल दयाकरी दीजे, शुद्ध समकित सहिनाणीरे ॥ ज० ॥ सुगुण सेवकना वांछित पूरो, तेहीज गुण मणिखाणी रे ॥ ज० मु० ॥ १० ॥ सर्व उदारे गुणमालासे, जेहसुदी सोमवारो रे ॥ ज० ॥ लालचंद प्रतिपदहित भेटया, बीकानेर मझारो रे ॥ ज० मु० ॥ ११ ॥

॥ श्री सीमंधरस्वामिका स्तवन ॥

सकल संसार अवतार ए हूं गणुं, स्वामी सीमंधरा तुझ भगते भणुं । भेटवा पादकमल आज हिवडे घणो, करिय सुपसाय ते वीनवुं ते सुणो ॥१॥ तुझ सुं कूड अरिहंत सुं राखिये, जिहवा अति तिहां कर जोडि करि भाखिये । अति सबल मुझ हिये मोह माया घणी, एक मन भगति किम करुं त्रिभुवन धणी ॥२॥ जीव आरति करे तपतणा पारणे, डीठ पडवो पडे लोभ तणो नडे । तपण रस पचण रस काम रस रुंधियो, तेम अरिहंत सुं हिवडे नवि बांधियो ॥ ३ ॥ दिवस ने रात हिवडे घणो भटको, मूढ मन डीकरा पलिय

भलेरो, पहिलो उत्तर आपेरे ॥ ज० मु० ॥ ८ ॥ तुझ सरिखा साहिब विण महारे, जो नवि कारज सारेरे ॥ ज० ॥ तो मुझ करम तणो गति अवली, दोष न कोई तुमारो रे ॥ ज० मु० ॥९॥ दीनदयाल दयाकरी दीजे, शुद्ध समकित सहिनाणोरे ॥ ज० ॥ सुगुण सेवकना वांछित पूरो, तेहीजगुण मणिखाणो रे ॥ ज० मु० ॥ १० ॥ वर्ष अढारे गुणनालीसे, जेठसुदी सोमवारो रे ॥ ज० ॥ लालचंद मनिपदद्दिन भेट्या, वीकानेर मझारो रे ॥ ज० मु० ॥ ११ ॥

॥ श्री सीमंधरस्वामिका स्तवन ॥

सकल संसार अवतार ए हुं गणुं, स्वामी सीमंधरा तुम्ह भगते भणुं। भेटवा पाय कमल भाव हियडे घणो, करिय सुपसाय जे वीनवुं ते सुणो ॥१॥ तुम्ह शुं कृत अरिहंत शुं राखिये, जिरणो आठ निरणो कर जोडि करि भाखिये। अति सबल मुझ हिये मोह माया घणी, एक मन भगति किम करुं त्रिभुवन धणी ॥२॥ जीव आरति करे नवनवा परिगहे, रीश पसरो घटे लोभ पगरी नहे। नयण रस वयण रस काम रस रंगीयो, तेम अरिहंत तुं हियडे नवि संगीयो ॥ ३ ॥ दिवस ने रात हियडे अनेरो धरे, मूढ मन रीझवा वलिय

जो होय तो सहिय आवी मिलु ॥११॥ मेरुगिरि लेखणी आभ कागल करूं, क्षीरसागर तणां दूध खडिया भरूं । तुम्ह मिलवातणा स्वामी संदेशड़ा, इंद्र पण लखिय न शके अछे एहवा ॥१२॥ आपणे रंगभरि वात सुख जेटली, ऊपजे स्वामी न कहाय सुख तेटली । सुणो सीमंधरा राज राजेसरा, लाड़ ने कोड़ प्रभु पूरसवि माहरा ॥१३॥ पुव्वभवि मोह वश नेह हुवे जेहने, समरिये पणि संसार नित तेहने । मेहने मोर जिम कमल भमरो रमे, तेम अरिहंत नूं चित्त मोरे गमे ॥१४॥ खरूं अरिहंतनुं ध्यान हियड़े धरयुं, पापडुं पाप हिव रहिय करशो किस्युं । ठाम जिम गरुड़ घर पंखि आवे वहो, ततखिण सर्पनी जाति न शके रही ॥१५॥ पाप में कल्ल आश्रव सहु परिहरि, स्वामी सीमंधरा तुम्ह पय अणुसरी । शुद्ध चारित्र कहिये प्रभु पालशुं, दुःख भंडार संसार भय टालशुं ॥१६॥ तुम्ह हुं दास हुं तुम्ह सेवक सही, एह में वात अरिहंत आगल कही । एवड़ी माहरी भगति जाणी करी, आपजो वापजी सार केवल सही ॥१७॥ कलश ॥ एम ऋद्धि वृद्धि समृद्धि कारणा, दुरित वारण सुख करो । उवज्झाय वर श्री भक्ति लाभ, थुण्यो श्री सीमंधरो । जय जयो जगगुरु जीव जीवन करो स्वामी मया धणी । कर जोड़ी

करकांडे प्रभु पूजना, पूजो भवि बहुमान ॥३॥
मान गयुं दोय अंशथी, देखी वीर्य अनन्त ।
भुजाबले भवजल तर्या, पूजो खंध महन्त ॥४॥
रत्नत्रय गुण ऊजली, सकल सुगुण विश्राम ।
नाभि कमल नी पूजना, करता अविचल धाम ॥५॥
हृदय कमल उपशम बले, बाल्या रागने रोष ।
हिम दहे वन खंडने, हृदय तिलक संतोष ॥६॥
सोल पहर दई देशना, कंठ विवर वर तूल ।
मधुर धुनी सुरनर सुणे, तिण गले तिलक अमूल्य ॥७॥
तीर्थंकर पद पुन्य थी, त्रिभुवन जन सेवंत ।
त्रिभुवन तिलक समा प्रभु, भाल तिलक जयवंत ॥८॥
सिद्धशिला गुण ऊजली, लोकांतिक भगवंत ।
वसिया तिण कारण भवी, सिद्ध शिखा पूजंत ॥९॥
उपदेशक नव तत्त्वनां, तिण नव अंग जिनेंद ।
पूजो बहुविध भावथी, कहे सहु वीर मुणिंद ॥१०॥

॥ अथ पद्मावती आराधना प्रारंभ ॥

हवे राणी पद्मावती, जीवराशि खमावे । जाण पणुं जग ते भलुं, इण वेला आवे ॥ १ ॥ ते मुज मिच्छामि दुकडं, अरिहंतनी साख । जे में जीव विराधिया, चउराशी लाख ॥ ते० ॥ २॥ सात लाख पृथि-

करदंड। पंखीयान मराविया, कोरडा छडी दंड ॥ ते० ॥ १४ ॥ परमाधामीने भवे, दीधां नारकी दुःख । छेदन भेदन वेदना, ताडन अतिनित्य ॥ ते० ॥१५॥ कुंभारने भवे में किया, नीभाह पचाव्या । तेली भवे तिल पीलिया, पापे पिंड भराव्या ॥ ते० ॥ १६ ॥ हाली भवे हल खेडीयां, फाड्यां पृथ्वीनां पेट । सूड निदान घणां किया, दीधां बलद चपेट ॥ ते० ॥१७॥ मालीने भवे रोपिया, नानाविध वृक्ष । मूल पत्र फल फूलनां, लागां पाप ते लक्ष ॥ ते० ॥ १८ ॥ अधो वाईयाने भवे, भर्या अधिका भार । पोठी पूठे कीडा पड्या, दया नाणी लगार ॥ ते० ॥ १९ ॥ छींपाने भवे छेतर्या, कीधां रंगण पास । अग्नि आरंभ कीधा घणा, धातुवाद अभ्यास ॥ ते० ॥ २० ॥ शूरपणे रण झूझता, मार्यां माणसवृंद । मदिरा मांस माखण भख्यां, खाधां मूल ने कंद ॥ ते० ॥ २१ ॥ खाण खणावी धातुनी, पाणी उलेच्यां । आरंभ कीधा अतिघणा, पोते पापज संच्यां ॥ ते० ॥ २२ ॥ कर्म अंगार कीया वली, घरमें दव दीधा । सम खाधा वीतरागना, कूडा कोसज कीधा ॥ ते० ॥ २३ ॥ बिल्ली भवे उंदर लीया, गिरोली हत्यारी । मूढ गमार तणे भवे, में जू लीख मारी ॥ ते० ॥ २४ ॥ भाडभूंजा तणे भवे, एकेंद्रिय

जीव । कुंभारि भवा घड़ सीकिया, पाईंनां जीव ॥ ते० ॥ २५ ॥ खांडण पीसण गारना, आरंभ अनेक । रांधण इंधण अग्निनां, कीधां पाप उद्रेक ॥ ते० ॥२६॥ विकथा चार कीधी वली, सेव्या पांच प्रमाद । इष्टवियोग पाड्या कीया, रुदन विखवाद ॥ ते० ॥२७॥ साधु अने श्रावक तणां, व्रत लहीने भांग्यां । मूल अने उत्तर तणां, मुज दूषण लाग्यां ॥ ते० ॥ २८ ॥ साप वींछी सिंह चीवरा, शकराने समली । हिंसक जीव तणे भवे, हिंसा कीधी सबली ॥ ते० ॥ २९ ॥ सुवावडी दूषण घणां, वली गर्भ गलाव्या । जीवाणी ढोल्या घणां, शीलव्रत भंजाव्या ॥ते०॥३०॥ भव अनंत भमतां थकां, कीधा देह संबंध । त्रिविध त्रिविध करी वोसिरुं, तिणशुं प्रतिबन्ध ॥ ते० ॥ ३१ ॥ भव अनंत भमतां थकां, कीधा परिग्रह संबंध । त्रिविध त्रिविध करी वोसिरुं, तिणशुं प्रतिबन्ध ॥ ते० ॥ ३२ ॥ भव अनंत भमतां थकां, कीधी कुटुंबसंबंध । त्रिविध त्रिविध करी वोसिरुं तिणशुं प्रतिबंध ॥ ते० ॥ ३३ ॥ इणि परे इहभव परभवे, कीधां पाप अखत्र । त्रिविध त्रिविध करि वोसिरुं, करुं जन्म पवित्र ॥ ते० ॥ ३४ ॥ एणि विधे ए आराधना, भावे करशे जेह । समय सुंदर कहे पापथी, वली छूटशे तेह ॥ ते० ॥ ३५ ॥ राग वेराडी जे सुणे, एह

थीजी ढाल । समयसुन्दर कहे पापथी. छुटे ततकाल ॥गा०॥३६॥इति॥

अथ श्रावक नीचे लखेला त्रण मनोरथने चिंतवतो महा मोहोटी निर्जरा करे । तथा संसारनो अंत करे, ते लिखिये छैये॥

क्यारे हुं थोडा तथा आभ्यंतर परिग्रह जे महापापनुं मूल, दुर्गतिने वधारनारो, काम क्रोध मान माया, लोभ, विषय अने कषायनो स्वामी, महादुःखनुं कारण, महा अनर्थकारी दुर्गतिनो शिला माठी लेश्याना परिणामो, अज्ञान, मोह, मत्सर राग अने द्वेषनुं मूल, दशविध यतिधर्म रूप कल्पवृक्षना कापनार ज्ञान क्रिया, क्षमा, दया, सत्य, संतोष तथा वैराग्य रूप समकितनो नाश करनारो, साधु जन प्रशंसनीय धर्म करनारो, कुमति तथा कुबुद्धि रूप अंधकारना देवावालो, सुमति अने सुबुद्धि रूप सुलक्षणना नाश करनारो, भव संयम रूप धनने लुटनारो, लोभ क्लेश रूप समुद्रनो वधारनारो, जन्म जरा अने मरणनो देवावालो, कपटनो भंडार, मिथ्यात्व दर्शन रूप शल्यनो अंकुरो, मोक्षमार्गना विघ्नकारी कष्टना घरने विपत्तिनो देवावालो, अनंत संसारनो वधारनारो, सदा पापी,

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

धन्नो इलाइपुत्तो चिलाइपुत्तो अ बाहुमुणी ।
अज्जगिरि अज्जरक्खिअ अज्जसुहत्थी उदायगो मणगो
कालयसूरि संबो पज्जुन्नो मूलदेवो अ ।
पभवो विण्हुकुमारो अद्दकुमारो दढप्पहारी अ ।
सिज्जंस कूरगडू अ सिज्जंभव मेहकुमारो अ ॥ ६ ॥
एमाइ महासत्ता, दिंतु सुहं गुणगणेहिं संजुत्ता ।
जेसिं नामग्गहणे, पावप्पबंधा विलयं जंति ॥ ७ ॥
सुलसा चंदनबाला, मणोरमा मयणरेहा दमयंती ।
नमयासुंदरी सीया, नंदा भद्दा सुभद्दा य ॥ ८ ॥
राइमई रिसिदत्ता, पउमावई अंजणा सिरीदेवी ।
जिट्ठ सुजिट्ठ मिगावई, पभावई चिल्लणादेवी ॥ ९ ॥
बंभी सुंदरी रुप्पिणी, रेवइ कुंती सिवा जयंती य ।
देवई दोवई धारिणी, कलावई पुप्फचूला य ॥ १० ॥
पउमावई य गोरी, गंधारी लक्खमणा सुसीमा य ।
जंबुवई सच्चभामा, रुप्पिणि कण्हट्ठ महिसीओ ॥११॥
जक्खा य जक्खदिन्ना, भूआ तह चेव भूअदिन्ना य ।
सेणा वेणा रेणा, भयणीओ थूलिभद्दस्स ॥ १२ ॥
इच्चाइ महासईओ, जयंति अकलंकसीलकलिआओ ।
अज्जवि वज्जइ जासिं, जसपडहो तिहुअणे सयले ॥१३॥
पछी एक नवकार गणी, इच्छकार सुहराइ० कही
…कारेण संदिसह भगवन् ! राइयपडिक्कमणे ठा-

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं जो मे राइओ० कहा, तस्स उत्तरी० कही, सव विनयणानो या चार लोगस्स अथवा सोल नवकारनो काउस्सग्ग करवो. ते पारीने प्रगट लोगस्स कही, छट्ठा आवश्यकनी मुहपत्ति पडिलेहीने वांदणां बे देवां ॥

११ सकल तीर्थवंदन करीने यथाशक्ति पच्चखाण करवुं ॥

॥ अथ तीर्थवंदना ॥

सकल तीर्थ वंदुं करजोड, जिनवर नामे मंगल कोड । पहेले स्वर्गे लाख बत्रीस, जिनवर चैत्य नमु निशदीस ॥ १ ॥ बीजे लाख अठ्ठावीश कह्यां, त्रीजे बार लाख सद्दह्यां । चोथे स्वर्गे अड लाख धार, पांचमे वंदुं लाख ज चार ॥ २ ॥ छठ्ठे स्वर्गे सहस पचास, सातमे चालिस सहस प्रासाद । आठमे स्वर्गे छ हजार, नवदशमे वंदुं शत चार ॥ ३ ॥ अग्यार बारमे त्रणशें सार, नव ग्रैवेयके त्रणसें अढार । पांच अनुत्तर सर्वे मली, लाख चोराशी अधिकां वली ॥ ४ ॥ सहस सत्ताणुं त्रेवीश सार, जिनवर भुवन तणो अधिकार । लांबां सो जोजन विस्तार, पचास उंचां बहोंतेर धार ॥ ५ ॥ एकसो एंशी बिंब प्रमाण, सभासहित एक चैत्ये जाण । सो कोड बावन कोड संभाल, लाख चोराणुं सहस चौंआल ॥ ६ ॥

, पडिक्क-
म योसी

' धायुं

ाणं ''

इयाणं,
ोऽर्हन्

, कर्हा
ो सर्व

ग्यार

सु''

र ।

॥ अथ वरकनक ॥

वरकनकशंखविद्रुम-मरकतघनसन्निभ विगतमोहं ।
सप्ततिशतं जिनानां सर्वामरपूजितं वंदे ॥ १ ॥

॥ अथ अड्ढाइज्जेसु मुनिवंदन ॥

अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु, पनरससु कम्मभूमीसु । जावंत केवि साहू, रयहरण गुच्छ पडिग्गहधारा । पंचमहव्वयधारा, अट्ठारससहस्ससीलंगधारा । अक्खयायारचरित्ता, ते सव्वे सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि ॥

२ खमासमण दइ "इच्छाकारेण संदिसह भगवन ! देवसिय पायच्छित्त विसोहणत्थं काउस्सग्ग करुं ? इच्छं, " "देवसिय पायच्छित्त विसोहणत्थं करेमि काउस्सग्गं" अन्नत्थ ऊससिएणं० कही चार लोगस्स अथवा सोल नवकारनो काउस्सग्ग करवो. ते पारी प्रगट लोगस्स कहीने पछी

३ वेळा खमासमण दइ, "इच्छाकारेण संदिसह भगवन ! सज्झाय संदिसाहुं ? इच्छं " कही, बीजुं खमासमण दइ "इच्छाकारेण संदिसह भगवन ! सज्झाय करुं ? इच्छं " एम सज्झायना आदेश मागी, एक नवकार गणी सज्झाय कहेवी ॥ पछी

४ एक नवकार गणी, खमासमणुं दइ "इच्छा-